SANGIET MALIA

36

संगीत माला

मोहिनी देवी

ॐ

सङ्गीत माला.

A COLLECTION OF HYMNS.

प्रकाशिका

मोहिनी देवी

धर्म्मपत्नी भाई सुन्दरसिंह जी,

मिलने का पता

राम मोहन राय कन्या पाठशाला, लाहौर।

एङ्गलो ओरियण्टल प्रेस लाहौर में लालजीदास के अधिकार से छपी।

ब्राह्म सम्वत् ९७—सन् १९२६ ई०

तृतीयवार १०००]

[मूल्य १) रुपया

❊ सूचना ❊

समग्र सज्जनों को विदित है कि आज कल जैसे संसार में विद्या वृद्धि होरही है वैसे ही सब लोग छपाई सफाई को ज्यादा पसंद करने लगे हैं। इसी बात का ध्यान रखते हुये हमने एक हिन्दी तथा अंग्रेजी का अत्युत्तम प्रेस खोला है। इसमें छपाई की कीमत सफाई के लिहाज से बहुत थोड़ी है। और इसके अक्षर मोतियों की तरह चमकते हैं। निमन्त्रण पत्र, तथा विज्ञापन पत्रों की छपाई का विशेष प्रबन्ध किया गया है। जो सज्जन इस बात की परीक्षा करना चाहें, वे एकवार हमारे प्रेस में अवश्य कुछ विषय छपवा कर देख लें कि हमारा दावा कहां तक ठीक है।

प्रेस मालिक :—

लालजीदास

एङ्गलो ओरियण्टल प्रेस,

ग्वालमण्डी लाहौर।

प्रेम करो प्रेमकरो ... केवल प्रेम ही करना चाहिए अगर नहीं करोगे तो तुम नष्ट हो। 25/10/1941

ख

ग

अनुक्रमणिका (भजन सूची)

आ

ऐ

क

ध

न

Love With Roll No. 11

भूमिका ।

विदित हो कि संगीत माला नाभी पुस्तक सन् १८९५ ई० में डाक्टर वी० रुवीन सत्केल ने १म वार हिन्दी अक्षरों में प्रकाशित की थी, जिसके अब प्रकाशित करने की आज्ञा मुझे दी है, जिसके लिये मैं उनका धन्यवाद करता हूं। अब मैं यथोचित संशोधन, परिवर्तन और संवर्धन करके इसको २य वार भक्त जनों तथा सर्वसाधारण के लिये हिन्दी भाषा में प्रकाशित करता हूं, और यह भी सूचित करना आवश्यक समझता हूं कि १म आवृत्ति में तो इसके १४० पृष्ठ ही थे जिस में २६१ भजन थे, परन्तु अब यह पुस्तक २५६ पृष्ठों तक पहुंच गई है, मानो एक प्रकार से इसका नव संकलन हुआ है। इसमें अब ४०७ भजन हैं, जिन में ब्राह्मधर्मावलम्बियों के रचित भजनों के अतिरिक्त सिक्ख गुरु, भक्तकबीर, तुलसीदास, सूरदास जी और मीरांबाई आदि २ अनेक भक्त जनों के बनाए हुए बहुत से भजन भी दिये गए हैं।

इस में सन्देह नहीं कि यद्यपि इनके मत से हमारी पूर्ण सम्मति नहीं, किन्तु किसी सज्जन साधु वा भक्तों की ईश्व-

रीय वाणी का सन्मान करना धर्म्मानुकूल है, इसलिये इस विचार को छोड़कर कि इन भजनों के रचयता किस मत और जाति के हैं, उनके भजन संग्रह करके इसमें प्रकाशित किये गये हैं। वरञ्च इससे अतिरिक्त बंगाली, मराठी और सिन्धी के भी कुछ भजन दिये गए हैं।

इस पुस्तक के आठ खण्ड हैं।

१म खण्ड में उद्बोधन के भजन। २य में वैराग्य, ३य में आराधना, ४र्थ में प्रार्थना, ५म में आर्ति, ६म में नगरकीर्तन और विविध भजन, ७म में विविध और अनुष्टान के भजन, और ८म में प्रेम माला तथा विविध भजन है।

महान् परमेश्वर आर्शीवाद करें कि यह पुस्तक अपने पाठ करने वालों का मन सांसारिक अनित्य असार पदार्थों की आसक्ति से हटाकर धर्म्म और ईश्वर दर्शण की लालसा को उत्पन्न करके नित्यं प्रतिवर्द्धन करने में सहाय हों, और भक्ति तथा ईश्वर प्रेम की ज्योति को मन में जाग्रित करने तथा उज्ज्वल करने में सहायता करें।

लाहौर १५ मई १९१९. प्रकाश देव.

तृतीयावृत्ति भूमिका.

समग्र सज्जनों तथा प्यारी वहिनों को भली भान्ति विदित है कि "सङ्गीत माला" नामी पुस्तक डा० वी० रुवीन सत्केल ने प्रथमवार सन् १८९५ ई० में प्रकाशित की थी। उसके वाद श्रद्धेय प्रकाशदेव जी ने डाक्टर जी की आज्ञा से सन् १९१० ई० में इसी पुस्तक को द्वितीय वार छपाया था। श्रद्धेय प्रकाश देव जी के पुत्र प्रभुदयाल जी की आज्ञा से आज मुझे भी इसी पुस्तक को तृतीयवार छपवाने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस पुस्तक को छपवाने का मेरा अभिप्राय द्रव्य संग्रह करना नहीं है वल्कि इस पुस्तक को छपवाने का सौभाग्य मुझे केवल प्यारी वहिनों के अनुरोध से प्राप्त हुवा है। पुस्तक को संशोधन, परिवर्तन और संवर्धन से अच्छी तरह सजाया गया है। दोहे, प्रार्थना और श्लोक अधिक वढ़ाये गये हैं, ताकि पुस्तक पाठकों को विशेष रुचिकर हो। प्रथमावृत्ति में इस पुस्तक के केवल १४० पृष्ठ ही थे, द्वितीयावृत्ति में २५६ पृष्ठ हुए, और अव तृतीयावृत्ति में पुस्तक का कलेवर ३३० पृष्ठों तक पहुंच गया है। पुस्तक में पुराने भजन निकाल कर वड़े २ महात्माओं के वनाये हुए नवीन भजन संग्रह किये गये हैं।

निःसन्देह मनुष्यों में धार्मिक झगड़े हुवा करते हैं; मगर वास्तव में सब का मन्तव्य ईश्वराराधना से ही है। अतः मैंने इन झगड़ों को न देखते हुए बङ्गाली, सिंधी आदि भाषाओं के भजन भी देदिये हैं। अब सब भजन प्रेमी भाई तथा बहिनों से मेरा सादर निवेदन यही है कि जो सिक्ख गुरु, भक्त कबीर, तुलसीदास, सूरदास और मीरांबाई के भजनामृत को पीना चाहें; बड़े २ कवियों के रचे हुए भजनों का रसास्वाद लेना चाहें वे एकवार अवश्य इस पुस्तक का अवलोकन करें।

परब्रह्म परमात्मा से मेरी सादर प्रार्थना है कि इस पुस्तक के पढ़ने वालों की आत्मा में आप के ज्ञान का प्रकाश हो, काम, क्रोध, लोभ, मोह कभी सत्कार्य में बाधा न डालें, सब की धर्म्म पर विशेष रुचि हो, और सारे ईश्वर भक्त आप के अलौकिक तेज के प्रकाश में अपने हृदय के अज्ञानान्धकार को दूर करें॥

मोहिनी देवी,

लाहौर १० अगस्त १९०६ (*धर्मपत्नी भाई सुन्दरसिंह*)

सङ्गीतमाला

प्रथम अध्याय ।

उद्बोधन के भजन ।

अर्चना ।

ओं पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्तेऽस्तु मा मा हिंसीः ॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।

तुम हमारे पिता हो, पिता के न्याय हमें ज्ञानशिक्षा देवो; तुम को नमस्कार हो; हमें मोह पाप से रक्षा करो, हमें परित्याग न करना, हमें विनाश न करना ॥ हे देव ! हे पिता ! सारे पाप मार्जन करो । जो कुछ कल्याण हो वही हमारे बीच में प्रेरण करो ॥ तुम जो सुखकर, कल्याणकर, सुख कल्याण के आकर, कल्याण और कल्याणतर हो, तुम को नमस्कार हो ॥

भजन १.

प्रीति प्रभु संग जोड़ रे मन ।
हरि बिना कोई मीत नहीं है ।
न मुख उन से मोड़ रे मन० ॥
सुफलत जीवन पूर्ण मनोरथ ।
होत कहां से ओर रे मन० ॥
अमृतरूप हैं जगत विहारी ।
संकट काटे तोर रे मन० ॥
आये वसे हरि भीतर तेरे ।
पकड़ उन्हीं की गोद रे मन० ॥

भजन २.

हरि भजन को दिया कमल मुख हरि भजन को दिया ॥ टे०
प्रभु कृपा से ऐसा उत्तम, सुन्दर नरतन पाया ॥ कमल०
खाया पीया सुख से सोया, नाहक जुमाना खोया ॥ कमल०
जेह मुख निसादिन हरिनाम नाहीं, तेह जन्म अकारथ खोया ।क०
दास कहत है सुनो भाई साधो, जैसा आया वैसा गया ॥ क०

भजन ३.

भजो मधुर हरि नाम (संतो)

सरल भाव से हरि भजे जो, पावे अमृत धाम ॥
हरि ही सुख है हरि ही शांति, हरि ही प्राणाराम ॥
हरि ही मुक्त करे पापों से, जो भजे हरि अविराम ॥

भजन ४.

भजो री बहिनो सच्चिदानन्द हरि ॥ टेक ॥
जप तप साधन कछु नहीं लागत, खरचत नहीं गठरी॥भजो०
संतति सम्पति सुख के कारण, जासो भूल परी ॥ भजो०
कहत कबीरा जिस मुख राम नहीं, तिस मुख धूल परी ॥भजो०

भजन ५.

हरि महिमा गुण गायें साधो ।
परमानन्द हरि यश गाय नित, नूतन आनन्द पायें ॥
पतित मलिन मनों को अपने, प्रभु चरणन में लायें ।
परम पवित्र नाम हरि ले ले, पाप ताप मिटायें ॥
व्याकुल होय प्रेम से उनपर, तन मन से बल जायें ।
प्रीति भक्ति उपहार दे उनको, मुक्ति दान बर चाहें ॥

देखो देखो ओ अतुल प्रेम जो, हरि हम पर बरषायें ।
हर्ष हर्ष उनकी पूजा में, सब मिल चित्त लगायें ॥

भजन ६.

लगाओ मन हरि चरनन में ध्यान ।
परम पिता का सिमरन करले, जो हैं प्राण के प्राण ॥
उठत बैठत सोवत जागत, राख उसी का ध्यान ।
प्रेम पियाला पीकर निशदिन, कर हरि के गुण गान ॥
ज्ञान ध्यान की धूनी रमाले, प्रेम के तम्बू तान ।
रे विश्वासी परम देव से ही, तेरा असल कल्याण ॥

भजन ७.

आओ सखी क्यों राह विच खलिये ।
प्रेम नगर वल चल टुर चालिये ॥ टेक ॥
टुरना भला ना रह विच खलना ।
दूजे राहियां दा राह चा मलना ।
जे राह पईए तां आगे टुरिये ।
भेडियां वांगों क्यों राह मलिये ॥ १ ॥
प्रेम नगर दी राह अवलड़ी ।
डाढी औखी ते दिस दी सुखलड़ी ।

लब्भे उस नूं जो होवे भलड़ी ।
असां भी भलीयां विच चल रलिये ॥ २ ॥
छेती टुरें तां अपड़ें सवेरे ।
वेले कुवेले आ पैन्दे लुटेरे ।
बाहरों मीत ते विच्चों वैरी ।
छल बल कर छल लैन्दे छलिये ॥ ३ ॥
प्रेम नगर एत्थों दूर न काई ।
पिछे मुडन विच जगत हंसाई ।
एत्थों मुड़ तां गई गंवाई ।
तूं विश्वासन बननी कमलीये ॥ ४ ॥

भजन ८.

जे तुसी प्रेम पियासी नी सइयो ।
पिया दे प्रेम नगर चल वसिये ॥ टेक ॥
एहा जेहा वेला फेर ना मिलसी ।
पिया मिलने नूं कमरां कसिये ॥ १ ॥
पिया वियोग दुःख दूर करन हित ।
नयना तों मेघां वांग बरसिये ॥ २ ॥
प्रेमदा रस कोई प्रेमी ही चखदा ।

दूजियां निमानीयां नूं की दासिये ॥ ३ ॥
जो कोई प्रेम दी राहों मोड़े ।
एहां जेहां कोलों को हीं नसिये ॥ ४ ॥
जिस नूं प्रेम दी खबर न काई ।
उस दे हाल ते रोइये ना हंसिये ॥ ५ ॥

भजन ९.

कोई आन मिलावो मेरा प्रीतम प्यारा, हो तिसपै आप दी चाई ।
दर्शन हरि देखन के ताई कृपाकरें तां सतगुरु मेले हरहर नाम ध्याई
जे सुख दें तां तुझे अराधें, दुख भी तुझे ध्याईं ।
जे भुख दे तां अति ही राजी, दुख विच सुख मनाई ॥
तन मन काट काट सब अर्पी, विच अग्नि आप जलाईं ।
पक्खा फेरें पाणी ढोवां, जो देवें सो खाईं ॥
नानक गरीब ढे पिया द्वारे, हर मेल लियो बड़ाई ।

भजन १०.

गाओ रे प्रभु ही का नाम, रचा जिसने विश्व धाम ।
दया का जांके नहीं विराम, झरे अविरत धारे ।
ज्योति जांकी गगने गगने, कीर्त्ति भांति अतुल भुवने ।
प्रीति जांकी पुष्पित बने, कुसुमित बन सारे ॥

जांका नाम पारस रत्न, पापी हृदय ताप हरण ।
प्रसाद जांका शान्ति रूप, भक्त मन में जागे ।।
अन्त हीन निर्विकार, महिमा जांकी है अपार ।
जिसकी शक्ति वर्णन से, बुद्धि वचन हारे ।।

काफ़ी ११.

।। कोई मोड दिलां दियां वागांनूं ।।
मन समझाया समझे नाहीं, रात दिन उठ पैंदा राहीं ।
ढूंढन साध समाधांनूं ।।
ये मन मेरा कव्वा कहिये, बिना हंस क्यों मोती लेये ।
मिल हंसां तज कागांनूं ।
और किसीको दोष क्या दीजै, जो कुछ बीजया सो चुन लीजै।
दोष अपने ही भागांनूं ।।
कहे हुसेन सुनो भाई साधो, जम कस कर हृदय जब बांधो ।
फिर की करो किताबांनूं ।।

भजन १२.

मेरे मन ऐसी आवे, हरी सों प्रीत लगावां ।। टेक ।।
प्रेम किए प्रभू प्रीतम मिलदा, फिर मैं क्यों शरमावां ।
बाहर ढूंडियां लभदा नाहीं, अन्दर ढूंडण जावां ।

प्रीतम पाये सुहागन होवां, पिया ते वल वल जावां ।
प्रभूसे वढ़ कर नहीं कोई मेरा, क्यों उसकी ही ना हो जावां ।
दुनियां के प्यारे छूटन हारे, क्यों इन में उर झावां ।
यहां की दौलत यहां ही रहेगी, क्यों इसके गम खावां ।

भजन १३.

हरि नाम जपन क्यों छोड़ दिया ।
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।
झूठे जगमें दिल ललचाकर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ।
कौड़ी को तो खूब संभाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया ।
जिन सिमरन से अति सुख पावे, तिन सिमरन क्यों छोड़ दिया ।
खालस इक भगवान् भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ।

भजन १४.

आओ भाई आओ शरण अब हरि की ।
जो हरि सबका प्राण अधारा, पल पलमें सुध लेत है सबकी ।
भूलो क्यों तुम ऐसे प्रभु को, देखो अनन्त दया है उनकी ।
और रहो नहीं भूल जगत् में, नाहक ताप बढ़ाओ नहीं मनकी ।
व्याकुल हो तुम हरि के कारण, त्यागो सकल चिन्ता विषयन की ।

Amar Nath Raina

भजन १५.

अमृत धाम चलो गाय मन हरि नाम ।
छोड़ो मन दुख धाम, मोह धाम, मृत्यु धाम ॥
चलो मन पुण्य धाम, प्रेम धाम, ब्रह्म धाम ।
आनन्द धाम चलो मन, गाओ सदा ब्रह्म नाम ॥
आहा अपरूप शोभा देखो भूले सारा काम ।
बलिहारी जाओ हे मन निरख प्रभू प्राणाराम ॥
तज सब स्वार्थ मन करो सेवा निष्काम ।
जय जय कार करो हरि द्वारे अविराम ॥

भजन १६.

भोर भयो पक्षीगण बोले, उठ जन प्रभु गुण गाओ रे ।
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार हर्षाओ रे ।
प्रभु की दया सिमर निज मनमें, सरस भाव उपजाओ रे ।
होय कृतज्ञ प्रेम में उनके, नयनन नीर बहाओ रे ।
ब्रह्मरूप सागर में मन को, बारम्बार डुबाओ रे ।
निर्मल शीतल लहरें लेले, आतम ताप बुझाओ रे ।

भजन १७.

शान्ति नहीं बिना प्रभु चरणन के ।

सुत दारा धन सम्पद सकले, साथी हैं कोई दिन के।
अन्त को सभी छूटेंगे भाई, हैं बन्धु जितने तन के ॥
वृद्ध युवा बालक नरनारी, साथी हैं कोई क्षण के ।
अतिशय मोह माया जग के हैं, प्रतिबन्धक जीवन के ॥
हैं एक दयामय प्रभु चिरसंगी, जीवन और मरण के।
जाके मंगल मुख छबि दीखे, पाप जावें सब मन के॥

भजन १८.

चलो भाई शान्ति निकेतन को ।
चिन्ता सकल विषय की त्यागो, एकाग्र करो चञ्चल मनको ।
प्रेम नयन खोल कर भीतर, देखो रूप निरंजन को ।
चलो जहां अमृत रस बरसे, पाप ताप रहे नहीं छिनको ॥
प्रेम सिन्धु में डूब डूब तुम देखो मूर्ति मोहन को ॥

भजन १९.

जाग जाग नर जागरे, क्यों सोया गफलत की नींद में।
अब तो प्राणी जाग रे ॥
जो उठया तिन अमृत चाखया। जो सोया तिन खोया रे ॥
लख लख दी घड़ी तुम खोई पेये पलंग पर सोया रे ॥
हीरे जैसा जनम अमोल कौड़ी दे मुल खोया रे ॥

जीवत नर संशय करत हैं। जिनके ऐसे अभाग रे॥
मोयां को प्रभु आप देते हैं। लकड़ी कपड़ा आग रे॥
हरको भजे सो हंस कहावें। कामी क्रोधी काग रे॥
तनका चोला भया पुराणा। लगे दाग़ पर दाग़ रे॥
काल नगारा सिर पर वाजे खोज खवर नहीं पाइ रे॥
कहत कवीर सुनो भाई साधो मैले दिल को धोवो रे॥

भजन २०.

प्राणी हरि शरणाई आरे॥
सत् चित् आनन्द रूप है जिनका, सकल जीवन आधारे।
जाकी महिमा कीर्त्ति श्रवण से, उतरे नर भव पारे॥
माया मोह अंधार जगत् में, ज्योतिर्मय उजियारे।
सर्व ज्ञानमय अन्तर्यामी, परिपूरण जग सारे।
दीनदयाल परम करुणामय, कभी किसे न विसारे॥
हे सब भ्रात और भगिनीगण, चलो हरि दरवारे।
छोड़ वासना सकल जगत् की, करो भक्ति उपहारे॥

भजन २१.

मत भूलो प्रभु के नाम को॥
जो प्रभु सब जन की सुध लेवे, पाले है सृष्टि सकल को।

जो प्रभु संकट क्लेश निवारे, देवे है शान्ति विकल को ॥
निर्धन के धन जो प्रभु प्यारे, धीरज बल निरबल को ।
अधम मलीनन तारणहारो, भवसागर के नर को ॥
जो प्रभु सब की आश पुजावे, देवे आनन्द विकल को ।
जो हरि विश्व विधाता कहिये, त्राता अधम अखिल को ॥
सकल चराचर जिस यश गावे, स्वामी स्वर्ग अतुल को ।
लोकपाल दिकपाल नृपतिगण, गावें हैं जिसही के बल को ॥
हे मन मूर्ख शरण पकड़ तिस, शान्त हृदय और सरलहो।
पावें आनन्द तो अक्षत अचिन्त्य, अमृतधाम अटल को ॥

भजन २२.

प्रभुको सिमर सिमर मन मेरे, पाप कटें सब तेरे ॥
नाम दान स्नान निरर्थक, जब प्रीत नहीं मन तेरे ।
जात पांत की बात न पूछे, पूछे काज भले रे ॥
जिन कर्त्तार अकाल पछाता, सोई जगत उचेरे ।
दो दिन के सुख कारण मूरख, पावत उमर बखेड़े ॥
गंग जमन काशी वन जंगल, हरघट में हरि नेड़े ।
पर जो उसको ढूंढन जावत, ऊजड़ फिरत अंधेरे ॥
सांच त्याग मिथ्या जिन पकड़ी, अति उन दुःख सहेरे ।

खालिस जिन भगवान पछाता, हम तिनके हैं चेरे ॥

भजन २३.

अबोध मन कैसी तुम्हारी रीत ।
ब्रह्मानुराग शून्य केवल इक, करो जगत् में प्रीत ॥
काल कराल धरे तुम सिर पर, होओ न नेक भयभीत ।
छोड़त सार असार के कारण, जगको जानत मीत ॥
अबहूं अवसर नाहिं गयो है, त्यागो उलटी नीत ।
भक्ति प्रेम वैराग्य पूर्वक, गाओ प्रभु सङ्गीत ॥

भजन २४.

किस सोच विचार में बैठो हो, मन शुद्धकरो भाई इक छिनको ।
जग चिंता को सब दूर करो, अरु त्यागो ध्यान विषय धनको ॥
प्रभु पूजा में अनुराग करो, अरु चलो नित शान्ति निकेतनको ।
परित्राण के प्रति सब व्याकुलहो, तुम आकुल हो हरिदर्शनको ।
भक्ति और प्रेम के फूलों से, भरपूर करो हृदय कानन को ।
एकान्त सुधा रसपान करो, और शान्त करो अपने मनको ।

भजन २५.

हरि रस ऐसो है रे भाई (ऐसो है रे भाई)
जाके पिये अमर होजाई ।

ध्रुव पिया प्रह्लाद पिया, पिया है मीरांबाई ।
वल्ख़ बुखारे के मीयां पिया, छोड़दी बादशाही ॥
हरि रस महिंगा मोलकारे, पीवे बिरला कोई ।
हरिरस महिंगा वह पीये, जाके धड़ पर सीस न होई ॥
आगे आगे दवन जलेरे, पाछे हरया होई ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरि भज निर्मल होई ॥

प्रतिज्ञा के भजन

भजन २६.

प्राणों के प्राण पै जिया वारूं, प्राण तजूं प्रभु तुम्हें ना बिसारूं।
मेरे तो प्राणों के प्राण तुम्हीं हो,प्राणों के स्वामी मैं कैसे बिसारूं॥
तुम्हरे दर्श नयन हों शीतल, हृदय दृष्टि से तुम्हें ही निहारूं ।
तुम्हरी प्रेम अग्नि के द्वारे, नीच मलीन भावों को जारूं ॥
दृढ़ विश्वास और प्रेम के द्वारे, जीवनदाता मैं तुम्हें ही पुकारूं ।

भजन २७.

(उपदेश)

भजो रे भाई अब प्रभु नाम ।
अब प्रभु नाम भजो रे भाई, चिन्ता शोक गंवाई ।
रामनाम धन निशदिन जोड़ो, त्यागो मोह और पाप कमाई॥

यही धन भगत कबीरा जोड़ा, जोड़ा मीरां बाई ।
गुरु नानक यही धन लेकर, हरिही की स्तुति गाई ॥
हरि सिमरन कर रविदास ने, सन्त की पदवी पाई ।
चेतन भगत प्रेम के बावरे, प्रेम में ही लव लाई ॥
सूरदास और तुलसीदास ने, यह ही कीन कमाई ।
यह विश्वासी कहत सुन चितसों, देख तो आंख उठाई ॥

भजन २८.

एक पुरातन पुरुष निरंजन, निराकार का ध्यान करो ।
आदि सत जग के कारन में, चित अपना समाधान करो ॥
सत शिव सुन्दर जीवन ईश्वर में, मन को अपने मगन करो ।
तृपित चित्त एकान्त हृदय हो, अमृत रस को पान करो ॥

भजन २९.

हरि से लाग रहो रे भाई ।
तेरी बनत बनत बन जाई, तेरी बिगड़ी बात बन जाई ॥
अनका तारी बनका तारी, तारे सदन कसाई ।
सुआ पढ़ाते गनका तारी, तारी मीरां बाई ॥
दौलत दुनिया माल खजाने, बधिया बैल चराई ।
जब ही कालका डंका बाजे, खोज खबर नहीं पाई ॥

ऐसी भक्ति करो घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई ।
सेवा वन्दगी और अधीनता, सहजे मिलें गुसाईं ॥

भजन ३०.

चलो मन जहां ब्रह्म विश्वासी, गावें सदा मिल जय२ब्रह्म की ।
जहां अपनत खोकर ब्रह्म के होकर, ब्रह्म राज के निवासी ।
ब्रह्म प्रेम से भर कर हृदय, सेवा साधन करें नर नारी ॥
जहां ब्रह्म सेवक दल, औरों के मङ्गल के लिये हों कुर्वानी ।
ब्रह्म राज के लाने के लिये, होवें ब्रह्म के दास और दासी।
जहां ब्रह्म विराजें हर रिश्ते में, सौन्दर्य्य की रो जारी ।
पी पी अमृत उन्नत हों नित, बोलें जय २ आनन्दकारी ॥

भजन ३१.

टेक—गाओ रे जगपति जगवन्दन ॥
जगत् विषय चिन्ता सब त्यागो, प्रेम करो अवलम्बन ।
अन्दर वाहर इस मन्दिर के, देखो मूर्त्ति मोहन ॥
स्नेहमय जगजननी है प्रस्तुत, करने को आलिंगन ।
प्रेम से पुलकित हो नरनारी, करो सब आत्म समर्पण ॥
आकाश निवासी नभ मण्डल गाओ, पूरण पुरुष निरंजन ।
हे रवि चंद्र हिमालय समुद्र, गाओ नाम दयाघन ॥

शोभा राशि पुष्प लता तुम, गाओ मृग पक्षीगण ।
साधु भक्त ऋषि मुनि सकले, गाओ राजा त्रिभुवन ॥
सकल संग हम भी सब मिल करें, भक्ति प्रीति निवेदन ।
जाके नाम दयामय गुण से, पाप ताप होवें भंजन ॥

भजन ३२.

ऐसे तुम दीनानाथ, काहे को बिसारे हैं ।
सिद्ध ला, समाधि जाकी, ज्योतिः निहारे हैं ॥
बेल पुष्प लता जाके, भृंग को पुकारे हैं ।
सूर्य्य चन्द्र तारे जाकी, महिमा प्रचारे हैं ।
सागर गंभीर कहीं, बहें नदी नाले हैं ।
जाका विस्तार देख, बुद्धि बल हारे हैं ॥
अग्नि सम जल कहीं, ज्वालागिरि भारे हैं ।
शीतल जल आशय जाके, निकट बनहारे हैं ॥
प्रकाण्ड विश्व जाके, बल शक्ति के आधारे हैं ।
लोक परलोक में जो, बन्धु हमारे हैं ।
सुखदेव, जनक, ईसा, मत्त हुए भारे हैं ।
गाय गाय जिन्हें, नारद मुनि नहीं हारे हैं ॥

भजन ३३.

शरन प्रभु की आओ री यही समय है प्यारी ।
झूठ फरेब पाप को त्यागो सत में बृत्ति लगालो री यही० ।
उदय हुआ ओंकार का भानु आओ दर्शन पाओ री यही० ।
मानुप जन्म अमोलक पाया बृथा नाही गवाओ री यही० ।
पान करो इस अमृत फलको उत्तम पदवी पावो री यही० ।
प्रभु की भक्ति बिना नही मुक्ति दृढ़ विश्वास जमाओ री यही० ।
छोटी बड़ी सब मिलकर बहिनो गुण ईश्वर के गाओ री यही० ।

भजन ३४.

मैं जाना प्रभुजी के पास नी माये बरज न मैनूं ।
तेरी मरजी मैं रहना नहींयों, चाहै सीस उतार ॥
सतगुरां मेरियां दी एह नी निशानी, कर गया मैनूं प्रेम दिवानी, देके नाम आधार ।
प्रभु जी मेरे बड़े ने दयालू, करदे हैं भौजल पार ॥
सतगुरां मेरे बड़े उपकारी, छिन विच करन निहाल ।
केते आये केतियां जाना, झूठा है सब संसार ॥
सच झूठका लेखा करते, हरी जी आप सच्ची सरकार ।
सौहरे पेके देदें नी बदीयां लोकी करन विचार ॥

मीरांबाई शरण तेरी आई, लालवो चरणां नाल ।

भजन ३५.

ऐसे परित्राता प्रभु, काहे को बिसारे हैं ।
कोट पापी-बन जन, क्षण में उद्धारे हैं ॥
भील बालमीक जाके, नाम ने सुधारे हैं ।
रविदास ओट लिये हुए भव पारे हैं ॥
जग बन घर वहां, रिपु बड़े भारे हैं ।
बिना हरि शरण लिये, सभी मार डारे हैं ॥
काल विकराल मुख, खोल के निहारे हैं ।
कौन जाने होवे आज, किसका आहारे हैं ॥
कई बाल वृद्ध नित्य लेत, वोह देह संहारे हैं ।
कौन जाने येहि श्वास. अन्त के हमारे हैं ॥
दयालु नाम प्रभु, मृत्यु भय को निवारे हैं ।
जाकी ओट लिये, पापी होय भव पारे हैं ॥

भजन ३६.

काहे मन सुमिरत नाहिं दयामय ।
सोई नाम जेह भक्त सुमिर नित, पापको करहिं पराजय ।
दुःख समय जेह सुमिर भक्त जन, पावें शांति सुधामय ॥

जग विषयन में क्यों फंस मूरख, जीवन करत सदा क्षय।
होय सचेत मोह निद्रा तज, नाम को कर नित आश्रय ॥

भजन ३७.

हरि यश रे मन गायले, जो संगी है तेरो।
अवसर बीता जात है, कहा मानले मेरो ॥
सम्पद रथ धन राज स्यूं, अति नेह लगायो।
काल फांस जब गले पड़, सब भयो परायो ॥
जान बूझ के बावरे, तू काज बिगाड़ियो।
पाप करत संकोचियो नाहीं, नाहीं गर्व निवारियो ॥
जेहि विधि गुरु उपदेशिया, सो सुनरे भाई।
नानक कहत पुकार के, गहो प्रभु शरणाई ॥

भजन ३८.

हरि हरि गुण गाओ साधो, हरि हरि गुण गाओ ॥
तन मन धन सब प्राण प्रभु के, सिमरत ही दुःख जायो।
इत उत तू कहां लोभाना, एकसों मन लाओ ॥
महा पवित्र संग आसन मिल, साधु संग हरि ध्याओ।
सकल त्याग शरण हरि आओ, नानक लियो जी मिलायो ॥

भजन ३९.

भक्ति भरे पिओ नाम सुधारस, हो मतवाले प्रेम से भाई।
जयध्वनि करो नाम उसी की, है जिसकी वसुधा बड़याई ॥
पाप यंत्रता और दुर्बलता, मन की सब जड़ताई।
प्रेम भरे यदि देखलो उनको, जाएँ चले ज्यों बादर छाई ॥
ज्ञान कथा सामान्य यत्न से, विमल हरिपद मिलता नाहीं।
प्राण हृदय तनमन से जबतक, साधन नहीं अन्तर्माहीं ॥
साधन से शुद्ध होवे हि होवे, यह अभ्रांत है बाणी।
धीरजग्रहण करो नाम साधन, सिमिरो उन्हींज्यूं पाणी चातक॥

भजन ४०.

हरि समान दाता जग में, दूसरा न कोई।
साधु और असाधु पाले, बोध अबोध दोई ॥
राव पाले रंक पाले, जगत में है जोई।
जीव पाले जन्तु पाले, कीट कर्म होई ॥
जड़ चेतन सब को पाले, पाप सब के धोई।
दुराचार दुष्ट लम्पट, धर्म्म लाज खोई ॥
जिसकी दात भोगें अहर्निश, खायें पहिरें सोई।
धन्य ऊंच तिसकी दया, शरण उसकी लोई ॥

भजन ४१.

सुन्दर स्वरूप जांको, अनुपम दया तांको ।
निरखत भक्त जोगी, प्रेम भर जात हैं ॥
जांकी प्रेम मुख छवी, हरे प्राण मन सभी ।
मदमत्त होके भक्त, जांका गुण गात हैं ॥
हृदय पुण्य स्थान पाये, जगत सभी भूल जाये ।
विमल महिमा जांकी, योगी चित्त को लुभात हैं ॥
चलो ऐसे स्वर्गधाम, छोड़ असत्य विषय काम ।
जहां सिद्ध साधकगण, योग को कमात हैं ॥

भजन ४२.

भज मन विभु चरणारविन्दे, गाओ हरि गुण परमानन्दे ।
जो हैं चित्त विनोदन मूर्त्ति मोहन, ध्यान करो सदा हृदे ।
त्यजिये वासना असर कल्पना, पियो प्रेमरस उत्साहदे ॥
योगी जन चित्त सदा प्रलोभत, जांके प्रेम मकरन्दे ।
जीवन संचार पातकि उद्धार, होये तुम से जांकि प्रसादे ॥
मन संचय इंद्रिय दमन, करेलों स्थान ब्रह्मपदे ।
गाओ ब्रह्म जय होकर निर्भय, सुख संपद दुःख विपदे ॥

———

भजन ४३.

हरि नाम भजो मन बारंबारा, जो सबका है प्राण अधारा ।।
जो कर्ता सृष्टिका स्वामी, सबके संग सदा रखवारा ।
महिमा जिसकी वर्णन करके, वेद पुराण कहत हैं अपारा ।
जिस बिन कोई नहीं करसक्ता, भव भयसागर पार उतारा ।
घटघट वासी हैं अविनाशी, सबमें चमक रहा इक तारा ।।
जिसकी करुणा पतित उधारे, पापी तारे लाख हजारा ।
वोही भवसागर का त्राता, महिमा है जिसकी अपरम्पारा।।
जिसके ध्यान और ज्ञान भजनसे, होय जन्म यह सफल हमारा।
प्रेम भक्ति और भजन से जिसके, होत जगत का मंगल चारा ।।

भजन ४४.

साधो हरि चरणन चित्त लायें ।
हर घट वासी पाप विनाशी, नाम दयामय ध्यायें ।।
बिन हरि नाम न सुखपरो कोई, मत पीछे पछतायें ।
एक हरि सब पापका हर्ता, उन्हीं से बर चाहें ।।
छोड़ असार वासना जगकी, प्रभु चरणन शिर नायें ।
बारंबार सिमर प्रभु पूरण, विविध रंग गुण गायें ।।
आनन्द आकर प्रेम पियो हर, पूर्ण पुरुप मनायें ।

सत्य सन्तोष आनन्द प्रेम मय, भक्ति दान वर पायें ॥

भजन ४५.

काया में रहो अलमस्त, नाम की पीकर तू बूटी ।
विश्वास की कुण्डी प्रेम का सोंटा, सत्य की रगड़ो बूटी ॥
सूक्ष्मज्ञान विस्तार में पुण्य, तेरे दिल को लगे घूटी ।
अहङ्कार ने कर दिया ग़ाफ़िल, मोह की निद्रा न टूटी ॥
राग द्वेष मद मोह चोरों ने, धर्म वस्तु तेरी लूटी ।
मात पिता सुत बन्धु छूटे, जगत् वासना ना छूटी ॥
वर्ष मास दिन क्षण २ सब कहें, जिन्दगानी तेरी लूटी ।
एक तो बेड़ा सोहे सागर में, दूजी प्रेम की कल टूटी ॥
लेता क्यों नहिं नाम साईं दा, क्यों हिये की फूटी ॥

भजन ४६.

शरण गहो उस प्रभु की भाई, जासु दया वरणी नहिं जाई ।
एक वही सबको प्रतिपालक, महिमा जासु रही जग छाई ।
राम कृष्ण जाकी स्तुति कीनी, नानक ने वरणी प्रभुताई ।
जाहि उपास्य महम्मद मान्यो, ईसा भक्ति करी चितलाई ।
जासु विशुद्ध भक्ति के कीने पापी भवसागर तरजाई ।

भजन ४७.

सत्य स्वरूप को ध्याओ (भाई) कपट बासना सब हट जाए।
कपट बासना सब मिट जाए, सत्य स्वरूप तब दृष्टि आवे ॥
भू पाताल आकाश और तारे, सबके अन्दर बाहर सार।
चमके दमके सदा समाना, एक रूप अद्वितीय भगवाना ॥
ज्ञान नेत्र जब जायें उघारे, सत्य प्रकाश तब देखे तारे।
एक रूप एक तार प्रकाशे, सबके अन्दर बाहर भाशे ॥
जब मिल हरि प्रिय काज कमायें, ज्ञान स्वरूप तबहि मन भायें।
भजो हरि मन समय न जावे, गया समय फिर हाथ न आवे ॥

भजन ४८.

बीत गये दिन भजन बिना रे।
बाल अवस्था खेल गंवाई, जब ज्वानी तब मान किया रे।
लाहे कारण मूल गंवायो, अजहूं न मिटी तेरी मन तृष्णा रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, पार उतर गये सन्त जना रे।

भजन ४९.

हरि प्रेम सुधारस पिये बिना, भवसागर किस विधि तरना है।
बिना सट हुए प्रभु चरणन में, कहो क्योंकर पार उतरना है।
शुष्क ज्ञान से कुछ नहीं सुधरे, क्यों लिख २ पुस्तक धरना है।

हम देख लिया जीवन में अपने, भ्रांति अन्दर पड़ना है।
सामान्य यत्न से कोई भी नहीं देखे, पिता की करुणा है।
बिना प्रेम प्याला पिए कभी, नहीं पाप ने मन से झड़ना है।
शांति धाम सुधा धाम एक हि, दयामय प्रभु के चरना है।
प्राणों मांहि मन राखो उन्हें, यदि भय दुःख शोक निबरना।
विमल ज्ञानमय ज्योति जिनकी, देख देख दुःख हरना है।
प्रेम राज में वास करो, यदि परमानन्द को बरना है।

भजन ५०.

पी ले ऊधो हो मतवाला, प्याला प्रेम हरि रस का रे।
बाल अवस्था खेल गंवाई, तारुण्य भयो नारी बसका रे।
वृद्ध भयो कफ वायु ने घेरा, खाट पड़ा नहीं जान सका रे
नाभि कमल में है कस्तूरी, भ्रम मिटे कैसे पशु का रे।
बिन सत्य गुरु दुःख ऐसा ही पावे, जैसे मृग फिरै वनका रे।

भजन ५१.

रात गई प्रभात भई अब, उठो उठो हो चैतन रे।
सरल चित्त और मधुर भाव से, गावो सब विभुगुन रे॥
लोहित वर्ण अरुण की शोभा, देखो श्यामल उपवन रे।
विहङ्गम सब करें मधुर रव, कर कर शयन विसर्जन रे॥

तूने दिल उसी को बिसारा है ।
तू उसी का विश्वासी नहीं ।
के जो तेरा पुश्तोपनाह है ॥ यह० ॥

भजन ५५.

भूलियो मन माया में उरझायो ।
जो जो कर्म किये लालच लग, तिहिं २ आप बंधायो ।
समझ न पड़ी विषय रस रचियो, यश हरि को बिसरायो ।
संग स्वामी सो जान्यो नाहीं, बन खोजन को धायो ।
रत्न नाम घट ही के भीतर, तांको ज्ञान न पायो ।
जन नानक भगवन्त भजन बिन, बृथा जन्म गंवायो ।

भजन ५६.

राम जपो जिया ऐसे ऐसे, ध्रुव प्रह्लाद जपे हर जैसे ।
दीन दयाल भरोसे तेरे, सब परिवार चढाया बेड़े ॥
जा तिस भावे ता हुकुम मनावे, इस बेड़े को पार लंघावे ।
कहो कबीर भज सारंग पाणी, वार पार सब एकोदाणी ॥

भजन ५७.

मेरे राणा जी मैं गोबिन्द के गुण गाना ॥
राजा रूठे नगरी राखे अपनी, मैं हर रूठे कहां जाना ।

राणे ने भेजा ज़हर प्याला, मैं अमृत कर पी जाना ॥
डबिया में काला नाग जो भेज्या, मैं सालगराम कर जाना
मीरांबाई प्रेम दिवानी, मैं सांवरिया वर पाना ॥

भजन ५८.

कपड़े लये नीं रंगा जोगी मन क्यों नहींयों रंगया ।
यह तन माया पाया प्यारे लीथड़ा लब रंगाये ।
मेरे कन्त न भावे चोलड़ा प्यारे क्यों धन सहजे जाये ॥
हो कुरबाने जाऊं हर बाना हों कुरबाने जाऊं ।
लेन जो तेरा नांव तिना के सद कुरबाने जाऊं ॥
काया रंगन जे थीये प्यारे पाइये नांव मजीठ ।
रंगन वाला जो रंगे साहिब ऐसा रंग न डीठ ॥
जिनके चोले रतड़े प्यारे कन्त तिन्हा के पास ।
धूल तिना की जे मिले जी कहो नानक की अर्दास ॥

भजन ५९.

जागो भाई जागो सकल नर नारी ।
नयन खोल देखो करुणा निधान;
सत्य पुरुष हितकारी ।
जिनकी करुणा से मानुष भयो;

अमृत का अधिकारी ।
कर प्रणाम तिन्हें अन्तर से;
पुण्य (प्रेम) के बनो भिखारी ।

भजन ६०.

प्यारो दयालु देव के दरबार को चलो ।
सब पाप ताप त्रास हरनहार को चलो ॥
कुछ ग़म न करो दिल में, कि ख्वारो ख़िजल हैं हम ।
सबके बचाने के लिये तय्यार को चलो ।
ज़ख़्मों का अपने चाहो, अगर ज़ूद इन्दमाल ।
आओ चलो तो मरहमे, अफ़सार को चलो ॥
है सख्त दर्द पाप का, इस के इलाज को ।
दारुलशफ़ाये क़ादरे गुफ्फार को चलो ॥
क्यों मांगते हो उनसे, के जो दे नहीं सकते ।
क्यों भूलते भटकते हो होशियार हो चलो ॥

भजन ६१.

इक अविनाशी परब्रह्म को, हे मानव अनुसरन करो ।
जग के सकल विषय वैभव से, दूर सकल अभिमान करो ॥
सरल चित्त से हृदयराज्य में, प्रभुको अनुसन्धान करो ।

कर अपरूप प्रभूका दर्शन, पाप ताप अपहरन करो ॥
चिन्ता वचन और कारज में, महिमा उनकी महान करो।
आत्मसमर्पण करके उनको, जीवनका परित्राण करो ॥

(नाम की महिमा)

भजन ६२.

आखां जीवां बिसरे मरजाओ, आखन औखा साचा नाओ।
साचे नाम की लागे भूख, तित भूके खाए चलिये दुख ॥
सो क्यों बिसरे मेरी माई, साचा साहिब साचे नाई।
साचे नाम की तिल वडिआई, आख थके कीमत ना पाई॥
जे सब मिल के आखन पाये, बड्डा न होवे घट न जावे।
न ओ मरे न होवे सोग। देंदा रहे न चोके भोग॥
गुन इहो होर नाहीं कोई, न कोई होया ना कोई होई।
जे बड आप ते बड़े तेरी जात, जिन दिन करके कीती रात॥
ख़स्म वसारी ते कमजात, नानक नावे वाझ नसात।

भजन ६३.

जिनके हृदय हरिनाम बसे, तिन और का नाम लिया न लिया।
जिनके घर एक सपूत भयो, तिन लाख कपूत हुआ न हुआ॥

पानी हुआ तो क्या हुआ ठंडा तत्ता हो ॥ जे तूं० ॥
हरजन ऐसा चाहिये हरी जैसा हो । जे तूं मिलना है,
तज मन का अब मान जे तूं मिलना है ॥

भजन ७४.

साईं नाल मैं रतियां नी ना वरज भोलिए माये ॥
रत्ते नी सेई जेड़े मुख नहीं मोड़दे जिनां पछाता ॥साईं॥
कच्चे नी विरयों जेड़े झड़ २ पैंदे जिनां नू सार न आई॥साईं॥
धनी बहू ने पट पटम्बर भाईयां सेती जाले ॥
धूड़ी दे विच लुड़ीनदड़ी सोवां नानक दे शौनाले ॥

भजन ७५.

कैसी तुमरी दया अतुलन ।
हम सब के मंगल के कारण कीनी ब्रह्मशक्ति अवतीर्ण ।
नर नारी को खेंच रहे हो, करने को ब्रह्मराज निस्तारन ॥
पवित्र हृदय को देख २ कर धन्य २ होगया हमरा जीवन ।
हम तुमरे तुम हमरे भीतर बन गया यहां स्वर्ग स्थान ॥
तुमरे साथ मिले जब पूरे तब हो हम सुमिलन ।
दासी तुम्हारी आनन्द से भरकर, धन्यवाद गाये बारंबारन॥

—०—

भजन ७६.

वृत्ति भोली विषय उरझानी ।
अब तो सोच ज़रा रे प्राणी ॥
मानुष जन्म अमोलक मिलया, रे उसकी कदर न जानी ॥
विषयों का रस जाके मछली से पूछो, कैसे हुई वह फानी ।
छुरी से काटी अग्नि से तपाई, कहा ठण्डा पानी ॥
बचपन को खेल गंवाया युवा हुआ अभिमानी ।
वृद्ध हुआ कुछ बस नहीं जावत अबतो आई मौत निशानी॥
जिस दुनियां में डेरा है तेरा वह तो है खुद फ़ानी ।
इस जिन्दगी का क्या है भरोसा जैसे पताशा विच पानी॥
मौत जब है लेने आवे देखे नहीं राजा रानी ।
चलो चली का डेरा है प्यारी क्यों सोया चादर है तानी॥
सार छोड़ असार पकड़ क्यों डूबा अज्ञानी ।
कहे दासी तेरी प्रभुजी समझे कोई पूरा ब्रह्मज्ञानी ॥
जब लग जीवें हरि गुण गालें मन हित चित से प्यारी ।

भजन ७७.

मन तोहे किस विध कर समझाऊं ॥
सोना होय तो सुहाग चलाऊं, बंक नाल रस लाऊं ।

ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊं, पानी कर पिघलाऊं ॥
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊं, ऊपर जीन कसाऊं ।
होय सवार तेरे पर बैठूं, चाबुक देके चलाऊं ॥
हस्ती होय जंजीर घड़ाऊं चारों पैर बंधाऊं ।
होय महावत सिर पर बैठूं, अंकुश देके चलाऊं ॥
लोहा होय तो अहिरन मंगाऊं, ऊपर धुवन धुवाऊं ।
धुवनन की घनघार मचाऊं, जन्तर तार खिचाऊं ॥
ज्ञानी होय तो ज्ञान सिखाऊं, सत्य की राह चलाऊं ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अमरापुर पहुंचाऊं ॥

भजन ७८.

अजब हैरान हूं भगवन् तुम्हें क्योंकर रिझाऊं मैं ।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं ॥
करूं किस तरह आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जा ।
निरादर है बुलाने में अगर घण्टी बजाऊं मैं ॥
तुम्हीं हो मूर्त्ति में भी तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान् पर भगवान् को कैसे चढाऊं मैं ॥
तुम्हारी जोत से रोशन हैं सूरज चांद और तारे ।
महा अन्धेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊं मैं ॥

लगाना भोग कुछ तुमको यह एक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जगको उसे क्योंकर खिलाऊं मैं ॥
भुजाएँ हें न सीना है न गर्दन है न पेशानी।
तू है निर्लेप नारायण कहां चन्दन लगाऊं मैं ॥

भजन—उपदेश ७९.

पुकारो मन जननी अविराम ।
जननी विना मुझे आश्रय नाहीं, पाऊं कहां विश्राम ॥
जननी गोद परम सुख शान्ति, जननी पद स्वर्ग धाम ।
जननी विन मेरी को सुध लेवे, जननी पूर्ण काम ॥
जननी अमृत आनन्द जननी, जननी प्राण आराम ।
जननी नाम से प्रेम अति जागे, मत भूलो यह नाम ॥



द्वितीय अध्याय ।

वैराग्य के भजन ।

भजन ८०.

शान्ति ढूंढो वृथा भाई, छोड़ शान्ति निकेतन ॥
मरीचिका में पानी जैसे, जग में शान्ति आयोजन ॥
कभी सुख पारावार, कभी दुःख हाहाकार ।
विषय धन रूप यौवन, करें सभी द्रुत गमन ॥
आज प्रिय प्रेमालाप, कल वियोग से बिलाप ।
कभी पुत्र आलिंगन, कभी तासु विसर जन ॥
ऐसी हो दशा जहां, शान्ति फिर वहां कहां ।
शान्ति सुख चाहो यदि, करो हरि पद ग्रहन ॥

भजन ८१.

दयाघन तुम बिन को हितकारी ।
सुख दुःख में ऐसा बन्धु कौन है, शोक ताप भयहारी ।
संकटमय इस भवसागर से, तारे को कांडारी ।
किस प्रसाद हों दूर पराहत, रिपुदल विप्लव कारी ।

तप्त चित्त और दग्ध हृदय को, को दे शीतल वारी।
अन्तकाल जब सब कोइ त्यागे, को ले गोद पसारी।

गजल ८२.

कह रहा है आसमां यह सब समां कुछ भी नहीं।
पीस दूंगा एक गरदश में जहां कुछ भी नहीं॥ १॥
तखत वालों का पता देते हैं तखते गोर के।
खोज मिलता है वहां तक बादे अजां कुछ भी नहीं॥२॥
गूंजते थे जिन के डंके से जमीनो आसमां।
चुप पड़े हैं अब कबर में हूं न हां कुछ भी नहीं॥ ३॥
जिस जगह था जम का जलसा और खुसरो का महल।
चन्द कबरों के सिवा अब तो वहां कुछ भी नहीं॥ ४॥
जिनके महलों में हजारों रंग के फानूस थे।
झाड़ कबरों पर है उनके और निशां कुछ भी नहीं॥ ५॥

भजन ८३.

तैनूं प्रभु जान लिया, जान लिया हितु प्यारा।
रूप न रंग रस रेख है तेरा, सब ते तूं है न्यारा॥
तूं जीवन का जीवन प्रभु जी, तू है प्राण आधारा।
जिस मार्ग में घोर अन्धेरा, तेरा ही नाम उज्यारा॥

मात पिता सम्बन्धी सारे, अन्त करें हैं किनारा।
तूंहीं तो केवल निर्भर मेरा, तूंहीं परम प्यारा॥
जपतप नियम शौच और संयम, इन बिन नहीं छुटकारा।
मुझ में इन का लेश नहीं है, केवल तेरा सहारा॥
जो कुछ हूं तुम जानो हो ठाकुर, तुझसे यह हाल पुकारा।
अन्तकाल जब सब मोहे छोड़े, तुम नहीं करोगे किनारा॥
शुद्ध करो प्रभु तन मन मेरा, प्रीति हो बरतारा।
दीन हीन की मानों विनय पिता, बहे चक्षु जल धारा॥

भजन ८४.

साधो मन का मान त्यागो।
काम क्रोध संगत दुर्जन की, ताते अह निश भागो॥
सुख दुख दोनों समकर जानो, और मान अपमानो।
हर्ष शोक ते रहे अतीता, तिन जग तत्व पहचानो॥
स्तुति निन्दा द्वेष त्यागो, खोजो पद निरवाना।
जन नानक यह खेल कठिन है, किनहू गुरुमुख जाना॥

भजन ८५.

रचना राम रचाई रे साधो, रचना राम रचाई।
एक विनशे एक आस्थिर माने, आश्चर्य लखिया न जाई॥

झूठा तन सच्चा कर मान्यो, ज्यों सुपना रैनांई ।
काम क्रोध लोभ वश प्राणी, हरि मूरत बिसराई ॥
जो दिसे सो सकल विनाशी, ज्यों बादर की छांई ।
जन नानक जग जान्यो मिथ्या, रहो राम शरणाई ॥

भजन ८६.

प्रभु को याद करना बंदगी है ।
यह तेरी हकीकी ज़िन्दगी है ॥
कह इक दिन खाक हो जावेगा यह तन ।
तेरे डेरे लगेंगे जंगलो बन ॥
बजेंगे जब दमामे मौत वाले ।
परेशां हो करेगा आहो नाले ॥
गुज़र जब बेलड़ा जावेगा बेली ।
पुकारेगी यह जां रो रो अकेली ॥
कफ़े अफ़सोस मल घबरायगा तू ।
गुजश्ता वक्त को पछतायगा तू ॥
जगत में तू जिन्हों से नेह लगावे ।
कोई उस वक्त काम नहीं आवे ॥
फना संसार आखर कार जब है ।

जमाना फिर तेरा गमख्वार कब है ॥

तू दिल दुनियां से क्यों ऐसा लगाया ।

नह इक सायत कभी रब नूं ध्याया ॥

जन्म पा आदमी वृथा गंवाया ।

खरच लाखों न इक दमड़ी कमाया ॥

तू करले वंदगी और मान कहना ।

यहां है चंद रोज तेरा रहना ॥

भजन ८७.

रहा किसी का न कुछ ठिकाना, घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है ।

अजब तरह का यह है जमाना, घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है ॥

कहां है दारा कहां है अकबर, कहां है अर्जुन कहां युधिष्टर ।

हुए यहां से सभी रवाना ॥ घड़ी में० ॥

कभी जहां में बहार आती, खिज़ां है सूरत कभी दिखाती ।

अजब तबद्दल है इस जहां में ॥ घड़ी में० ॥

जमीं में पिनहां हुए वह इन्सां, करोंफर के थे जिनके सामां ।

नजर से गुजरां अजब फ़िसाना ॥ घड़ी में० ॥

भजन ८८.

कहां भरमया रे, सोच तू भूले ॥

कहां भरमाया सोच तू भूले, दुनियां में चित लाया।
चार दिवस दुनिया के सुख में, परम पिता को भुलाया रे।
सिर के बाल सुफेद हुए अब, वृद्ध होन को आया।
अब तो पट्टी खोल आंख की, काल सामने आया रे॥
मेरी मेरी करत भुलाना, दिन दिन पाप कमाया।
चलते बेर तड़ागी तोड़, सब कुछ हुआ पराया रे॥
बिन प्रभु शरण सोच मन मूरख, कह किसने सुख पाया।
यह विश्वासी कहत सुन चित्त सों, देख न जाय ठगाया रे॥

भजन ८९.

हरिनाम भजन का बेला है, मन करत वृथा अवहेला है।
जग दो दिन का यह मेला है, तुझे करना कूच अकेला है।
क्यों विरथा क्लेश अनेक सहे, जग तृष्णा पावक मांहि दहे।
क्यों पाप समुद्र में विवश बहे, श्रीप्रभुपद नौका करन गहे।
क्यों धन सम्पद में उलझ मरे, नित पाप ताप का कोश भरे।
क्यों प्रभु चरनन नहिं आय पड़े, जिससे भवसागर पार तरे।

भजन ९०.

हरि बिन तेरो कौन सहाई॥
किसके मात पिता सुत वनिता, कोई काहू को नाहीं।

धन धरती और सम्पद सगरी, क्यों मान्यों अप नाही ।
तन छूटे कछु संग न जाये, तामें कहां लिपटाई ॥
दीनदयाल सदा दुःख भंजन, तां काहे रुचि न बढ़ाई ।
नानक कहत असार जगत् में, मत उरझियो अति भाई ॥

भजन ९१.

राम सिमर राम सिमर, यही तेरो काज है ॥
माया को संग त्याग, प्रभु जी की शरण लाग ।
जगत् सुख मान मिथ्या, झूठे ही सब साज हैं ॥
सुपने ज्यों धन पछान, काहे पर करत मान ।
बालु की भीत जैसे, वसुधा को राज है ॥
नानक जन कहत बात, विनश जाय तेरो गात ।
छिन छिन कर गयो काल, तैसे जात आज है ॥

भजन ९२.

खबर नाहीं है जग में पल की ॥
सुकृत करले राम सिमर ले, को जाने कल की ॥
इस देही के भीतर हन्सा, सब खुशियां दिल की ।
जब यह हन्सा निकस जात है, माटी जंगल की ॥
तारा मण्डल और रवि, सब है चला चलकी ।

रामहि राम सिमर ले प्यारे, अवध गई धन की ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, कर बातें छल की ।
पाप की पोट धरी सिर ऊपर, किस विधि हो हलकी ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, सब दुनिया मतलब की ।
यह दुनिया दिन चार दिहाड़े, जैसे उस बोला जल की ॥
जब जम आवत कण्ठ तेरा घेरत, सुध न रहे तनकी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बातें चलांकी की ॥

भजन ९३.

क्यों मन भूला है संसारा, मन मत दे टुक करले गुज़ारा ।
इस जगमें सुख नित नहिं भाई, यह तो है जैसे पानी की धारा ।
मातपिता और खेश कुठुम्ब सब, संग नहिं कोई जावनहारा ।
अन्त समय सब देखन आयें, छनभर में सब होइ हैं न्यारा ।
जो कुछ अङ्ग में होगा तुम्हारे, वह भी सब मिल लेंहें उतारा ।
नरक अग्नि में जब तुम पड़ि हो, तब नहिं कोई बचावनहारा ।
भाई मुक्ति का खोज करो तुम, करुणामय प्रभु तारणहारा ।

भजन ९४.

इहो प्यारे हरि सिमरण दी है बेरी ॥
धन यौवन दा मान न करिये, पल विच काल नित्रेरी ।

मायामय तज सकल पदार्थ, हरि पग आश हो तेरी ॥
नलिनी दल पर जलबिन्दु सम, नित्य चपल जिन्द मेरी।
इस भवसागर पार तरन नूं, सत्सङ्गत है वेरी ॥
दिन रैना सायं अरु प्रातः, ऋतु कर जावन फेरी।
काल खेले आयु चली जावे, तां भी आश न घटेरी ॥
इह पिञ्जरा दो चार दिहाड़े, अन्त भस्म दी है ढेरी।
भज हरि नाम सदा सुखदायक, लेहु शरण हरि केरी ॥

भजन ९५.

तूं बात चलन दी कर रे, इत्थे रहना नाहीं।
इस देही विच पांच चोर हैं, उन्हां दा कहा न कर रे।
यह संसार कण्डियांदी है वाडी, तूं संभल संभल पग धर रे।
साढे तीन हाथ जमीन बन्दे दी, तूं एडे मुलक न मल रे।
शाह हुसेन फकीर रब्बाना, झूठा दुनिया कूडा बाना।
इसके विच मन मत लगाना, तूं हरि चरणन चित धर रे।

भजन ९६.

जिन्हां घर झूलते हाथी, हजारों लाख थे साथी।
उन्हां को खागई माटी, तू खुशकर नींद क्यों सोया ॥
नक्कारा कूंच का बाजे, के मारू मौत का बाजे।

ज्यों श्रावण मेघला गाजे, तूं खुशकर नींद क्यों सोया ॥
कहां गये खान मदमाते, जो सूर्य चान्द सों जाते ।
न देखे कहां जी वह जाते, तूं खुशकर नींद क्यों सोया ॥
जिन्हां घर लाल और हीरे, सदा मुख पान के बीड़े ।
उन्हां को खा गये कीड़े, तूं खुशकर नींद क्यों सोया ॥
जिन्हां घर पालकी घोड़े, जरी जर बफ्त के जोड़े ।
वही अब मौत ने तोड़े, तूं खुशकर नींद क्यों सोया ॥
जिन्हां सङ्ग नेह था तेरा, उन्हां किया खाक में डेरा ।
न फिर वह करेंगे फेरा, तूं खुशकर नींद क्यों सोया ॥

९७ भजन (ग़ज़ल)

जरा टुक सोच ऐ गाफिल, कि दमका क्या ठिकाना है ।
निकल जब यह गया तन से, तो सब अपना बेगाना है ॥
मुसाफर तू है और दुनिया, सरा है भूल मत गाफिल ।
सफर परलोक का आखिर, तुझे दरपेश आना है ॥
लगाता है अबस दौलत पे, क्यों तू दिलको अब नाहक़ ।
न जावें संग कुछ हरगिज़, यहीं सब छोड़ जाना है ॥
न भाई बन्द है कोई, न कोई आशना अपना ।
बखूबी गौर कर देखा, तो मतलब का ज़माना है ॥

लगा रह याद में हक के, अगर अपनी शफा चाहो ।
अबस दुनिया के धन्दों में, हुवा तू क्यों दिवाना है ॥

भजन ९८.

एक घड़ी तेरा नाम न जपिया ।
ऐवें गईया सारी उमर विहानी ॥
तव सिमरन हित जन्म एह धरिया ।
सुध बुध ज्ञान तें मैं मन भरिया ॥
जिस लई आए सो काज न करिया ।
खाली कर हा दोय अति सिधानी ॥
इस जग आये हरि बिसराये ।
एक पल निज मन प्रभु नहीं ध्याये ।
निमक हरामी हो अवधि गवांई ।
गन्दी होई जिह्वा और वाणी ।
इस जग आये झगड़े मले ।
रौले में आये रौले में चले ।
नाम तेरा धन मूल न पल्ले ।
आयु होई एक विफल कहानी ।

भजन ९९.

बन्दे आपनू पैछान ॥

जे तैं आपना आप पछाता । सांइदा मिलना आसान ।
सोने दें कोट रोपहरे छजे । हरि बिन जान मसान ।
मौत तेरे सिर सदा खलोती । भावें जान न जान ।
साढ़ तीन हथ मुल्क तोसाड़ा । इडेढे तंबू न तान ।
सोना रूपा माल खजाना । किसी दे संग न जान ।
कहे हुसेन फकीर निमाना । छड़ दे खुदी गुमान ।

भजन १००.

क्यों सोया गफलत का मारा, जरा सोच ऐ प्राणी रे ।
बचपन को तूं खेल गंवायो, युवा हुआ अभिमानी रे ।
वृद्ध हुए कुछ बस नहीं जावत, अब तो आई मौत निशानी रे ।
जिस दुनिया में है डेरा तेरा, ओ तो है खुद फानी रे ।
जिसको तूं है अपना समझा, ओतो संग न जानी रे ।
इस जिन्दगीका क्या है भरोसा, ज्यों पताशा विच है पानी रे ।
मौत जबही लेने आवे, देखे राजा न रानी रे ॥
चलाचली का मेला है यहां, क्यों सोया चद्दर तानी रे ।

भजन १०१.

फना हो जानी रे यह तेरी काया । (झूठी तेरी काया)
ए काया तो फना होजानी, झूठी है जिन्दगानी ।
देख भाल कर क्यों भरमावे, सोच समझ अभिमानी रे ॥
जिस काया को पाप कमाकर, पाले है मन मानी ।
गोर दबे या आग जलेगी, यह तो संग न जानी रे ॥
निर्मल उत्तम रूप आत्मा, पाप कीच में सानी ।
सार छोड़ असार पकड़ कर, क्यों डूबे अज्ञानी रे ॥
जब लग जीवे हरि गुण गाले, मन हित चित्त से प्राणी ।
विश्वासी पी प्रेम प्याला, इश्क करो हक्कानी रे ॥

भजन १०२.

जांय चले तेरे दिन साधन के ॥
सोचो जग अन्तर चित होकर, दिन अपने बचपन के ।
सकल आयु गई निश चिन्ता की, बीत समान सुपन के ।
श्वेत हुए सिर केश तुम्हारे, दिन निकट परलोक गमन के ।
कितनेहि प्रिय बन्धुगण तेरे, ग्रास हुये हैं निधन के ।
अतिशय साधु समाज में मिलकर, निकट रहो दया घन के ।
मृत्यु जरा का भय नहीं जहां, जायें शोक सभी जीवन के ।

भजन १०३.

छोड़ो भाई सकल पाप, भुगत सकल अनुताप ।
प्रभुजी को करो जाप, इसी में उद्धार है ॥
जीवन का कुछ करो ध्यान, उपजे जिससे सत्यज्ञान ।
छोड़ मिथ्या अभिमान, दुनिया दिन चार है ॥
काट सकल विषय फांस, हरि के तुम बनो दास ।
प्रभुहि पर करो आश, भवसागर पार है ॥
करो हृदय में विचार, दुनिया है यह असार ।
इसे तुम मत करो प्यार, यही मम पुकार है ॥

भजन १०४.

राम सिमर पछतायेगा (मन) ॥
पापी जीवड़ा लोभ करत है, आज कल उठ जायेगा ।
लालच लगया जन्म गंवाया, माया भ्रम भुलायेगा ।
धन यौवन का गर्व न करिये, कागज सा गल जायेगा ।
सिमर भजन कुछ दया न कीनी, ता मुख चोटां खायेगा ।
आप प्रभू जब लेखा मांगे, क्या मुख लेकर जायेगा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साध संगत तर जायेगा ।

भजन १०५.

सब सुख राम नाम लिवलाई, नाम विना सुख सकल व्यर्थाई ॥
ना सुख होवत मूंड मुंडाये, ना सुख घरघर अलख जगाये ।
ना सुख है अपने घर मांही, ना सुख भगवे भेस बनाये ।
ना सुख बनमें ना सुख धनमें, ना सुख चिंता ना हर्षाई ॥
ना सुख योग यज्ञ तप पूजा, ना सुख झूठ समाधि लगाई ॥
ना सुख राजे ना सुख राणी, ना सुख हास विलास कहानी ।
ना सुख माने ना अपमाने, ना सुख झूठी कर चतुराई ॥
ना सुख वेद कुतेब पुराना, ना कुछ आराम कथे मुख ज्ञाना ।
सगरे सुख कबीर सो पाये, राम नाम जो मनहिं बसाये ॥

भजन १०६.

यहि घड़ी यहि वेला साधो ॥
लाख खर्चे फिर हाथ न आवे, मानष जन्म सोहेला ।
ना कोई संगी ना कोई साथी, ये जाता भंवर अकेला ॥
क्यों सोया उठ जाग सवेरे, काल मरेंदा सेला ।
कहत कबीर गोविन्द गुण गाओ, झूठा है सब मेला ॥

भजन १०७.

नांगे आवन नांगे जाना, कोई न रहे है राजा राणा ।

राम राजा नौ निधि मेरे, सुपने हेत कलत धन तेरे ॥
आवत संग न जात संगाती, कहा भयो दर बांधे हाथी ।
लंका गढ़ सोने का भया, मूर्ख रावण क्या लेगया ।
कह कबीर कुछ गुण विचार, चले ज्वारी दोये हथ झार ॥

भजन १०८.

मत देख भूला वसेरे तेरा चित्त न आवे नांव ।
मोती तां मन्दिर उसरे रत्न तां होवे गड़ाव ॥
कस्तूर कंगवागर चन्दन लेप आवे चाव ।
हरि विन जीव जल जाओ, मैं अपना गुरु पूछ देखया ॥
(और नहीं थांव)

धरती तां हीरे लाल जड़ती पलंग लाल जड़ाओ ।
मोहनी मुख मणि सोहे करे अंग पसाओ ॥ मत देख०
सिद्ध होवां सिद्ध लाई, रिद्ध आखां आओ ।
गुप्त प्रकट होवे वैसा, लोक राखे भाव ॥ मत देख०
सुलतान होवां मेल लश्कर, तखत राखां पांव ।
हुकम हासिल करें बैठा, नानका सब वाव ॥ मत देख०

भजन १०९.

प्रीतम जान लियो मन मांहि ।
अपने सुख में सब जग बांधयो, कोई काऊ का नाहीं ॥
सुख में आन सब संग बैठत, रहत चहुं दिश घेरो ।
विपत पड़ी सभी संग छोड़त, कोऊ नहीं आवत नेड़ ॥
घर की नार बहुत हित जासों, रहत सदा संग लागी ।
जब यह हंस त्यागे काया, प्रेत २ कर भागी ॥
यह विद को व्यवहार बनो है, जो सुत नेह लगायो ।
अन्त की वार नानक बिन हर जी, कोई काम न आयो ॥

भजन ११०.

काये नर गरब करे तेरी विनमजपे झूठी दही ॥
नानक आखेर मना सुनिये सीख सही ।
लेखा रब्ब मंगोसिया बैठा कड्ड वही ॥
तलबा पोषन आखीये बाकी जिना रही ।
इज़राईल फ़रिश्ता होसी आन सही ॥
आवन जावन सूझत नाहीं भीड़ी गली भई ।
कूड़ न खुट्टे नानका भाई ओड़क साच रही ॥

भजन १११.

तुम ही हो जीवन की गति इस लोक और परलोक में।
तुम ही हो जीवन आश्रय मंगल विपद भय शोक में॥
हो विश्वप्रकाशक तुमही जगदाधार और जगआश्रय।
तुमही हो हृदय ज्योतिः प्रभु अन्धकार और आलोक में॥
तुमही प्रेममय प्रभु प्यारे हो तुमही हृदय उजियारे हो।
तुम ही एक मात्र सहारे हो संताप में सन्तोष में॥
तुमही एक जीवनदाता हो तुमही एक विश्व विधाता हो।
विश्वासी की तुमही आशा हो इस लोक और परलोक में॥

भजन ११२.

मां सफर मेरा अब खतम हुआ, मैं अपने घरको आता हूं।
जहां रोग नहीं और शोक नहीं, जहां तब दर्शन में रोक नहीं॥
तुम प्रेम पलक से बुलाती हो, मैं आज्ञा पाकर आता हूं।
कुछ सम्बल मेरे साथ नहीं, तेरे चरनों सीस नवाता हूं॥
मुख बन्द हुआ कुछ कह न सकूं, पर हृदयके स्वर से नाम जपूं।
तेरा नाम बड़ा मुझे प्यारा है, अब तुझ बिन कौन सहारा है॥
तेरी इच्छा पूरन हो जिस से, मैं आखर तक निष्काम रहूं।
मां बहुत थका हूं दुनियां से तेरी गोद में अब विश्राम करूं॥

तेरी गोद में है ईसा मूसा, नानक चेतन और रविदासा ।
तेरी गोद बहुत विस्तीर्ण है एक कोने की है मुझे आशा ।।
मैं भूलूं अपने को तुझ में, और डूबूं अमृत सागर में ।
सब मोह माया से विहीन करो, और निज ज्योति में लीन करो ।।

भजन ११३.

ऐवें गुजर गई गल्लां करदियां ।
कुछ करवीना लिया हथों सरदियां ।। ऐवें० १ ।।
क्यों सुता है चादर तानके, आपने दिलदियां मौजा मानके ।
तेरी सुरत ना लेई किसी आनके ।। ऐवें० २ ।।
तेरे भाई बन्ध घनेरे तेरे, सुख देनी सजन बथेरे ।
तेनु रखवीना लिया किसी मरदियां ।। ऐवें० ३ ।।
सुचे फुलांदी कुछ नहीं वासना, इस जीवड़ेदी कोइ नहीं यों आसना । फिर की करेंगा कमां विहोदियां ।।ऐवें०४ ।।
तुं तां केडोड़े पाप कमावे, चलदी वारी कुछ संग ना जावे ।
पिछों घलन वी नहीं यों किसी घरदियां ।।ऐवें०५।।
तुं तां पाप करे ना डर से, पिछों जारोजार रोसें ।
फिर की होवे पिछों पछतांदियां ।। ऐवें० ६ ।।

कहे हुसेन फखीर गुदाई, तैनु रात जंगल विच आई ।
की जवाब देवें अन्दर बड़दियां ॥ ऐवें० ७ ॥

भजन ११४.

कल किसने देखा नी सेईयों पल किसने देखा नहीं भरोसा इस दम दा ॥ पल विच सेइयां सीसगुदा ये ते पल विच केस लटक देनी गल ॥ कल० ॥ पल विच राजे राज करत हैं ते पल विच भिखिया मगदे नी दर ॥ कल० ॥ पल विच पंछी चोग चुगत हैं ते पल विच फाईयां लटकन गल ॥ पल विच नदिया नीर वगदियां ते पल विच पंछी ससकन जल ॥ कल० ॥

भजन ११५.

राम नाम सिमर ले मन मेरे सुवासां दा अतबार नहीं ॥
कचीरे कंद बलु का गारा इस पर महल उसार नहीं ।
चुन २ कंकर महल उसारे समझ लेना दिन चार नहीं ॥
माया ने तुझे बहुत भरमाया हरका नाम विसार दिया।
हड़ चम नाड़ी का पिंजरा जिसमें मनुया वास तेरा॥
भाईरे बन्ध कुटंब जो तेरा विपद पड़ी कोई ताद नहीं ॥

जिस मालक तेनुं पैदे कीता उसका नाम विसार दिया ।
डुंगीयां नदीयां नला वे पुराना सिर पर गठड़ी भारीजे ॥
धर्मी साधु लंग २ जांदे रह गई औगन हारी जे ॥ कहत
कबीर सुनो भाई साधो आवना दूसरी वार नहीं ॥ राम
नाम सिमरले मन मेरे सुवांसा दा अतबार नहीं ॥

भजन ११६.

समझ मना अब मानिया वे कदे समझ मना ॥
कालिया केसा रगंवटांव आगई मौत नशानियां वे कदे ॥
दंद मुखो तेरे झड़ २ पैंदे जीवा तेरी थथलांदी आवे कदे ॥
कन तेरे जब सुन्नो रहे गये अखां विचो नीर वगादीयां वे ॥
हथ पैर तेरे कंब २ जांदे देह तेरी झुलादीया वे कदे ॥
गौर नमानी पैई वे बडीके मिलजाइ दिल दिया जानीयावे कदे
कहत कबीर सुनो भाई साधो ऐवे उमर विहावदीयां वे कदे ॥

भजन ११७.

क्या तन मांजते रे आखिर माटी में मिलना ॥
माटी ओढ़े माटी पहिने माटी का सिरहाना ।
माटी का कलबूत बनाया जिसमें भंवर समाना ॥

माटी कहे कुम्हार को तू नित उठ मांजे मोहे ।
एक दिन ऐसा आवेगा मैं मांजूंगी तोहे ॥
चुन २ लकड़ी महल बनाया बंदा कहे घर मेरा ।
ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़िया रैन बसेरा ॥
माल पड़ा साहूकार का चोर लगा सरकारी ।
एक दिन मुशकिल आन बनेगी महसूल भरेगा भारी ॥
फाटा चोला भया पुराना कब लग सिये दरजी ।
दिल दा मरहम कोई ना मिलया जो मिलया अलगरजी ॥
नानक चोला अमर भया संत जो मिल गए दरजी ।
दिल दे मरहम संत जो मिल गए उपकारन के गरजी ॥

भजन ११८.

हंस के गुजार दम, सदा नहीं जे रहना ॥
खांई ते हंडाई नेहों सांई नाल लांई
नेयों हसी । कारण सैवना हंस के गुजार० ॥
जोड़ सी बहुंतरे दम आये नहीं किस कम ।
लखां ते हज़ारां वाले नंगी पैरी चलना ॥
भावें आवें रुम शामा लबदा नहीं एक दमा ।

भरियां होयां शहरां विचों नसीबां नाल खावना ॥
सीधे मार्ग पांओं रख चुभे नहीं कंडा कख ।
विङ्ग मार्ग पांओं धरिये होवे अंग भंगना ॥
शाह बादशाह झूरे किसी दे नहीं काम पुरे ।
बुलेदी बुला झुरे हरबीर चलना ॥ हंस० ॥

भजन ११९.

सुफने दी रचना में मन लाई ना तूं सुफने दे मालका ॥ टेक
छिण में उपजे छिण में विनसे, कदे शोक कदे ये मन विगसे ।
अंत भोजन सब काल का ॥ १ ॥
सगल ब्रहमंड नौ खंड सत दीप, ऐसे जाना जैसे रुपा है सीप ।
तूं खग ना बना माएया जाल का ॥ २ ॥
बाजीगर जैसे रचना रचावे, मोहरा रुपइए सुंद्र जीव बनावे ।
वो धना ना बानया झूठे माल का ॥ ३ ॥
जैसे दीपक रहिनयारा जोड़ी सरंदा बाजे होए ।
निरत करारा वो भाग ना लय किस ताल का ॥४॥
जैसे दरपण रूप दिखा ले, सावे पीले दसदा जे काले ।
वो रंग ना लय रंती बाल का ॥ ५ ॥

नाना रस जैसे दरबी बनावे, सब को बरतावे रती आपना खावे।
भावें व्यजन न किसे चाल का ॥ ६ ॥
जो इस पै मन देके बसे है, वे मलूमा जाए फसे है।
फेर कौन महिरंम ओदे हाल का ॥ ७ ॥
भगतानंद मत भूलो प्यारे, वरतो जग में बसो किनारे।
ये सच्चा खजाना उजल भाल का ॥ ८ ॥

भजन १२०.

साधो सब जग चलन हारा।
स्वास २ कर आयु जावे, समझे नहीं गवारा।
देखत ही सब लोग विनासे, ज्यों परभाती तारा।
इक विनसे इक असथिर मानें, यह रीती संसारा।
नाओ संजोग बनओ जग सारा, छिन में विछरन हारा।
आवे अकेला जावे अकेला, झूठा सगल पसारा।
को काहू को बैरी कहिये, को काहू को प्यारा।
सब ने ऐथों चलना इक दिन, बाज रहा है नकारा।
हेमराज यह विध को रचना, आप रची करतारा।

भजन १२१.

हाल फकीरां दा वे केयाई, सच आखीं तूं मैं छोड़े नाले। सिर टोपी सच्चे नाम दी खुशी दी खफनी कमर काटड़ा ही वे जत दा, मत्थे चन्द्र मणी ॥ हाल ॥

धुनी तपदे ध्यान दी माला सुर्त बनी।
हाथ फहोड़ी वे ज्ञान दी वारी वे ज्ञान दी।
लिव लागी है दसवें द्वार ॥ हाल फकीरां०
तुरिया पद विच खेलदे, ओनां लखे वे न को।
जग विच फिरदे नी वे वावरे वारी वे वावरे।
हस देंदे नी आपे रो ॥ हाल फकीरां०।
भरमन करदे देश में परालब्ध अनुसार।
जो मिलदा सोई वे पांवदे वारी वे पांवदे।
देंदे प्राण अधार ॥ हाल फकीरां०।
मत्ते हाथी प्रेम दे आठों पहर खुमार।
धूड़ संतां दयां वे चरणां दी वारी वे चर्णा दी।
कह गये दास कुमाल ॥ हाल फकीरां०।

भजन १२२.

तुम देखो सन्तो भूल भुलय्या का तमाशा ।। टेक ।।

ना कोई आता ना कोई जाता झूठा जगत का नाता ।
ना काहू की बहन भानजी ना काहू की मामा ।।१।।
ड्योढी लग तेरी तिरिया जावे पोली लग तेरी माता ।
आज का उधार कल उधार [illegible]
मरघट तक सब जांय बराती हंस अकेला जाता ।।२।।
एक तई ओढे दोतई ओढे ओढे मल मल खासा ।
शाल दुशाला नित की ओढे अन्त खाक मिल जाता ।।३।।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी जोड़े लाख पचासा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो संग चले न माशा ।।४।।

भजन १२३.

सब दिन होत न एक समान ।।टेक।।

एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह, सम्पति मेरु समान ।
एक दिन जाय श्वपच घर सेवत, अम्बर हरत मशान ।।१।।
एक दिन दूलह बनत बराती चहुंदिश ढुरत निशान ।
एक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ।।२।।
एक दिन सीता रुदन करत है विपन उद्यान ।
एक दिन रामचन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ।।३।।

एक दिन राजा राज युधिष्ठर अनुचर श्री भगवान।
एक दिन द्रोपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥४॥
प्रकटत है पूरब की करनी तज मन सोच अजान।
सूरदास गुण कहं लग वरनों विधि के अङ्क प्रमान ॥५॥

भजन १२४.

जगत में झूठी देखी प्रीत ॥टेक॥
अपने ही सुख से सब जग लागे क्या दारा क्या मीत ॥१॥
मेरो मेरो सभी करत हैं हित से बांधो चीत ॥२॥
अन्तकाल संगी नहीं कोई यह अचरज की रीत ॥३॥
मन मूरख अज हूं नहीं समझत सिख दे हारो नीत ॥४॥
नानक भव जल पार परे जो गावे प्रभु गीत ॥५॥

भजन २२५.

जो रजा में जो गुजरे सेइये छोड़ खुदी का राह ॥
बन में शेर गुफा में बिछूया घर में महल गिरे। तन में रोग गगन में बिजली निर भये कहां रहीये ॥ जो रजा० ॥ नईया २ मलाहा घनेरे पुरन यत्न करे। उछली लहिर पलट गई नईया इस में क्या कहीये ॥ छोड़० ॥ राजा रंक भिखयारी दाता सब पर विपत पड़े।

किये करम भुगतन में आवें छोड़ कहां जाइये ॥ छोड़० ॥
करता हरता पोशन हारा एक प्रभु कहिये । नाथ नरंजन
उसी का भजन कर बेखटके रहीये ॥

भजन १२६.

वही देश में मुझे जाना है ।
जिस का नाम नहीं ठिकाना है ।
जहां रवीचन्द्र नहीं भावे ।
जहां शोक ताप नहीं पावे ।
जहां नहीं अपना विगाना ।
जहां टूट गया सब धन्दा ।
जहां राम रहीम एक बन्दा ।
जहां नहीं पुरान और कुरान ।
जहां नहीं जमीं असमान ।

भजन १२७.

रंग तमाशे सारे कूड़े जे जहान दे ।
रते संता नाल जेड़े सोई मौजा मान दे ॥
छोड़ के आनन्द सच्चा हड चम व्याजे कच्चा ।
मिशरे हमान दे ॥ रंग ते० ॥

सोनी मुशक अन्दरों आवे चला चल ।
भालन जावे मार अज्ञान दे ॥ रंग ते० ॥
बादशाही छोड़ आवें कंडया ते लेटन ।
जावे कम वेईमान दे ॥ रंग ते० ॥

भजन १२८.

बड़ा है बेसमझ मन दुःखां तो नहीं छुटदा ॥
हाय दुःखां तो नहीं छुटदा ॥
मोह रूपी अग्नी करके आपे पया धुखदा ।
तेरी तां मैं हालत सुनी केहदे सब ऋषि मुनि ।
शर्म कटारी खाके मर वी न मुकदा ॥
तैनूं पैगई बान खोटी पकड़े कोई विरला चोटी ।
पा देवे धाड़ा लोटी तूं जहां तहां लुकदा ॥
विषयां में दीनता आई आपने सिर छाई पाई ।
कहीं वी नां आदर पावे मारे विषयां दी भुखदा ॥
गई तेरी बातशाही सुख नहीं यो पाया राई ।
क्यों ऐंवे जावे सुकदा ॥
अपनें ते कृपा कर जीवदां तूं जावें मर गुरां दे वचन धर ।
विषयां नूं धुकदा ॥

विषे रूपी बर्छी भारी संग दो इक सर में भारी ।
जखमी है खलकत सारी कोई भागशील बचदा ॥
मोह भरा दुश्मन तेरा मन लै तू कहना मेरा ।
रात दिनों छलदा खिन २ विच मुकदा ॥
भगतानन्द गुरांदा होजा संसार दी तरफों तू सौजा।
बचनांई ते मैल को धोजा भर अमृत घुटदा ॥

भजन १२९.

तेरा जांदा दिसे शरीर अज कल भलके जी ॥
बदीयां न कर गाफला मत होवें दलगीर ।
लोहे वांगन ढालिये तेरे गल विच पैन जंजीर ।
नदी किनारे रुखड़ा किचरकु बनें धीर ॥
नदी किनारे बगला बैठा खेल करे ।
खेलां उसी रब दियां सब खेलां विसरया ।
अगे तेरा कोई नहींयों बेली न वीर ।
बंदा ढेरी खाक दी गुरु नानक कहे फकीर ॥
कल भलके नूं तेरा जांदा दिसे शरीर ॥

भजन १३०.

जिंदड़ी नूं काल ढुंढदाई हर भजलै समा पया वैंदाई ॥ ओ०

डूंगे जलविच मछली वसदी, खौफ साईं दा ना दिलविच रखदी
मछली नूं जाल पवेंदाई ॥ ओ० ॥
ऊंचे मंदर छैल चवारे, बस २ गये कई लोक विचारे।
पल भर रैन न देंदाई ॥ ओ० ॥
चुन २ कंकर महल उसारे, वस २ गये कई लोक विचारे।
इक पल रैन न देंदाई ॥ ओ० ॥
शाह हुसैन फकीर नमानां, झूठी दुनीयां झूठा माना।
कूड़े मान करेंदाई ॥ ओ० ॥

भजन १३१.

मेरी २ आखदियां तैनूं जरा शरम न आईयो ॥
मेरी २ रावण कर गये शाह सकन्दर दारा रे।
बाजीगर दी बाजी वांगर रचया कूड़ पसारा ॥ मेरी० ॥
मेरी २ कैरव कर गये दुर्योधन के भाई रे।
बारा जोजन छतर चले था देही गिरजन खाई ॥मेरी०॥
मेरे पुत्र मेरीयां धीयां मेरे कुटम्ब मेरे भाई रे।
जिनां दी खातर पाप कमावे ओनां दा ठौर न कोई ॥ मेरी
एह दुनियां दिन चार दिहाड़े न कर मन दा भाना।
शाह हुसैन फकीर साईंदा नंगी पैरी जानां ॥ मेरी० ॥

भजन १३२.

जोड़ जोड़ भर लिये खजाने, अब भी तृष्णा अड़ी रही।
पड़े रहे सब रँगले बङ्गले, खाली बारांदरी रही ॥
एक ब्राह्मण की सुनो कहानी, पूजा करने आया था।
न्हाय धोयकर नदी किनारे, आसन खूब जमाया था ॥
आय गया यम का परवाना, हाथ में माला पड़ी रही।
पड़े रहे सब रंगले बंगले० ॥
ऊँचे महल में एक स्त्री, चढी शृङ्गार बनाने को।
भरी भलाई सुरमें वाली, सुरमा आंख लगाने को ॥
काल गुलेल ठुकी पीछे से, सुरमें दानी धरी रही।
पड़े रहे सब रंगले बंगले० ॥
पहन पोशाक बांध कर चीरा, हट्टी ऊपर सेठ गये।
जाते ही एक चक्कर आया, पांव फैला कर लेट गये ॥
कूच कर गया लिखने वाला, कलम कान में अड़ी रही।
पड़े रहे सब रंगले बंगले० ॥
सैर करन एक बाबू जी, गाड़ी पर असवार हुये।
गाड़ी अभी चलने न पाई, बाबू जी ठन्डे ठार हुये ॥

लगा तमाचा एक अजल का, सड़क पै टमटम खड़ी रही ।
पड़े रहे सब रंगले बंगले० ॥
गौरी शंकर चेतो प्रानी, झगड़े और फसाद तजो ।
क्या लेना है इन झगड़ों में, मस्त रहो भगवंत भजो ॥
खिलखिल मिल गये फूल धूल में, नहीं फुलझड़ी रही ।
पड़े रहे सब रंगले बंगले० ॥

भजन १३३.

असल वतन गया भुल जी हमें असल वतन गया भुलझी ॥
मुद्दत से परदेस बसे ॥ हमको० ॥
वहां हमरा कोई वकिब नाहीं सब हैं हुकम अदुर जी । हमको०
रस्ता नहीं लवदा सवारी नहीं मिलदी आगे है पैड़ा दूरजी ॥
चलदियां २ काटा जे चुभा रोनियां जारोजार जी ॥ हमको०
जो कोई हमको वतन बतावे तन मन लेलै मुल जी ॥ हमको०
सूरदास जोड़े दोनों हाथ मेरी अरज करो मंजूर जी ॥
हमको असल वतन गया भुल जी ॥

भजन १३४.

आस २ आस मैनूं पिया वे मिलन दी ॥
फरीदा जे जाना मर वंजना मीठा बोली जग ।

ऐवें उमर गुवां लेई क्यों कुड़े लालच लग ॥ आश २
फरीदा रातां होईयां वडियां धुख २ उठन पास ।
धिग उनां दा जीवना जिनां पराई आस ॥ आस २
फरीदा ऐसा होजा जैसे कख मसीत पैरां तले लताड़िये
तेरी सांई नाल प्रीत ॥ आस २
फरीदा रूखी सूखी खाके ठंडा पानी पी ।
न देख पराई चोपड़ी ना रसाई जी ॥ आश २
फरीदा रोटी तेरी काठ की लावन तेरी भुख ।
जिनां खादियां चोपड़ियां वही सहेंगे दुख ॥ आस०
फरीदा एक दिन ऐसा आवसी तेरा जंगल होसिया वासा।
ऊपर तेरे हल वगन गऊवां चुगन घास ॥ आस २
उठ फरीदा सुतिया तेरी दाढ़ी आगया बूर ।
आगा आ गया नेड़ पिछा रह गया दूर ॥ आस २
उठ फरीदा सुतिया तेरे उते पै गये नी कख ।
उदरों कोई नहीं आवंदा इदरों चल गये नी लख ॥ आस२
कांगा कांग टंडोलियां मेरा सब चुन खायो मास ।
एक मेरे दो नैन नां छोड़िओ मैनूं पिया मिलनकी आस ॥

———

दोहा ।

चरण कमल श्री प्रभु के हृदय लऊं ध्याय ।
सिंचन करलूं प्रेम जल नैन नीर बहाय ॥

जगत बन्धु ज्योतिस्वरूप जिया की जाननहार ।
हरि जस मांगन आयो दास प्रभु के द्वार ॥

भजन १३५.

जी तेरे बिना कौन बंधाये मेरी धीर ॥
मात पिता ने सहायता न कीती कोल खलोते सके वीर ॥
मड़ीते मसानी और गुगा ते बीबड़ियां छडगये नी पीर फकीर ॥
चारों जो तरफे घेर जो घत लिया दुखां विच पंगया शरीर ॥
मुशकलां मेरियां फौरन काट दे आमिले सके वीर ॥
मेरी मेरी सब कहते चल गये आमीर फखीर ॥

भजन १३६.

क्यों पाप कमानाये वे गाफला सदा राज नहींयों रहना ।
क्यों पाप कमानाये वे मूर्खा सदा बैठ नहींयों रहना ॥
गोयल आयआ गोयली किया तिस डंब पसार ।

मुहलत पुनि चलना तु समल घर वहार ॥
हरि गुन गाये ले मना सत गुर से ही प्यार ॥
जैसे रहन पराहुने उठ चलसी परभात ।
क्या तु रता गृहस्थ से सव फुलों की वहार ॥
मेरी २ क्या करे तू जिंदियां सो प्रभु लोड़ ।
सर पर पुनि चलना छड जासी लख करोड़ ॥
वहुत दिनों से भरमदियां दुर्लभ जन्म पाया ।
नानक नाम समाल तू सो दिन नेड़े आया ॥

भजन १३७.

क्यों सोचां करनाएं तुं भजन विन औद बीत गई सारी ।
सोचै सोच न होवइ जो सोची लखवार ॥भजन०॥
चुपै चुप न होवई जो लाइ रहा लिवतार ॥भजन०॥
भुखियां भुख न उतरी जे वन्ना पुरीआं भार ॥भजन०॥
सहस सिआणपां लखहोइ त इक नचले नाल ॥ भजन० ॥
किव सचिआरा होइऐ किव कूड़े तुट्टै पाल ॥भजन०॥
हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल ॥ भजन० ॥

भजन १३८.

बिरथा ही जन्म गुवानियां प्रभु तेरे भजन बिना ।
रात दिना नित पाप कमावां सिर पापा दिया खारियां ।
मनुष्य जन्म आकारथ खोया जीती बाजी मैं हारियां ।
तू गुनां वाला सब गुन तेरे मैं निरगुन औगन हारियां ।
मुझ दासन नूं तार दया मैं तेरिया चरना तो बल हारियां ।
तू मेरे स्वामी प्रान है आधारे मैं दासन तुम्हारियां ।

दोहा ।

उठ फरीदा सुतियां मन का दीवा बाल ।
जागनगे सो लेवनगे साहब संदी दात ॥

सुता उठा क्या करे उठके ना जपे मुरार ।
एक दिन सोना होगा लम्बे गोड़ पसार ॥

सचा सौदा कीजिये साचा मनमें जान ।
सच हीरा पाइये सच ना कभी बिसारिये ॥

जे तु साच मानिया साची हाट लगा अन्दर झारू
फेर कर कूड़ा झूठा बहार ॥

साच आपन लगाईये सांचे काल ना खाईये ।
सचे को साच मिले सांचे मही समाईये ॥

भांवे लाये केश कर भांवे मुड़ भुनावे जाकी सांची सुरत है
ताका सांचा खेल । आठ पहर चौंसठ घड़ी साईं सेती मेल ॥

सच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप ॥

भजन १३९.

जग दो दिन का यह मेला है ।
सब चला चली का खेला जी ॥ जग० ॥
कोई चला गया कोई जायगा कोई गठरी बंध सिधारे जी ।
कोई खड़ा त्यार अकेला ॥ जग० ॥
कर पाप कपट छल मायाजी धन लख करोड़ कमाया जी ।

संग चले ना एक आधेला जी ॥ जग० ॥
तेरा मातपिता सुत भाई जी कोई अंत समये नहीं सहाईजी।
क्यों भरे पाप का ढेला जी ॥ जग० ॥
यह झूठा है सब संसारा जी कर जीवन सुफल प्यारा जी।
दासी कहे सुन मेरी बहिना साधन लेकरीं ना अब हेलाजी ॥

भजन १४०.

पायें किस प्रकार हम जगदीश दर्शन आपका।
कौनसी ज्योति से हो प्रकाश भगवन आपका ॥ १ ॥
चांद सूरज आपको प्रकाश कर सकते नहीं।
उनके हैं प्रकाश का, प्रकाश कारण आपका ॥ २ ॥
खींच लेता है यह सारे विश्व का चित्र मगर।
कर नहीं सकता कदापि मन भी चिन्तन आपका ॥ ३ ॥
आप इसकी तो पहुंच से ही परे हैं हे प्रभु।
हो सके क्यों कर भला वाणी से वर्णन आपका ॥ ४ ॥
जड़ जगत तक ही पहुंच कर रह गईं सब इन्द्रियां।
रूप क्या अनुभव करें यह शुद्ध चेतन आपका ॥ ५ ॥
हैं हमारी शक्तियां इस काम में बे अर्थ सब।
है अनुग्रह आपके दर्शन का साधन आपका ॥ ६ ॥

कर्म्म बल से हीन हूं मैं तप नहीं भक्ति नहीं ।
आ पड़ा किन्तु शरण है, मेरा तन मन आपका ॥ ७ ॥
कीजिये स्वीकार मुझको दीजिये दर्शन दिखा ।
आत्मा में हो मेरी अब प्रेम पूरण आपका ॥ ८ ॥
हृदय मंदिर खोल दे रौनक का है ज्योति स्वरूप ।
जिससे हो प्रकाश इस में दुख भंजन आपका ॥ ९ ॥

भजन १४१.

मैं भुल गईयां नी मैं भुल गईयां ।
प्रेम दी राह छड ओहजड़ पईयां ॥
ठण्डे ठण्डे वेले लंग गए राही ।
मैं उस वेले क्यों सुत्ती रहीयां ॥ १ ॥
खुदी दे वैले विच पैए भोंदी ।
दुःख ते शोक दी सूलां सहीयां ॥ २ ॥
इस धन कोलों सी निर्धन चंगी ।
काहनुं मैं माया दी छावें वहीयां ॥ ३ ॥
मन दी गल्लीं लग टुर पेईयां ।
विश्वासी दी मत्तां न लेईयां ॥ ४ ॥

तृतीय अध्याय ।

आराधना के भजन ।

मंत्र.

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म, आनन्दरुपममृतं यद्विभाति ।
शांतंशिवमद्वैतं, शुद्धमपापविद्धम् ॥

भजन १४२.

तूही प्रभु मेरा पूरण धन है ।
प्राण का प्राण तुही परमेश्वर, तुही मन का मन है ।
आंखों की ज्योति तुही प्रभु मेरी, कानों का तू श्रवण है ।
बुद्धि बल ज्ञान में तुमहिं बिराजो, तू सब का जीवन है ।
अन्तर बहार देश देशान्तर, तूंही परिपूरण है ।
सत्य तूही शिव सुन्दर तूही, तू एक मेवाद्वितीयं है ।
अधम उधारण पातकी तारण, तूही तुही तुहि तू है ।

भजन १४३.

सांची प्रीति हम तुम संग जोड़ी, तुम संग जोड़ अवर संग तोड़ी

जो तुम बादल तो हम मोरा, जो तुम चन्द्र हम भयेजी चकोरा
जो तुम दीवा तो हम बाती, जो तुम तीरथ तो हम यात्री
जहां जहां जाऊं तहां तेरी सेवा, तुम सा ठाकुर और न देवा
तुमरे भजन कटे भय फासा, भक्ति हेतु गावे रवि दासा

भजन १४४.

ठाकुर तव शरणाई आयो ॥

उतर गया मेरे मन का संशा, जब तेरा दर्शन पायो ।
अन बोलत मेरी व्यथा जानी, अपना नाम जपायो ॥
बांह पकड़ कढ़ लीने जन अपने, ग्रह अन्ध कूपते मायो ।
दुःख नाटे सुखं सहज समाये, आनन्द आनन्द गुण गाओ ॥
कहो नानक हरि बन्धन काटे, बिछड़त आन मिलायो ॥

भजन १४५.

तू मेरे प्राण अधारे, प्रभु जी तू मेरे प्राण अधारे ।
नमस्कार दंडवत बन्दना, अनेकबार जाऊं वारे ॥
उठत बैठत सोवत जागत, ये मन तुझही चितारे ।
सुख दुःख यह सब मन की वृथा, तुझही आगे सारे ॥
तूं मेरी ओट बल बुद्धी धन तुमही, तूं मेरे परवारे ।
जो तुम करो सोई भला हमरे, पेख पेख नानक चरणारे ॥

भजन १४६.

हे जग त्राता विश्व विधाता, हे सुख शान्ति निकेतन ॥
प्रेम के सिन्धु दीन के बन्धु, दुःख दरिद्र विनाशन ।
नित्य अखंड अनन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन ॥
जग आश्रय जगपति जगवन्दन, अनुपम अलख निरंजन ।
प्राण सखा त्रिभुवन प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन ॥

भजन १४७.

धन्य धन्य धर्म विधान विधाता ।
धन्य २ तुम धन्य शक्ति तुम्हारी ।
धन्य कृपा सिन्धु पितु माता ॥
तव शरणागत गहे कृपा निधि ।
पाप जीवन रहने नहीं पाता ॥
तुम को पाय अमर हो जावें ।
पुण्य जीवन के तुम प्रभु दाता ॥
किस मुखसे हम दया करें वर्णन ।
हम हैं तुच्छ तुम अपार विधाता ॥

भजन १४८.

हरि मेरो तुही एक आधार, तेरे लिये व्याकुल चित्त अनिवार ।

तेरे दर्श बिन प्रान प्रभु हे, दीखे सकल जग घोर अन्धार॥
तुझ बिन प्यारे नहीं कोई मेरा, पार करे जो भव संसार।
जहां जहां जाऊं दर्श तेरा पाऊं, प्रेम तेरा हरि अरपम्पार॥
प्राण सखा तुम सब सुख कारण, तृप्ति के हेतु कृपा अवतार
अमृत निकेतन मृत्यु भय भञ्जन, जीवन दाता प्राण आधार॥
सुंदर शुशोभन हृदय विमोहन, तन मन प्राण सब तुम परवार

भजन १४९.

धन सोवेला जित दर्शन करना, हों बलिहारी सतगुरचरना।
जीयां के दाते प्रीतम प्रभु मेरे, मन जीवे प्रभु नाम चितेरे॥
सच मन्त्र तुम्हारा अमृत बानी, शीतल पुरुष दृष्ट सुजानी॥
सचहुकम तुम्हारा तख्तनिवासी, आए न जाए मेरा प्रभुअविनाशी
तुम महबान दास हम दीना, नानक साहिब भरपूर लीना

भजन १५०.

मैं तेरा हूं तू मुझे दिल से न भूल॥
तुही गगन में तुही मैदान में तुही मूल का मूल।
तुही डार में तुही पात में तुही रंगीला फूल॥
पूर्व ढूंढया पश्चिम ढूंढया कहीं न मिल्या स्थूल।
कहत कबीर सुनो भाई साधो यही वचन का मूल॥

वहां किसकी मूर्ति वसे कि जहां वसा है तू ॥
दावा है जाहिरा तो बहुत का मेरे दिल पर ।
बातन में पर अय दिल के दिल निहां बसा है तू ॥
वदराही राह पासके किस राह से वहां ।
जिस दिल पै वन के आप ही दरबां बसा है तू ॥
आबाद हों न खूबियां क्यों खूब तरह वहां ।
जिस दिल में आप होके जांकी जां वसा है तू ॥
विश्वासी क्यों लगाता है दिल इस सराय में ।
क्या सूझता नहीं यहां महमां वसा है तू ॥

भजन १५६.

जड़ चेतन चर अचर जगत के ।
एक तूहीं सत कारण है ॥ १ ॥
परंम देव परमेश सरपती ।
सर्वलोक प्रति पालन है ॥ २ ॥
ज्योतिर्मय आनन्द रूप तुम ।
पवित्र आदि जग पावन है ॥ ३ ॥
पापी तापी के परित्राता ।
ज्ञाता और विभु तारण है ॥ ४ ॥

परम पिता जगदीश जगत गुरू ।
सकल जीव हित कारण है ॥ ५ ॥
नित्त निरञ्जन पुरुष सनातन ।
दुःख और विपद निवारण है ॥ ६ ॥

भजन १५७.

तेरी शरण अब आया (प्रभुजी)

कृपा निधान अनेक कृपा करि, बांह पकड़ मुझे लाया ।
ब्रह्म शक्ति दे तारा मुझ को, धन्य २ तेरी दाया ॥
शोक ताप दुःख गये सब मेरे, परमानन्द समाया ।
निश दिन धन्यवाद तब गाऊं, यही मेरे मन भाया ॥

भजन १५८.

आज मेरे साहिब आवेंगे, पल्कों से मैं डगर बहाऊंगी ।
करूंगी मैं तन की सेजा, जिगर तकिया लगाऊंगी ।
करूंगी मैं प्रेम की भठिया, बिरहों की मैं अग्नि जलाऊंगी ।
गले में डार के सेली, तन पै भभूत लगाऊंगी ।
गले में डार के अल्फी, पिया जी के देश जाऊंगी ।
करूंगी मैं भेप जोगन का, पिया जी को ढूंढ लियाऊंगी ।
मीरांबाई प्रेम की प्यासी, सुहागन तां सदाऊंगी ।

तोहे बिसराये अति दुःख पावें, तुमही सुख हो प्राणपती ॥
प्राण हृदय मोहे निजकर राखो, चिर सेवक जैसे नारी सती ॥
सतशिव सुन्दर तेरो भिखारी, मांगे न कछु बिन तव भक्ति ॥

भजन १६८.

मेरे मन हरि कृपाल दूसरा न कोई ॥
प्रेम की मथनियां माथी, भक्ति से बिलोई ।
दही मथ घृत काढ लियो, छाछ पिये कोई ॥
आंसू जल सींच सींच, प्रेम बेल बोई ।
सन्तन ढिग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ॥
मैं तो चली भक्त जान, जगत मोहे देत तान ।
आई प्रभु शरण तेरी, होनी हो सो होई ॥

भजन १६९.

प्रभू तू मेरा प्यारा है, तू मेरे दिल का नूर ।
अब तू ही एक सहारा है, अय मेरे दिल मंजूर ॥
जब पाप पिशाच के वशमें था, और खुदी से था मामूर ।
वह हालत तू न देख सका, अय मेरे दिल मंजूर ॥
मैं बेकस दुःखिया था लाचार, और होताथा मैं ख्वार ।
तब तू ने मुझे बचा लिया, अय मेरे दिल मंजूर ॥

बस अब प्रभु मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं जरूर।
और रहूंगा तेरी सेवा में, अय मेरे दिल मंज़ूर ॥

भजन १७०.

तुम ही ब्रह्म सनातन विश्वपति।
तुम ही आदि अनादि अनन्त गति ॥
तुम ही सत्य स्वरूप पुण्यमय हो।
तुम ही सकल जगत के आश्रय हो ॥
तुम ही सब सृष्टि के कारण हो।
भय शोक ताप दुःख हारन हो ॥
तुम ही मंगल मय मन मोहन हो।
तुम ही सुन्दर स्वरूप प्रलोभन हो ॥
तुम ही हे प्रभु विघ्न विनाशन हो।
हितकारी तुम ही निज दासन हो ॥
तुम ही करुणामय गुण सागर हो।
वही करुणा मुझ पापी पै करो ॥
खाह पाप से मरता भी हो कोई जन।
तेरी शरण लिये पाये नव जीवन ॥
भवसागर से बचने के लिये।

निज करुणा की नौका दीजिये ॥

भजन १७१.

जीवन संबल तुम्हीं, तुम्हीं एक प्राणाधार ।
तुम बिना दीन बन्धु, सब ही असार ॥
दैव सम्पद के हो तुम्हीं, एक मात्र मूल आधार ।
विश्वास, प्रेम, पवित्रता, आनन्द भाव के भण्डार ॥
आत्मा की जिन्दगी के, एक तुम्ही हो आहार ।
तुम्हें छोड़ आत्म नाश, जीवन का नाहीं निस्तार ।

भजन १७२.

कहां जाऊं किधर ढूंढूं नहीं कोइ ठिकाना है ।
तेरे बिन अय प्रभू मैंने नहीं दूजे को जाना है ॥
तूही खालिक तूही मालिक तूही अन्दर तूही बाहर ।
तूही आश्रय सब का यही मैंने पिछाना है ॥
तेरे बिन है नहीं कोई जो हो हर हाल में संगी ।
तुझे हरि छोड़ना क्या है गोया दोजख को पाना है ॥
गुनाह का जख्म है भारी इलाज इसका तूही तो है ।
हकीम हाज़िक तूही है इक तूही कामल सियाना है ।

भजन १७३.

आत्मा के प्राण हरि, जीवन के जीवन ।
मेरे तुम ही सबसे बड़े, प्रभु जी अवलम्बन ॥
मेरे भीतर तुम्हीं जब, प्रकाशो निरंजन ।
आत्मा पाय सुख और बल, हों क्लेश भंजन ॥
निराशा और दुःख विषाद, होवें सभी मोचन ।
आशा बल देओ ज्योति, देओ जब परमात्मन ॥

भजन १७४.

आज देवो प्रभू ऐसा दर्शन ।
जिस दर्शन से मृत हो प्राणी, नूतन पावे जीवन ।
नयन भरे तव मुख छवि देखे, होय विमोहित तन मन ।
प्रेम अजस्र धारा वहे भीतर, वह जांय पाप प्रलोभन ॥
भ्रम भय संशय विदा होंय सकले, गांय विमल दयाघन
भक्त हृदय में जैसे विराजो, वैसे प्रकाशो इस छन ॥

भजन १७५.

हरि दीनबन्धु दयाल जी, मेरे हृदय आय बसो ।
प्रभु पूरण ब्रह्म कृपाल जी, मेरे मन में आय बसो ॥
मन चाहे तव दर्श को, लोचे है बारम्बार ।

देओ दर्शन आ हरि, जन सकल प्राण अधार ॥
भूले फिरैं सब जगत में, सूझे न सार असार ।
जो न पकड़ो आय कर, किम होंय सागर पार ॥
तुझ बिना अंधार है जग, बिपद क्लेश अपार ।
हृदय उज्ज्वल कीजिये, मुख शोभा आय दिखाय ॥
तेरे दरपर आय के हरि, करें हाय पुकार ।
तुझ बिना हे प्राणपति, अब जांय किसके द्वार ॥

भजन १७६.

प्रभु हम आये तुम्हारे पास ।
भक्ति प्रीति भरो मन हमरे, और दीजिये विश्वास ॥
दीन मलीन हीनके गलसे, पाप की काटो फांस ।
दुर्बल दुःखी के तुम बिन स्वामी, जात वृथा हैं श्वास ॥
तुझ बिन कौन उतार सके है, जग का भय और त्रास ।
देओ अनाथको त्रिभुवन दाता, नित्य अपना सहवास ॥
हे परम दयामय नाम तेरेकी, चमके भूख और प्यास ।
मोहनी शक्ति से मोहकर हमको, करलो अपना दास ॥

भजन १७७.

आओ आओ आओ प्रभु, पातकी जन पावन ।
होय दयाल देवनाथ, पातकी को दर्शन ॥
देव शुद्ध ज्ञान मति, दूर करो सब कुमति ।
प्रेम भक्ति ज्ञान देव, यही है निवेदन ॥
देव पिता पुण्यबल, करो हृदय निरमल ।
सत्य साधन के लिये, उत्साह देव पूरन ॥
लिये तुम्हारी सत्य खड्ग, फिरें नाथ बेधड़क ।
करें तेरो यश प्रचार, छोड़ मोह प्रलोभन ॥
होवे तेरो धर्म्म प्रचार, भारत पावे उधार ।
जय ब्रह्म नाम से हां, ध्वनित विश्व भूवन ॥

भजन १७८.

तुम्हीं सत्य तुम्हीं चित्त, तुम्हीं ईश तुम्हीं महेश ।
तुम्हीं आदि तुम्हीं अनंत, तुम्ही अनादि तुम्हीं अशेष॥
जल स्थूल मरुत, व्योम, पशु मनुष्य देव लोक ।
तुम्हीं सब के सृजनकार, हृदया धार त्रिभुवनेश ॥
तुम्हीं एक तुम्हीं प्राण, तुम्हीं अनन्त सुख सो पान ।
तुम्हीं ज्ञान तुम्हीं प्रेम, तुम्हीं मोक्ष तुम्हीं महान ॥

भजन १७९.

आहा क्या अपरूप मनोहर तव मूर्ती ।
जोगी हृदय रञ्जन विषाद दुःख भञ्जन ॥
सुधामय शान्ति प्रद विमल विभाति ।
प्रेम सञ्चारन पुण्य प्रदर्शन ।
कलुष विनाशन कोकल कान्ती ॥

भजन १८०.

गगनमय थाल रविचन्द्र दीपकबने। तारका मण्डला जनक मोती। धूप मल्यान लो पवन चौरी करे। सकल बनराई फूलन्त ज्योति कैसी आर्ति होवे भो खण्डना तेरी। आर्ति होवे अनहद शब्द बाजतन भेरी। सहस तव नयन नना नयन है तोहे। को सहस मूर्तिनना एक तूही। सहस पद विमल नना एकपद गन्ध विन। सहस तव गन्ध है अनींयूं चलत मोही॥ सब में ज्योति ज्योति है सोई तिसके चावन सब में चानन होई। गुरू साखी ज्योत नित प्रगट होई। जो तिस भावे सो आर्ति होए॥ हरचरनन कमल मकरन्द लोभतम। नो इन दिनों मोहे आहे प्यासा। कृपा जल देओ नानक सारङ्गको। होए जाय तेरे नामवासा॥

भजन १८१.

मै हूं सखी ऐसे स्वामी की दासी,परिपूर्ण जग घट घट वासी
जहां तहां जब कभी मैं तिसे टेरूं,तब ही देखूं निकट निवासी
सकल विनाश शील लीला में, जो है अजर अमर अविनाशी
जाकी महिमा न जाय बखानी, सोई सखी जाने जो प्रेम प्यासी
मनबुद्धि चित जाका पार न पावें, सहजे ही जान लेह विश्वासी

भजन १८२.

बाहिर जिसका है सारा पसारा, वह ही भीतर देखन हारा ।
कोई ज़र्रा नहीं उससे खाली, तिस पर भी वह है सबसे न्यारा
पाया जाता है गर कोई चाहे, उसको प्रेम और भक्ति द्वारा
जो है जाहिर जहूर है उसी का, छुपकर बैठा है करता नज़ार ॥
उसको प्यारीहै मखलूक सारी,लेकिन वह भीहै भक्तोंको प्यारा
जो प्रभु है सुख और शान्तिनिकेतन, है वही जीवन लक्षहमारा

भजन १८३.

श्वास श्वास तुझे ध्यावें ॥ (हरि स्वामी मेरे)
अग्नि पवन जल मृत्यु दयामय, तेरे ही यश को गावें ॥
ऋषि मुनी जोगीजन सबही, तुझ में ही ध्यान लगावें ।

मेरी खता को माफ कर दीदार अपना दीजिये ॥
मिलता है ब्रह्मानन्द जिस के नाम लेने से सही ।
ऐसे प्रभु को छोड़ कर फिर कौन से हित कीजिये ॥

भजन १९०.

॥ दर्शन देओ प्रभु खोल किवाड़ ॥

पाप से अति पीड़ित होकर आया हूं मैं तेरे द्वार ।
दुनियां चाहे हजार सतावे, पाप से मैं नहीं करूं पियार ॥
कैसा ही बड़ा प्रलोभन आवे, युद्ध करने को रहूं तय्यार ।
नीचता सारी करो मेरी चूर्ण, जानू तुझको ही सत्य और सार ॥
अपनाहि सत्य प्रचार कराओ, मुखालिफ हो चाहे कुल संसार ।
पापकी रीत करो हरि चूर्ण, ब्रह्मराज हो जग विस्तार ॥

स्तोत्रम् ।

ओं नमस्ते सते ते जगत्कारणाय
नमस्ते चिते सर्व्व लोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय
नमोब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशं ।
त्वमेकं जगत्कर्त्तृपातृप्रहर्त्तृ
त्वमेकं परं निश्चलं निर्व्विकल्पम् ॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानां
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं
परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥
वयंत्वां स्मरामो वयन्त्वाम्भजामो
वयन्त्वां जगत्साक्षिरूप नमामः ।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥

तुम सत्स्वरूप और जगत् के कारण एवं ज्ञानस्वरूप और सब के आश्रय, तुम को नमस्कार, तुम मुक्तिदाता, अद्वितीय, नित्य और सर्वव्यापी ब्रह्म, तुम को नमस्कार। तुमहीं सब के आश्रयस्थान, तुमहीं केवल वरणीय, तुमहीं एक इस जगत के पालक और स्वप्रकाश, तुमहीं जगत

के सृष्टि स्थिति प्रलयकर्त्ता, तुमहीं सब से श्रेष्ठ निश्चल और द्विधाशून्य । तुमहीं सब भयों के भय और भयानकों के भयानक, तुमहीं प्राणियों की गति और पावनों के पावन, तुमहीं महोच्च पद सब के नियन्ता, श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ एवं रक्षकों के रक्षक । हम तुम को स्मरण करें, तुम जगत् के साक्षी, हम तुम को नमस्कार करें, सत्यस्वरूप, आश्रयस्वरूप, अवलम्बरहित, संसारसागर की तरणी, अद्वितीय ईश्वर के शरणापन्न हों ।

प्रार्थना ।

हे परमात्मन् ! मोहकृत पाप से मुक्त करके और दुर्मति से विरत रख, अपने नियमित धर्म्मपालन में हमें यत्नशील करो और श्रद्धा और प्रीतिपूर्वक रात दिन अपनी महिमा और परम मङ्गल स्वरूप के चिन्तन में उत्साह युक्त करो, जिस से धीरे २ तुम्हारे साथ नित्य सहवासजनित भूमानन्द लाभ करके कृतार्थ होसकें ।

असतोमा सद्गमय तमसोमा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा-ऽमृतंगमय। आविरावीर्म्म एधि। रुद्र यत्ते दक्षिणं मुखं तेन मां पाहि नित्यं।

असत्य से हम सब को सत्य की ओर ले जाओ। अन्धकार से हम सब को ज्योति की ओर ले जाओ मृत्यु से हम सब को अमृत की ओर ले जाओ। हे सत्य स्वरूप हमारे निकट प्रकाशित हो। दयामय तुम्हारी जो आपार करूना है तिस द्वारा हमारी सर्वदा रक्षा करो।



चतुर्थ अध्याय ।

प्रार्थना के भजन ।

भजन १९१.

तारो नाथ अपने गुण से, अधम नीच जनको ।
है एकमात्र करुणा तेरी, भव भय हरण को ॥
प्रेम हीन भक्ति हीन, साधन भजन से विहीन ।
है दया अपरम्पार तेरी, दुःखी की शरण को ॥
सन्तान तेरी कहते नाथ, लज्जा आती है मुझे ।
भ्रष्ट मन में पातकी के राखो, अपने चरण को ॥
नाही कोई धर्म्म शक्ति, जो सहाय होय मुक्ति ।
है दया तरुणी तेरी, भवसागर के तरण को ॥

भजन १९२.

ज्यों जानो त्यों तारो स्वामी, कुटिल कठोर मैं कपटी कामी ।
तूं समरथ शरण के योग्य है, तूं रख अपनी कलाधार स्वामी ।

जप तप नियम शौच और संयम, नहीं इन बिन छुटकारस्वामी।
गारत घोर अन्ध ते काढो, नानक नजर निहाल स्वामी।

भजन १९३.

केवल एक भरोसा तेरा, दीनानाथ तुही है मेरा।
उस फंदन से तुही छुड़ावे, और सभी जिससे नस जावें।
पाप ताप के फंदन तोड़ो, मुख हमरा अपनी ओर मोड़ो॥
तुम बिन और न कोई सहारा, भय दुःख संकट मोचनहारा।

भजन १९४.

प्राणपति लेओ सार हमारी, हरि लेओ सार हमारी।
अति बलहीन महा अज्ञानी, भक्ति बिहीन दुराचारी॥
दग्ध हृदय पापों से मेरा, देखे ओर तुम्हारी।
करुणाजल बरसाओ शीघ्र, शांति समुद्र अपारी॥
मोहबस तुझको छोड़ दयामय, भ्रष्ट हुआ अति भारी।
उल्लंघन कर नित आज्ञा तुमरी, दुर्मति चितमें धारी॥
मैं भिक्षुक तुमरी करुणा का हे ब्रह्मांड बिहारी।
अधम उधारण नाम तुम्हारो, दीनन के हितकारी॥
पापी जनों पर हे परमेश्वर, केवल कृपा तुम्हारी।

दीनदयाल प्रेम दो मोको, शरण पड़ा अब हारी ।
मुझ विश्वासी दास को दीजिये, निज भक्ति की वारी ॥

भजन १९८.

हृदय कमल में हरि करो विहार ॥
करुणा नैन से इस दीन को निहार ।
तुझ दर्शन बिन सब अन्धकार, दिखावो प्रसन्न मुख बारम्बार ।
हे मेरे स्वामी अन्तर्यामी, दर्शन प्यासा देवो निवार ।
हरलो तन मन प्राण जीवन को, करलो सकल अधिकार ॥

भजन १९९.

गुनाह के समुन्दर में हूं डूबा जाता ।
बचाओ प्रभु जी तुम हो तारन हारे ॥
दुःखी हूं मैं पापों से जाऊं किधर अब ।
नहीं कोई अपना सिवाये तुम्हारे ॥
तुम्हारी ही आशा जगत में है सब को ।
तुम्हीं रक्षा करते तुम्हीं हो सहारे ॥
तुम्हारे ही दर पर मैं आकर गिरा हूं ।
जहां आकर पड़ते भगत जन हैं सारे ॥

तुम्हारा ही दर्शन हूं चाहता हरी जी ।
करो आशा पूरी मेरे प्रान प्यारे ॥

भजन २००.

पिलाओ हरि वही प्रेम पियाला ॥
जिसको ईसूने सूली चढ़कर, दीना असल हवाला ।
जिसको पीकर मस्त हुआ था, चेतन नदियावाला ॥
पीकर जिसको मीरांबाई, पाया देश निकाला ।
देकर वही बिहिश्ती मदिरा, करो मोहे मतवाला ॥

ग़ज़ल २०१.

तू किबला मैं हूं किबलानुमा आर्जू मेरी ।
तू सूर्य हो मैं सूर्यमुखी आर्जू मेरी ॥
दुनिया मुझे फिराये मगर तू रहे मरकज ।
फिर फिरके मैं तुझको ही तकूं आर्जू मेरी ॥
मैं खुद कहीं रहूं व किसी काम में रहूं ।
चितवन मेरी तुझ पर ही रहे आर्जू मेरी ॥
मैं खुद नहीं रहूं न रहें ख्वाहिशें मेरी ।
अपने को तुझ में भूल सकूं आर्जू मेरी ।

गज़ल २०२.

हे कृपानाथ करो अपनी दया हम सब पर ।
पाप के बोझ से घोर व्यथा हम सब पर ॥
रात दिन फिक्र में दुनियां के फंसे रहते हैं ।
माया और मोहका है जाल बिछा हम सब पर ॥
सूझता है नहीं, फिरते हैं सदा अन्ध समान ।
सिर चढा रहता है गफ्लत का नशा हम सब पर ॥
दो हमें ज्ञान, करो दूर जहालत सारी ।
महिर के हाथ को दो अपने बढा हम सब पर ॥

भजन २०३.

एक विनय प्रभु सुनिये हमारी ॥
दुर्मत हमरी हरो प्रभु मेरे । पाप ताप देओ टारी ।
शुद्ध करो प्रभु तन मन हमरा । संकट काटो ये भारी ॥
हृदय कपाट करो उदघाटन । देखें ज्योति तुम्हारी ।
चरण शरण देवो दयामय । देखो विपद हमारी ॥
विषयन के प्रभु बन्धन काटो । सेन तिन्हां की हंकारी ।
अमृत नाम करो प्रभु अर्पण । गावें तव गुण चारी ॥
यह भवसागर दुस्तर भारी । तरुणी दया है तुम्हारी ।

दान देवो वर सामर्थ होवे । तुमरे आज्ञाकारी ॥
तव हरि प्रेम उपकार में हमरी । कटे अवध यह सारी ।
नाम पुनीत परिपूरण प्रभु जी । तन मन से बलिहारी ॥

भजन २०४.

अब किस पै जाय पुकारें, हरि प्राण आधारे ।
करुणा सागर तुम सुख आकर, पतित उद्धारण हारे ॥
तू जगपावन क्लेश नशावन, दीनन के ही पियारे ।
महा अपार अचिन्त्य अमीमा, करुणा सकल पसारे ॥
नित्य निरंजन भव भय भंजन, निर्मल रहित विकारे ।
विश्व निकेतन तूंही सनातन, धन्य प्रताप तुम्हारे ॥
मुक्ति के कारन पतित उद्धारन, जीवन के रखवारे ।
बांह पसारो पकर निकारो, नहीं तो डूबे हैं सारे ॥
निर्धन के धन एक तूही प्रभु, तूही उद्धारन हारे ।

भजन २०५.

मेरे दिलका का मालिक तुही हो तुही हो ।
तुही एक राहत तुही जिन्दगी हो ॥
मेरा जिस्म दुनिया में रहता कहीं हो ।
हो बीमार याके सलामत सही हो ॥

पर हरजा मेरी आंख तुझ से लगी हो ।
है तेरे बिन न दिलदार मेरा कोई हो ॥
हो गरमी या सरदी या बारिश झड़ी हो ।
हो पर्वत समन्दर या नाला नदी हो ॥
शहर हो या जंगल महल झोंपड़ी हो ।
लगन एक तुझ से ही मेरी लगी हो ॥
हो दौलत मेरे पास या मुफलसी हो ।
हो रखता कोई बैर या दोस्ती हो ॥
मिले उमदा खाना या फाकाकशी हो ।
तुझी एक में रूह मेरी रम रही हो ॥
हो इज्जत यहां याके बेइज्जती हो ।
खुशी हो मुसीबत या जांकन्दनी हो ॥
न तुज से मेरी बेवफाई कभी हो ।
वही हो खुदा जिसमें तेरी खुशी हो ॥

भजन २०६.

करुणामय दयासिंधु, दीनन के परम बन्धु ।
तापित चित्त देखो नाथ, शांति दान दीजिये ॥
तुम जगत के हो मूल आधार, तुम हो एक परम सार ।

पाप ताप से प्रभु, उद्धार हमारा कीजिये ॥
प्रेम सूत्र साथ विभु, हृदय सब के शुद्ध करो ।
सतचित आनन्दरूप प्रगट हमपे कीजिये ॥
हे दयाल दीनानाथ, राखो नित्य अपने साथ ।
सर्वव्यापी देख तुम को, पापों में न भीजिये ॥
हे अतर्यामी गुण निधान, भक्ति अपनी कीजे दान ।
सकल व्याधी छोड़, तेरा प्रेमरस पीजिये ॥
ध्यान नित्य तेरा धरे, जीवन सुफल अपना करे ।
परम मधुरमय नाम स्वामी, तेरा ले ले रीझिये ॥
पूजा हमारी ग्रहन करो, प्रेम हस्थ सिर पै धरो ।
पवित्र मुख से पिता, आशीर्वाद दीजिये ॥

भजन २०७.

मैं हूं दीन हीन प्रभु, मे भिखारी तेरा ।
तूं दयाल दीनानाथ, तूं है दाता मेरा ॥
खानपान वस्त्र दान, द्वारे तेरे पावां ।
प्रेममय विश्वास देओ, नाम तेरा गावां ॥
मैं हूं दीन तू दयाल, देख हाल मेरा ।
पाप ताप फांसमांह, आशरा है तेरा ॥

हे अनाथ नाथ मुझसे, भक्ति निज कराओ ।
सत्यधाम पहुंचने का, रास्ता दिखाओ ॥
मैं भिखारी तेरा स्वामी, सत्य भिक्षा पावां ।
ज्ञान भक्ति दान पाये, तुम से प्रीति लावां ॥

भजन २०८.

हे दयाल हे कृपाल दया दृष्टि फेरो ॥
पाप हरो ताप हरो, जड़ता और शोक हरो ।
सकल व्याधि दूर करो, त्राण करो मेरो ॥
देवज्ञान दिव्यज्ञान, देवप्रीति शुद्धप्रीति ।
देवनाथ सुख और शांति, भिक्षुक मैं तेरो ॥

भजन २०९.

आओ आओ प्राण सखा दीन जन शरण ।
करें मन प्राण हृदय तुम्हारे स्मर्पण ॥
तज अनित्य कामना छोड़ विषय वासना ।
होके अनुगत एक तेरे रहें नाथ चिर दिन ॥
सदा तुम्हारे संग रहें प्रेम से नित नेत्र वहें ।
भगति पुष्प अञ्जली दिये पूजें तुम्हें निशदिन ॥

भजन २१०.

मुझे दास चरणों का अपने बनाओ ।
छवि सुन्दर मुखड़े की अपने दिखाओ ॥
कोई फानी शय हो न दिलदार मेरी ।
मुझे नाथ अपना ही शैदा बनाओ ॥
हो तुझ से मेरा रिश्ता गहरा दिनोदिन ।
प्रभु प्रेम की अपने धारा बहाओ ॥
बढाओ मेरी अपने चरणों से उल्फत ।
तुम्हीं नीच भावों से मुझ को बचाओ ॥
प्रभु मुझ को अपनी दया के मुकाबल ।
मेरी नीचता को दिखा कर रुलाओ ॥

भजन २११.

रंग डालो पिया मोहे निज रंग में ।
मल २ धोओ स्वार्थ मैल सब, रङ्गो सर बोर प्रेम रङ्ग में ।
दूर करो यह दोरंगी सारी, रंग दो एक पुण्य रंग में ॥
करके निर्मल जीवन मेरा, डुबो दो मोको देव रंग में ।

भजन २१२.

अब मैं कौन उपाय करूं ।
जिस विध मनको संशय चूके, भौ निधि पार परूं ।
जन्मपाय कछु भला न कीना, ताते अधिक डरूं ॥
गुरु मत सुन कछु ज्ञान न उपजा पशुवत उदर भरूं ।
कहो नानक प्रभु विरद पिछानो, तब हूं पतित तरूं ॥

भजन २१३.

व्याकुल नैन मेरे, मुख शोभा देओ जी दिखाय ।
तव छवि देख मोहित हुए ईसा, दीनी जान गंवाय ॥
देख दर्श बौरे हुए चेतन, दीना आप भुलाय ।
दीन दयाल मधुर मुख अपना, मोसे न राखो छुपाय ॥
दीखत जगत असार प्रभु मोहे, देखत जिया डराय ।
निश दिन रहत दर्श की आशा, अब प्यासा कहां जाय ॥
दीनानाथ चरण तव पकड़े, मेरी बेड़ी पार लंघाय ।
यह विश्वासी दास तव प्रभू जी, कीजे आप सहाय ॥

भजन २१४.

प्रेम की रौ करदो प्रभु जारी ।
जिस रौ में हम बावरे होकर, नाचें तुम पर हो बलिहारी ॥

स्वार्थ मैल सब दूर हो जिस से, कुल जीवन हो मंगलकारी ।
प्रेम और मंगल में ढलें हृदय, सुन्दर हों खो अपनत सारी ॥
पाप अधर्म से घृणा उपजे, पुण्य और प्रेमकी बरसे बारी ।
अमृत से भरपूर हो जीवन, आओ तुम्हीं हे हृदय बिहारी ॥
जीवन के हर कार्य्य में प्रभु, तुमरी ही सेवा लागे पियारी ।
ऐसी ही स्वर्गीय धारा बहा दो, जिससे त्राण पावें नरनारी ॥

भजन २१५.

प्रबल संसार स्रोत हम हैं दुर्बल अति ।
कैसे करेंगे नाथ प्रतिकूल हम गति ॥
जिस ओर स्रोत बहे उसी ओर जात बहे ।
सामने है नर्क भंवर होगी अब क्या गति ॥
दुर्बल के तुम्हीं बल, देओ नाथ धर्म बल ।
संसार प्रबल धार से निस्तार करो जगपति ॥

भजन २१६.

प्राण हरि हे प्राण हरि हे ।
और विलम्ब न लाओ प्यारे, हर ले जाओ मन प्राण अभी हे
विपय विलास अब तनिक न भावत,
चिन्ता असार हृदय मन जारत ।

तुम बिन नाथ रहूं न कभी हे, प्राण हरि हे प्राण हरि हे ।
तुमरा धन प्रभू तुम्हीं राखो, मैं न रहूं हरी तुम प्रकाशो ।
चिन्ता बचन और कार्य्य सभी में, प्राण हरि हे प्राण हरि हे ।

भजन २१७.

लेचलो जहां प्रेम तुम्हारा

खुदी की जहां बू नहीं आवे, अमृत की जहां बह रही धारा ।
नानक ईसा जहां नृत्य हैं करते, चेतन फिरे जहां हो मतवारा ।
जहां पर जाकर मुहम्मद पारकर, गाते हैं एक नाम तुम्हारा ।
मीरांबाई जहां फिरे है दीवानी, नाचता है जहां केशव प्यारा
राम मोहन जहां मस्त खड़ा है, देख हुस्न का तेरे चमकारा ।
ब्रह्मज्ञानी की अब यही अभिलाषा,सेवा तेरीमें कटे जीवनसारा ।

भजन प्रतिज्ञा २१८.

प्रभु तुम्हारे चरणों में सब कुछ अर्पन करता हूं ।
क्या तन क्या मन सज्जन प्रान धन, सब कुछ आगे धरता हूं
पापी के उधार हित में, आत्म समर्पण करता हूं ।
तुझ को लेकर प्रान प्यारे, और सभी कुछ देता हूं ।।
करो ग्रहन सेवा में मुझको, भारत का उद्धार करो ।
प्रति दिन कर मुझ को कुरबानी, नर नारी का पाप हरो ।।

भजन २१८.

भले बुरे सब तेरे ठाकुर (भले बुरे सब तेरे)
हमरी कुल की लाज बड़ाई, बिनती सुनों प्रभु मेरे।
सब तज तव शरणागत आयो, दृढ़ कर चरन गहेरे ॥
तब प्रसाद हम विदित न काहो, निडर बहे घर घेरे।
सूरदास प्रभु तेरी कृपा से, पाए सुख घनेरे ॥

भजन २२०.

प्रभुके संग मैं क्यों न गई री ॥
प्रभुके संग जाती सोना बन आती, अब माटी के मोल भयीरी
जो प्रभु हैं मेरे प्राण अधारे, तिनको क्यों ना शरन गईरी
प्रानके प्रानको छोड़ सखी री, मैं मायाके जालमें उल्झरहीरी
सारको छोड़ असार से लिपटी, धिग धिग मैं मत मन्द भयीरी
प्रभु मेरे स्वामी मैं दासी प्रभुकी, स्वामी न भूले मैं भूल रहीरी

भजन २२१.

कौन गुन प्रान पति मिलूं मेरी माई।
रूपहीन बुद्धि बल हीनी, मोह परदेशन दूर से आई।

नाहीं दरब न जोबन माती, मोह अनाथ की करो समाई।
खोजत खोजत भई वैरागन, प्रभु दर्शन को हूं फिरत तिसाई।
दीन दयाल कृपाल प्रभु नानक, साधु संग मेरी जलन बुझाई

भजन २२२.

दया करो प्रभु अंतरयामी, महा मलीन मैं कापट कामी॥
मानुष जनम दियो तुम उत्तम, और कियो सुख संपद धामी
तदपि त्याग तव नाम दयामय, रहूं सदा विषयन अनुगामी
पाप तापसे भयो अति पीड़ित, अब मेरी पीड़ थमत नहिं थामी
होय हताश निराश जगतमे, आयो शरण तुम्हारी स्वामी

भजन २२३.

हृदय रमण प्राणनाथ, दीनेश्वर जगन्नाथ ।
भगतनके रहो साथ, दीनन हितकारी॥
काटो मम मोहफांस, करो क्लेश सब विनाश ।
पूर्ण करो मेरी आश, दुःख विपद हारी॥
करूं सदा तुम से प्रीति, विषयन से हो अतीति ॥
नित नित तव गाऊं गीत, शरणले तुम्हारी ॥
जपूं नित्य तेरो नाम, त्यागूं सब मलीन काम ।
जाऊं नाथ तेरे धाम, होकर बलिहारी ॥

भजन २२४.

आशिर्वाद करो मेरे प्रभु जी, आशिर्वाद करो ।
अति मलीन दुःखी अति पापी, हृदय जात जरो ॥
जगत वासना अरु विषयन में, चित मम रहत धरो ।
कबहुं न छोड़ असत चिन्ता को, सत संकल्प करो ॥
छल बल मिथ्या को कर आश्रय, पाप को कोश भरो ।
होय अंध मैं जग वैभव से, अतिशय नेह करो ॥
शेषकाल कोई देख न साथी, तव चरनन आय पड़ो ।
करुणामय परित्राण प्रदाता, मेरी व्याधि हरो ॥

भजन २२५.

पिता तुम पतित उद्धारनहार ।
दीन शरण कङ्गाल के स्वामी, दुःख के मोचनहार ॥
जग के मोह जाल में फंसकर, देखें न सार असार ।
सत्य ज्ञान बिन अन्धसम डोलें, करें असत आचार ॥
पाप प्रवाह भयंकर जल में, डूबत हैं मंजधार ।
तुमरी दया बिन को समरथ, करे दीनन को पार ॥

भजन २२६.

हे प्रभु त्राता मंगलदाता, दुख हरता सुखकारी ॥
शीघ्र निकालो असत मार्ग से, जग के सब नरनारी ।
सत्पथ में नित करो अग्रसर, भ्रांति हरो यह सारी ॥
मुक्त करो प्रभु अन्धकार से, देखें ज्योति तुम्हारी ।
मृत्यु हरो अमृत वर देओ, हे दीनन हितकारी ।

भजन २२७.

आदि देव यह विनय हमारी, हरो दुख दीनन सुखकारी ॥
तुमहीं हमारे प्राण हो स्वामी, तुमहीं हो हितकारी ।
तुम्हीं हमारे परम पिता हो, तुम्हीं मङ्गलकारी; करें किससे जाय
पुकारी हम तुम्हरी भक्ति के प्यासे, आशा करें तुम्हारी ।
निजसेवक और पुत्र जानके, तृप्ति कीजे हमारी, मिटे व्याकुलता
काम अरु क्रोध लोभकी फांसी, मोह बंधनके भारी ॥ [सारी ॥
तुम्हरे विना नाथ को काटे, बने कौन हितकारी; हरे यह विपद
इस दुनियां के सुख हैं ऐसे, नीर होय जैसे खारी ॥ [हमारी
प्रेम ही केवल अमृत जल है, दे शांति अति प्यारी;—
मिटावे तृष्णा सारी ॥

भजन २२८.

प्रभु जी देओ दर्शन दीननको, हम सब दर्शन के प्यासे ॥
और न भूख प्यास रही कछु, तव दर्शन मदमाते ।
होय आनन्द टूटे सब बन्धन, दर्शन मिलें पिता के ॥

भजन २२९.

कैसे पायेंगे तुम्हें, हम हैं पाप से मलीन ॥
लोभ में फंस्यो है चित्त, भोग इच्छाके अधीन ।
साधन भजन में आलस, षट रिपुने कियो बस ।
विषयहि के एक दास, हो रहे हैं रात दिन ॥
हिंसा द्वेष अभिमान, स्वार्थ सुख प्रलोभन ।
कियो जीवन कलंकित, प्रेम भक्ति से विहीन ॥
नहीं विश्वास नहीं ज्ञान, नहीं वैराग्य नहीं ध्यान ।
मोह से मन है मलीन है पाषाण सम कठिन ।
अब यही अभिलाष, होंय तव दासां दास ।
काटें यह जीवन प्रभु, सदा तुम्हारे अधीन ॥

भजन २३०.

शरण तेरी आयो जी, दीजे प्रभु प्रेम ॥
दीजे प्रेम, शरण तेरी आयो, तुझसे ही ध्यान लगायो ।

प्रेम बिना प्रभु अन्ध सम डोलूं, माया ने भ्रमायो (जी)।।
मलीन वासना छूटत नाहीं, वृथा जन्म गंवायो।
हार पड़ो शरणा अब तेरी, तेरो ही दास कहायो (जी)।।
मोको तो अब प्राण पियारे, तुम बिन कछु न भायो।
देओ दिखाय माधुरी मूर्त, तुम संग नेह लगायो (जी)।।
यह विश्वासी भिखारी भूखा, तव चरणन चित लायो।
दीन जान प्रभू दर्शन दीजिये, नहीं तो जात ठगायो (जी)।।

प्रभात उठ कर २३१.

पिछली रात बितायकर, सुखके सहित महेश।
तव प्रसाद अब करत हूं, नूतन दिवस प्रवेश।।
कृपा सहित रक्षा करो, हे अनाथ के नाथ।
व्रत राख सब पाप से, रखियो अपने साथ।।
बलबुद्धी ऐसी दीजियो, हे स्वामिन महाराज।
काया मन और वाक से, करूं तेरे प्रिय काज।।

रात को सोते समय २३२.

रोग विपद और पाप से, रक्षित हूं मैं आज।
धन्यवाद तुमको करूं, हे स्वामिन् महाराज।।
अन्न वस्त्र मोको दिओ, दिओ धर्म और ज्ञान।

नाना विधि रक्षा करी, सब सुख कियो विधान ॥
दुर्बलता बश तदपि मैं, करे सकल जे काम ।
तिनसे करो उधार मम मिटे सकल भयताप ॥
पूर्ण हृदय बिनीत हूं, मैं प्रभु बिनवों तोहे ।
दिन २ पुण्य सुमार्ग में, करो अग्रसर मोहे ॥

भजन २३३.

बिसर गई सब तात पराई, जब से साधु संगत पाई ।
नहीं कोई बैरी नाहीं बिगाना, सकल संग हमरी बन आई॥
जो प्रभु कीनों सो भला कर मान्यो, यह सम्मति साधुते पाई।
सब में रम रहा है प्रभु एको, पेख २ नानक बिगसाई ॥

भजन २३४.

हरि जी राखलो पत मोरी ।
यमको त्रास भयो मम अन्तर, शरण गहे कृपानिध तेरी ॥
महा पतित मुग्ध पापी, पुन करत पाप अब हारा ।
भय मरने को बिसरत नाहीं, तेहें चिंता तन जारा ॥
किये उपाव मुक्ति के कारण, दह दिश को उठ धाया ।

घटहीं भीतर बसे निरन्तर, ताको मर्म न पाया ॥
नाहीं गुण नाहीं कछु जपतप, कौन करम अब कीजे ।
नानक हार पड़यो शरणागत, अभय दान प्रभु दीजे ॥

भजन २३४.

दीननाथ दीनबन्धु, करुणानिधि प्रेम सिन्धु ।
सर्व आनन्द पूर्ण ब्रह्म, मेरी ओर हेरो हे ॥
मेरो गति तेरो हाथ, कृपा करो विश्वनाथ ।
हूं अनाथ गहो हाथ, जानो मोहे चेरो हे ॥
जानूं नहीं भक्ति भाव, योग ज्ञान तप उपाव ।
नहीं वैराग्य प्रेम ध्यान, एक शरण तेरो हे ॥
मेरो मति अति मलीन, सर्व प्रकार हूं मैं दीन ।
साहेब तुम, मैं अधीन, बिनय कर जोड़ हे ॥
पापी अघरूप मूल, सर्व प्रकार असुर तुल्य ।
कृपा करो मो पै भूल, मेटो दुःख मेरो हे ॥

ग़ज़ल २३५.

बस अब मेरे दिल में बसा एक तू है ।
मेरे दिलका अब दिलरुबा एक तू है ॥
फ़क़त तेरे क़दमों से ऐ मेरे खालिक ।

लगा अब मेरा ध्यान शामओ सुबहु है ॥
बस अब दिल तो तुझसे ही पाता है तसकीं ।
बसी मग़ज़ में प्रेम की तेरे बू है ॥
समझते हैं यूं मुझको अक्सर दिवाना ।
तेरा ज़िक्र विरदे ज़बां कूबकू है ॥
नहीं मुझको दुनिया की खुशबू से उलफत ।
तेरा प्रेम ही अब मेरा मुश्क ओ बू है ॥
रंगूं प्रेम से तेरे दिलका यह चोला ।
जिसे ज्ञान से अब किया कुछ रफ़ू है ॥
न पाला पड़े नफ्से शैतान से मुझको ।
तेरे दास की अब यही आर्ज़ू है ॥
न विश्वासी ढूंढो वसीला कोई अब ।
सभी का सहारा वही एक प्रभु है ॥

भजन २३६.

मैं गुलाम मैं गुलाम मैं गुलाम तेरा ।
तू दिवान तू दिवान तू दिवान मेरा ॥
एक रोटी और लंगोटी द्वारे तेरे पावां ।
भक्ति भाव देह अरोग्य नाम तेरा गावां ॥

तू दिवान मेहरबान नाम तेरा मीरां ।
अबकी बार दे दीदार मिहर कर फकीरां ॥
तू दिवान मिहरबान नाम तेरा वारया ।
दास कबीर शरण आयो चरण लाग तारया ॥

भजन २३६.

जब से शरण लई प्रभु तेरी ॥
पाप कार्य्य से घृणा बाढ़ी, चिंता विषय गई सब मेरी ।
क्लेश विकार गए सब मन के, बजी हृदय में आनन्द भेरी॥
मलीन वासना विषवत भाशें, तृष्णा भई विदा बिन देरी ।
उदय भयो उत्साह नित्य नव, सुख और शांति भई दो चेरी ॥
सत्य अग्नि हृदय में दहकी, जली सकल पापन की ढेरी ।
नूतन जन्म मिल्यो मोहि छिनमें, जब टुक नज़र प्रभू तुमफेरी॥

भजन २३८.

मन तन तेरा धन भी तेरा, तू स्वामी ठाकुर प्रभु मेरा ।
जीव पिण्ड सब रास तुम्हारी, तेरा जोर गोपाला जी ॥
सदा २ तू है सुखदाई, नियों नियों लागां तेरी पाई ।
कार कमावां जे तुध भावे, जा तू दे दयाला जी ॥
प्रभु तुमेत लीना तूं मेरा गहना, जो तूं दे सो सुख सहना ।

जिथे रखे बैकुण्ठ तिथाई, तू सबनां के प्रतिपाला जी ॥
सिमर २ नानक सुख पाया, आठ पहर तेरे गुण गाया ।
सकल मनोरथ पूरे होए, कदे न होय दुखाला जी ॥

भजन २३९.

क्या सूक्ष्म और क्या स्थूल यह सारा पसारा प्रेम का है ।
इधर उधर और यहां वहां जो कुछ है नज़ारा प्रेम का है ॥
वृक्षलता फल फूल की शोभा पशू और पक्षिगणोंकीलीला ।
नदी पहाड़ और समुद्र की रचना खेल यह सारा प्रेमकाहै॥
तारागणोंकासुनहरीमण्डलनिर्मलआकाश और यादलबादल।
शीतल चन्द्र उत्तेचित सूर्य का उज्यारा प्रेमका है ॥
मांकी ममता स्नेह पिताका सहायता मित्र और बन्धुगणोंकी।
स्त्री स्वामी भ्राता भगनी रिश्ता जो है प्यारा प्रेमका है ॥
ज्ञान और भक्तिहैंजहांपहुंचातेध्यान और योगजोकुछहैंसुझाते
विश्वासी जिस राह से जाते हैं वह द्वारा प्रेम का है ॥

भजन २४०.

तुम को ही मैं चाहूं ।
आशीर्वाद करो मेरे प्रभु जी ॥
मैं प्राणी और तुम मेरे प्राण, तुमही धर्म्म जीवन की जान।

तुमही रूहकी खान और पान, तुम में ही तृप्ति पाऊं ॥
रोग शोक का जब हो फेरा, या इफलास का छाय अन्धेरा।
तुम पर ही हो भरोसा मेरा, तुमरे ही दर जाऊं ॥
मोह के जाल विषय के नशे में, मान बड़ाई फिर आपकड़े ।
हिंसा द्वेष के भाव या भड़कें, तुमरी ओट मैं जाऊं ॥
तुमरी सेवा के काम में जाके, कारोबार में निज को लगाके ।
विघ्न बाधा या सहायता पाके, तुमको कभी न भुलाऊं ॥
तुम में मेरा सदा हो वास, तुम पर ही हो मेरी आस ।
तुम स्वामी मैं तुमरा दास, तुमरी ही जय जय गाऊं ॥

भजन २४१.

अब मेरी बेड़ी पार लंघा ।
मुझ बेकस का तू मल्लाह । (टेक)
जितवल देखूं तूही नज़र आवे ।
हारा तेरी ही शरण पड़ा ॥ १ ॥
शरण पड़े की अब प्रभु राखो ॥ १ ॥
दीनाबन्धु नाम तेरा ॥ २ ॥
बहा जात हूं भवसागर में ।
जैसे बने अब आय बचा ॥ ३ ॥

पापों के भंवर में भरमत डोलूं ।
प्रेम का झोंका एक चला ॥ ४ ॥
विश्वासी तव दर्श का भूखा ।
तेरा दर छोड़ कहां अब जा ॥ ५ ॥

भजन २४२.

तुम मेरे स्वामी हो मैं हूं दासी ।
तुम हो प्रेम मैं प्रेम पियासी । (टेक)
तव चरणन चित्त सदा आनन्दित ।
तुम से हो बेमुख रहूं उदासी ॥ १ ॥
मेरे तो सब कुछ तुम ही हो प्रीतम ।
तीर्थ यात्रा काबा ओ काशी ॥ २ ॥
तुम से दूर मृत्यु समभासे ।
जीवन तुम्हरे निवासी ॥ ३ ॥
बेमुख रहूं तो नज़र न आवो ।
पाया तुम्हें बनकर विश्वासी ॥ ४ ॥

भजन २४३.

अब मेरो तू ही एक ।
दीना बन्धु दीनानाथ ॥ (टेक)
दीनानाथ दीना बन्धू ।
प्रेम सागर दया सिन्धु ।
काटो मोरे पाप फन्धो ।
मोरी लज्जा तोरे हाथ ॥ १ ॥
अब मोहे प्रेम देओ ।
नाथ खबर आय लेवो ।
निज चरण शरण देओ ।
आप ही बनो मेरे तात ॥ २ ॥
जग के सहारे टूटे ।
झूठे नाते सारे छूटे ।
देख भाले सभी झूठे ।
तुही पितु तूही मात ॥ ३ ॥
तेरो गुण नित गाऊं ।
नित नव प्रेम पाऊं ।
तब सेवा में चित्त लगाऊं ।
मोहे प्रभु राखो साथ ॥ ४ ॥

भजन २४४.

मैं तां तेरी प्रेम दिवानी हां ।
कमल्यां वांग लोक हसानियां ॥ (टेक)
मैंनूं तेरीई एक लोड़ है ।
दूज्यां नाल तोड़ न जोड़ है ।
मेरा तां तूंई सिरताज है ।
मैं तां बन्दी तेरी कहानीयां ॥ १ ॥
मैंनूं पुछदे लोक तेरा पता ।
मैं हुण की बतावां तूही बता ।
मैंनूं नज़र होर न आउंदा ।
तूंई दिसदा जित्थे मैं जानीयां ॥ २ ॥
मैंनूं साधन भजन सी भूल गया ।
तेरा प्रेम जद मैथों डुल गया ।
हुण भर प्याला चा फिर दित्ता ।
मैं तां तेरे ही गुण गानियां ॥ ३ ॥
मैं तां दाना नहीं नादान हां ।
ज्ञानी भी नहीं अज्ञान हां ।
मैं तां राह पई विश्वास दे ।
ऐसे राह टुरदी मैं जानियां ॥ ४ ॥

भजन २४५.

मैं उस प्रीतम के बलिहारी ।
निश दिन दे जो प्रेम की बारी ॥ (टेक)
मैं जब थी अति भोली भाली ।
फिर जब भई अति कुटल कुचाली ।
प्रेम को पा अब समझी मैं आली ।
कबहुं न प्रीतम ने मैं बिसारी ॥ १ ॥
मैं जब लिप्त थी दुनियां ही में ।
थी न प्रीतम से मिलने की जी में ।
एक दिन सखियों के संग गई मैं ।
देखा मैं भी हूं प्रीतम को प्यारी ॥ २ ॥
सब ही गुण औगुण जो जाने ।
प्रेमिक साधु असाधु पिछाने ।
जिस को विरला ही कोई मिल जाने ।
मैं हूं उस के ही दर की भिखारी ॥ ३ ॥
जिस के कितने ही दास और दासी ।
सेवक साधु भक्त विश्वासी ।
हैं सब दर्शन के अभिलाषी ।
पर हैं वो प्रभु हृदय विहारी ॥ ४ ॥

भजन २४६.

सत शिव सुन्दर रूप तुम्हारा ।

जहां २ प्रगटे तहां उजियारा ॥ १ ॥

तुम्हारे ही सौन्दर्य्य से सब प्रगटे ।

सूर्य्य चन्द्र और अगणित तारा ॥ २ ॥

नदी पहाड़ समुद्र अरु भूमि ।

तुम्हारा ही है यह सकल पासारा ॥ ३ ॥

पुष्प लता फल और फुलवारी ।

फूलें फलें पा तेरा सहारा ॥ ४ ॥

भक्त हृदय में तुम्हीं विराजो ।

अपनी प्रेम शक्ति के द्वारा ॥ ५ ॥

विश्वासी भज नित मंगल मये ।

जाके स्मरण हो निस्तारा ॥ ६ ॥

भजन २४७.

पूर्ण शान्ती दाता हो तुम ही ।

धर्म विधान विधाता हो तुम ही ॥ १ ॥

शरणागत की गति एक तुम हो ।

असहाय के सहायता ही तुम ही ॥ २ ॥

पुनय जीवन संचारक तुम हो ।
पापियों के परित्राता हो तुम ही ॥ ३ ॥
आनन्द प्रेम के भंडार तुम हो ।
प्रेम आनन्द मय माता हो तुम ही ॥ ४ ॥
विश्वास पात्र हो एकमात्र तुम ही ।
धर्म जीवन के दाता हो तुम ही ॥ ५ ॥
विश्वापति विश्वम्भर तुम हो ।
विश्वा के धर्ता संहाता हो तुम ही ॥ ६ ॥
विश्वासी के पूज्य तुम ही हो ।
ज्ञानी के हृदय ज्ञाता हो तुम ही ॥ ७ ॥

गजल २४८.

या रब तेरी हज़ूर में यह है दुआ हमारी ।
हों ब्रह्मराज के वासी भारत के नर ओ नारी ॥ १ ॥
रोशन दिनों दिन होकर फैले यह हर सिमत में ।
भारत में जो सुलगाई ब्रह्मअग्नी की चिनगारी ॥ २ ॥
पापों से होवे नफ़रत उल्फ़त हो शुभ गुणों से ।
आवें नज़र हर इक सु तुझ ब्रह्म के पुजारी ॥ ३ ॥
दिल का लगाउ जब तक है आसार बन्धनों से ।

नहीं आत्मा में प्रीति तुझ सार से हमारी ॥ ४ ॥
गावें जो गुण तो तेरे, करें हमदोसना तो तेरी ।
ऐसा ही किबरया है तु ऐ जनावबारी ॥ ५ ॥

भजन २४९.

प्रभु मैंने अब पग पकड़े तिहारे (टेक)
प्रेम राज का बासी बनाओ ।
हे प्रभु प्रीतम प्यारे ॥ १ ॥
तेरे ही चरणों की शरण लीन अब ।
छोड़े सब ही सहारे ॥ २ ॥
तेरे ही दर की करूं गदाई ।
यही मांगूं हरवारे ॥ ३ ॥
पाप प्रवाह से निकालो मुझ को ।
हे प्रभु तारन हारे ॥ ४ ॥
मोह माया ने मोहे आन दबाया ।
मोपै तो टरत न टारे ॥ ५ ॥
यह विश्वासी दास प्रभु तेरो ।
तुम बिन कौन निवारे ॥ ६ ॥

भजन २५०.

अब पग पकड़ो परम पिता के (टेक)
पापी जीवन सफल हो जावे ।
चरण शरण मे जाके ॥ १ ॥
नाम का अमृत प्रेम मे पीओ ।
क्या लेओ जग में लुभा के ॥ २ ॥
प्रेम के रङ्ग से रङ्गो हृदय ।
तज वाद विवाद यहां के ॥ ३ ॥
निर्मल करो हृदय को जल ।
जग तृष्णा फूंस हटा के ॥ ४ ॥
देखो मनोहर मूर्ति हरी की ।
मधुर प्रेम रस पाके ॥ ५ ॥
विश्वासी अब प्रेम कमावो ।
हर चरणन चित्त लाके ॥ ६ ॥

भजन २५१.

विनय मेरी सुनो प्रभू जो मैं तेरे को सुनाती हूं ।
तुम्हारे चांद से मुख पै चकोरी होना चाहती हूं ॥
कमल जो नीर बिन सूके पपीहा बिन मेघों के ।

जल बिन मीन नहीं जाती मैं ऐसी गति चाहती हूं ॥
पतंगा जैसे दीपक को मृग चाहे है रागों को ।
तेरे भक्तों से गुण तोरे मैं हर दम सुनने चाहती हूं ॥
करो निज दासी पै दया तेरे गुनों को नित गावे ।
नहीं रहे और की बांच्छा तोरा ही दर्श चाहती हूं ॥
विनय मेरी सुनो प्रभू जो मैं तोरे को सुनाती हूं ।

भजन २५२.

भगवन् गिरे पड़े हैं अब तो उठा लो हमको ।
करके दया हृदय में अपने लगालो हमको ॥
सन्तान यह तिहारी अति कष्ट सह रही है ।
अवतीर्ण होके फिर से इन से बचा दे हमको ॥
जिस भूमि पर अनेकों लीलायें तुमने की थीं ।
उस आर्य्य भूमि पर फिर उन्नति दिलादे हमको ॥
तेरे सिवा प्रभु अब किस की शरण में जाऊं ।
अपने बचन अनूपम गिरवर सुनादे हमको ॥
अज्ञान तम में फंस कर जग में भटक रहे हैं ।
वह ज्योति ज्ञान की फिर से दिखा दे हमको ॥

आरती २५६.

जय देव जयदेव, जयत्रिभुवन कर्त्ता, जय त्रिभुवन कर्त्ता ।
सबके आश्रयदाता, स० आ०, भय संकट हर्ता ॥ ज०
जड़ चेतन सब चेत, महिमां तव गावें, महिमां तव गावें ।
राजा परजा सबहि, रा० प० स, तुझको सिर नावें ॥ ज०
अतुल तुम्हारी करुणा, बरनी नहीं जाई, ब० न० जाई ।
मगल कीर्ति तुम्हारी, मं० की० तु०, गगन २ छाई ॥ ज०
तुम चेतन परमेश्वर, तुम परिपूर्ण स्वामी, तुम प० स्वा० ।
पुण्य पाप मम देखो, पुण्य पाप मम देखो, प्रभु अंतर्यामी ॥ ज०
अतुलज्ञानकी चहुंदिश, तुम ज्योति विस्तारी, तुम ज्यो० वि० ।
निरखि २ हों विस्मित, नि० २ हों वि०, जगके नर नारी ॥ ज०
हे अनन्त तव शक्ति, बरनन किम कीजे, ब० किम कीजे ।
करो गर्व प्रभु चूरण, क० ग० प्र० चू०, निज आश्रय दीजे ॥ ज०
भिक्षा यही हमारी, हे मंगल देवा, हे मंगल देवा ।
निशदिन हो उत्साहित, नि० हो उ० करें तेरी सेवा ॥ जय०

आरती २५७.

जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।

प्रेमदान मोहे दीजे, करुणा दृष्टि करे ॥

जय जगदीश हरे ॥

प्रेम पदार्थ पाकर महिमा तव गाऊं (हे प्रभु) महिमा तव गाऊं
जगत विषय सब भूलूं, तुमसों चित लाऊं जय जगदीश॰
नित नित हो उत्साहित, तेरो ही ध्यान धरूं ॥
(हे प्रभु) तेरो ही ध्यान धरूं। निश दिन तव गुण गाऊं॥
तेरी ही शरण पड़ूं ॥ जय जगदीश हरे ॥
कृपा यही तुम्हारी, निज भक्ति दीजे। प्रभु निज भक्ति दीजे॥
दीन हीन की विनती, इतनी सुन लीजे ॥ जय जगदीश हरे
विश्वासी अति दुर्बल, शरण पड़ा तेरी। प्रभु शरण पड़ा तेरी
पाप ताप से रक्षा, करो प्रभु मेरी ॥ जय जगदीश हरे ॥

आरती २५८.

हे अच्युत हे पारब्रह्म, अविनाशी, अघनाश, हे पूर्ण हे सर्वमय दुःख भंजन गुणताश ॥ हे सङ्गी हे निरंकार। हे निर्गुण सब टेक ॥ हे गोबिंद हे गुण निधान। जांके सदा विवेक ॥ हे अपरंपरहरहरे। हे भय भंजनहार ॥ हे संतांके सदा संग। निराधारां आधार ॥ हे ठाकुर हम दासरो ॥ मैं निर्गुण गुणनहीं को॥नानक दीजे नामदान। राखूंहृदयपरो।

आरती २५९.

ऊच अपार बे अन्त स्वामी, कौन जाने गुण तेरे (सच्चेबादशाह)
गावतउधरे सुनते उधरे, बिनशे पाप घनेरे (सच्चे बादशाह)
पशु प्रेत मुग्ध को तारे, पाहन पार उतारे (सच्चे बादशाह)
नानक दास तेरी शरणाइ, सदासदा बलिहारे (सच्चेबादशाह)

आरती २६०.

तेरा कीता जातो नाहीं मैनूं जोग की तोई ।
मैं निर्गुण हारे को गुण नाहीं, आपे तरस पियोई ॥
तरस पिया मिहरहमत होई, सतगुर साजन मिलया ।
नानक नाम मिले तां जीवां, तन मन थीवे हरया ॥

आरती २६१.

अखिल ब्रह्मांडपति, प्रणमि चरणे तव,
प्रेम भक्ति भरे शरण लागी ।
दुर्मति दुर करि शुभ-मति दाओ हे,
यहि बरदान भगवान मांगी ।
घोर निष्ठुर रिपु अन्तरे बाहिरे,
भीत अति आमी एअन्धकारे ।
दीन-वत्सल तुमी तारौ निज सेवके,

तव अभय मूर्ति भय निवारे ।
विषय मोहार्णवे मगन होय डाकि हे,
दीने हीने प्रभु राखो राखो ।
तव कृपा ये लभे कि भय भव संकटे,
काटि जावे विपद् लाख लाख ॥

आरती २६२.

हे हरि सुन्दर हे हरि सुन्दर तेरो चरण पर सीर नवे ।
सेवक जन के सेव सेव पर, प्रेमी जनों के प्रेम प्रेम पर ।
दुःखी जनों के वेदन वेदन सुखी जनों के आनन्दए ।
वना वना में सांवल सांवल, गिरी गिरी में उन्नित उन्नित ।
सलिता सलिता चंचल चंचल, सागर सागर गंभीरए ।
चन्द्र सूर्य्य वरै निर्मल दीपा, तेरो जग मन्दिर उजारए ।

छटा अध्याय ।

विविध भजन.

भजन २६३.

धन्य धन्य धन्य आज, दिन आनन्दकारी ।
सभी ही मिल तव सत्य धर्म, भारत में प्रचारी ॥
हृदय हृदय हो तेरो धाम, देश देश तव पुण्य धाम ।
भक्तजन समाज आज, स्तुती करे तुम्हारी ॥
नहीं चाहें धन जन मान, चाहें नहीं प्रभु अन्य काम ।
मिल गायें मधुर ब्रह्म नाम, सकल नरो नारी ॥
जगत तेरी ले शरण, जाये विपद और भय मरण ।
पी अमृत रस सभी करें, जय जय तुम्हारी ॥
भारत स्वामी है पुकारे, सुनो पुत्र गण हमारे ।
सत्य प्रेम सहित सकल, शरण लो हमारी ॥
चिर से गाढ निद्रा सोये, जागो जागो व्याकुल होये ।
खोया सत्य धर्म अबतो, बल करो संचारी ॥

भजन २६४.

कैसा बीता यह साल हमारा, आओ सोचें जरा न्यारा न्यारा
हमने कितना है प्रेम बढ़ाया, कितना खुदी पै है ग़ल्बा पाया
कितना धर्म का धन है कमाया, कितना प्रभुपै किया है सहारा
कितने धर्मके कार्य किये हैं, कितने सेवा के साधन लिये हैं।
या हम अपने ही लिये जीये हैं, चक्र खुदीके गिर्द ही मारा।
कितनाक्रोधकोदमन किया है,क्याकुछध्यानऔरमननकियाहै।
हरगुन गान या श्रवन कियाहै,या दिल फिरता फिरा मारा २॥
किससे है गहरी लगन लगाई, क्या २ कुछ की नई कमाई।
या यह अवसर यूंही गंवाई, बन विश्वासी न समय गुजारा॥

भजन २६५.

मुझे इस पाक उत्सव में प्रभु ! प्रेमी बना दीजे।
सुंघा कर प्रेम की शीशी बस अब अपना बना लीजे॥
अबस मैंने गंवाई उमर और अब तक रहा बे मुख।
प्रभु इस तुम से बे मुख पन की आदत को गवां दीजे॥
बढ़ी जाती है क्यों उल्फत मेरी इन फानी चीजों से।
घटा दीजे इसे और अपने चरनों से बढ़ा दीजे॥
मैं क्यों महरूम रहता हूं तेरे नूरानी दर्शन से।

जो हों असबाब मिसले परदा उन सब को हटा दीजे ॥
मैं तुझ पै होके शैदा और फिर कुरबान हो जाऊं ।
मुझे कुछ कुछ इसी ढब का ही दीवाना बना दीजे ॥
यह उत्सव होवे बरकत देह मुझे और और सब को भी ।
दया करके कोई घटना इसी सूरत की ला दीजे ॥
यही है मिलके हम सब की दुआ ऐ मालके उत्सव ।
हमें भी बरकतें इस पाक मौके पर अता कीजे ॥

भजन २६६.

सन्तो कैसा अजब नजारा ॥

ब्राह्म धर्म्म के पवित्र उत्सव का, हो रहा है जय जय कारा
चेतन देव लिये प्रेम पियाला, संग दे रहे हमारा ॥
नारदमुन गुनगान करत हैं, हाथ लिये इक तारा ।
राम मोहन और केशव रल मिल, दोऊ दे रहे हैं सहारा ॥
सबही देवते करें जय ध्वनी, देख देव परिवारा ।
नानक ईसा कबीर मुहम्मद, शोभत न्यारा न्यारा ॥
मीरांबाई और गारगी, कर रहीं जय जय कारा ।
ब्रह्म राज के वासी हुए हैं, धन धन भाग्य हमारा ॥

भजन २६७.

धर्म्म के विधाता धन्य, प्रभु परित्राता धन्य।
चारों ओर पाप देख, भारत बिलाप देख।
आत्म सन्ताप देख, दया कीन दया घन॥
आपही तुम समय जान, प्रगट्यो आय धर्म्म विधान।
मुक्ति पाय तव सन्तान, धन्य पिता धन्य धन्य॥
कृपा करो बीर जन, पाय पाय नव जीवन।
धर्म्म प्रचार कार्य्य हेतु, करें चार दिग गमन॥
तव नाम नित्य गाय, तव प्रसाद नित्य पाय।
तव शक्ति से भर के करें, ब्रह्म राज स्थापन॥

भजन २६८.

आओ भाई आओ शरण हरि आओ।
जगके मान मोह को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ।
सत्य अमोलक रतन है प्यारो, बिन परखे न गिराओ।
उदय हुआ हरि नाम चन्द्रमा, देख देख हर्षाओ॥
इस अमृत नाम को पान करो सब, आत्म सुख मिल पाओ।
बाह्य आडंबर काम न आवें, इन में मन न फंसाओ।
प्रभू की भक्ति बिना नहीं मुक्ति, दृढ विश्वास जमाओ।

विना प्रेम भक्ति है असम्भव, इस में निश्चय लाओ ॥
हे पुरवासी भ्रात भगिनिगण, हृदय प्रेम उपजाओ ।
सम स्नेह में मिलकर सारे हरि महिमां यश गाओ ॥
प्रेम प्रीति में मग्न होये सब, शरण पिता की आओ ।
जीवन मुक्ति शान्ति और आनन्द, हरि प्रसाद जहां पाओ

भजन २६९.

जाते हैं धर्म्मराज में साधन की राह से ।
हो एत्दाल काज में साधनकी राह से ॥
आजाती है कुछ रोज में मुत्कब्बरों के भी ।
आधीनता मिज़ाज में साधन की राह से ॥
लगते हैं धर्म्म भाव के फल फूल निकलने ।
परिवार या समाज में साधन की राह से ॥
देखा गया है, खूबीयां मुल्क और कौम के ।
आजाती हैं रिवाज में साधन की राह से ॥
अपने सुधारने की अगर कुछ भी हो नीयत ।
हो फ़ाइदा इलाज में साधन की राह से ॥

भजन २७०.

प्रेम बिना मैं कैसे जिऊंगी, किस सङ्ग नेह करूंगी ॥
प्रेमही मेरी जीवन बूटी, दुनियां की सब आशा टूटी।
प्रेम को कैसे छोड़ सकूंगी ॥ १ ॥
प्रेम नगरकी हूं मैं बासी, बिन प्रभु मैं रहत उदासी।
प्रेम में ही मैं डूब रहूंगी ॥ २ ॥
प्रेम की खातिर जोगन होकर, अपना आप प्रभु में खोकर।
द्वार द्वार मैं तो फिरूंगी ॥ ३ ॥
प्रेम ने मेरा मन हर लीना, प्रेम ने मोको पागल कीना।
प्रेम में ही मैं मगन रहूंगी ॥ ४ ॥
प्रेम की मोको आग है लागी, मुरदा रूह है उससे जागी।
गुण उसके प्रचार करूंगी ॥ ५ ॥
प्रेम ही अन्दर प्रेम ही बाहर, प्रेम ही बातन प्रेमही ज़ाहिर।
प्रेमही में मैं बास करूंगी ॥ ६ ॥
प्रेम का अन्दर हो उज्यारा, तब हो जीवन सुन्दर हमारा।
प्रेमका मैं शृंगार करूंगी ॥ ७ ॥

———

भजन २७१.

प्रेम की अचरज देखी रीत ॥
प्रेम ही नाचे प्रेम ही कूदे, प्रेम ही गावे गीत ॥
प्रिय प्रीतम के प्रेम लोक में, प्रेम सा नहीं कोई मीत ॥
प्रेम को पा हो निर्भय प्राणी, जो कल था भय भीत।
प्रेम बिना सब कुछ ही निष्फल, पूजा पाठ संगीत ॥
विश्वासी अब प्रेम कमावो, और प्रीतम से प्रीत ॥

भजन २७२.

मैं मन डाढे दे बस पै गईयां, मन बस सुखी ना कोई ॥
पहलां मैं इसगलदाध्याननकीता,जो मनआख्यासोईकरलीता
मन ने हुण मैंनूं बस कर लीता, मन सुख दुखी सब कोई ॥
रानी मैं इस घरदी एहघर मेरा,हुण एथे हुकम न कोई डर मेरा
मन दाही राज है चार चौफेरा, उसदी मैं बन्दी होई ॥
सुख दे लोभ मैं दुःख चा सहेड़े, गल पालीते अनेक बखेड़े
वही सुखीया आधार हैं जेहड़े, दूजा सुखी न कोई ॥
जो मैंनूं मनदे फन्दों छुड़ावे, उस कोलों मेरा राज दिवावे।
जो मैंनूं भुल्ली नूं राहीं पावे, मीत सईयो मेरी सोई ॥

भजन २७३.

हरि भजलेरे तू मेरे मना ॥
सोई परम पद भजत निरन्तर देव ऋषि मुनि सन्त जनां ॥
कोटि कोटि जगत जिन्ह गावत, सकल चराचर रैनदिना ।
प्राण के प्राण हरि चिरसंगी, भूल नहीं ताको एक छिना ॥

भजन २७४.

धन्य धन्य तुम एक हमारे ।
हे जीवन आधारे ॥
धन्य धन्य तुम धर्म्म विधाता, धन्य धन्य नवजीवन दाता।
धन्य धन्य तुम हे परित्राता, जीवन लक्ष प्रभु प्यारे ॥
धन्य धन्य विश्वासी के धन, धन्य धन्य प्रेमक के मोहन ।
धन्य सेवक के प्रभु और जीवन, तुम में ही तृप्त हों सारे ॥
तुमरी कृपा से मैं व्याकुल हो, पूरा तुमरा ही होने को ।
ढलने को जैसा तुम चाहो, आया हूं तुमरे द्वारे ॥

भजन २७५.

जिन प्रेम रस चाखा नहीं, अमृत पिया तो क्या हुवा ।
जिस इश्क़ते सिर न दिया जुग जुग जिया तो क्या हुआ ॥
मशहूर पंथ में हुवा साबित न किया आपको ।

आलिम और फ़ाजिल होयके, दाना हुवा तो क्या हुवा ॥
औरों नसीहत तू करे, खुद अमल करता नहीं ।
दिल का कुफर टूटा नहीं, हाजी हुवा तो क्या हुवा ॥
देखी गुलिस्तां बोस्तां, मतलब न पाया शेखका ।
सारी किताबां याद कर, हाफ़िज़ हुवा तो क्या हुवा ॥
जब इश्क के दरिया में, ग़रक़ाब यह होता नहीं ।
गंगा जमना द्वारका, नहाता फिरा तो क्या हुवा ॥
जब लग प्याला प्रेमका, भर कर छलक जाता नहीं ।
राग तार मंडल बाजते, जाहर सुना तो क्या हुवा ॥
जोगी और जंगम सरयोगे, लाल रंग के कपड़े पहनते ।
वाकिफ नहीं उस हाल के, कपड़े रंगे तो क्या हुवा ॥
वली जो पुकारेहै पिया पिया, पियाइ पुकारते जिया दिया ।
मतलूब हासल न हुवा, रो रो मुवा तो क्या हुवा ॥

भजन २७६.

विपद संसार में, यदि चाहो मुक्त जीवन ।
सत्य के तब होके आश्रित, करो काल यापन ॥
बाहर अन्तर ब्रह्म रूप, देखो होके हृष्ट मन ।
परोपकार व्रत धार, स्वार्थ करो चिरदमन ॥

जगदीश्वर पर राख निर्भर, करो निज कर्तव्य पालन ।
सत्य प्रेम पवित्रता में, होओ उन्नत सर्व क्षण ॥

भजन २७७.

राम भजो नरो नारी (रे भाई)

जो है सब का प्राण आधारा, सकल जीवन सुखकारी ।
प्रेम का जिसके अन्त न आवे, चक्रित बुद्धि हमारी ॥
हरिभजन बिन कठन है तरना, यह भवसागर भारी ।
एक प्रभू का सिमरण करके, तर गई गनका नारी ॥
तुम भी उससे प्रीति करके, लेओ जन्म सुधारी ।
घट घट में जो व्यापक सब के, हो दास पर बलिहारी ॥

भजन २७८.

गाओ भाई बोलो भाई, जय ब्रह्म जय ।
जिनकी कृपाने दिखाया, आज यह समय ॥
जय शिव सिद्धि दाता, जय प्रभु परित्राता ।
जय पुण्य शान्ति दाता, मंगल आलय ॥
प्रभु जांके हैं सहाई, नहिं है वह निरुपाय ।
ब्रह्म कृपाहि केवलम्, फिर कहो क्या भय ॥

———

भजन २७९.

रे प्राणी क्या मेरा क्या तेरा, जैसे तरवर पंख बसेरा ।
जलकी भींत पवन का थंबा, रक्त बिन्दु का गारा ॥
हाड़ मांस नाड़ी का पिंजर, पंखी बसे बिचारा ।
राखो कन्ध उसारो नीवां, साढ़ तीन हाथ तेरी सीमा ॥
बांके बाल पाग सिर टेढी, यह तन होगा भस्म की ढेरी ।
ऊंचे मन्दर सुन्दर नारी, रामनाम बिन बाजी हारी ॥
मेरी ज़ात कमीनी बुद्ध कमीनी, ओछा जन्म हमारा ।
तुमरी शरणागत में प्रभु जी, कहे रविदास चमारा ॥

(काफी) २८०.

जां मैं सबक इश्कदा पढ़या, जीवड़ा मसजिद कोलों डरिया
जां सदयाना सिर पर धरिया, घर विच पाया महरम यार ॥
जां मैं रम्ज़ इश्कदी पाई, मैना तोता मार गंवाई ।
अन्दर बाहर होई सफाई, जितवल देखां यारां यार ॥
वेद पुराण पढ़पढ़ थके, सिजदे करदियां घिस गये मत्थे ।
न रब्ब तीर्थ न रब्ब मक्के, जिन पाया तिन नूर जमाल ॥
इश्क भुलाया तेरा हुण, क्यों रोवें पावें झेड़ा ।
बुल्हा हुन्दा चुपचुपाता, इश्कदी नइयो नई बहार ॥

भजन २८१.

प्यारे गम छोड दुनिया का, साहिब से आशनाई कर ॥
सभी कुछ छोड़ जाना है, साहिब से न जुदाई कर ॥
भिखारन नाम है मेरा, करूंगी हर घड़ी फेरा ।
क्या मोहे विरहोंने घेरा प्यारे, आये मोहे मिलायाकर ॥
नहीं कोई दर्द का दारू, सभी विरहोंके मारू ।
तुम्हारा देखना दारू, हमारा शोक हुआ है ॥
भिखारन नाम है मेरा, करूंगी हर घड़ी फेरा ।
बतादे पिया का डेरा, जहां मेरा पिया पियारा है ॥
लगी है प्रेम की लबकी, तुम्हारे दर्श की भूखी ।
वली को ला मिलाओ, नहीं मेरी जान जाती है ॥

गज़ल २८२.

हमन हैं इश्क के माते, हमन को दौलतां क्यारे ।
नहीं कुछ मालकी परवाह, किसी की मिन्नतां क्यारे ॥
हमन को खुश्क रोटी बस, कमर को यक लंगोटी बस ।
सिर पर एक टोपी बस, हमन को इज्जतां क्यारे ॥
कचाशाला वज़ीरों को, जरी जरबफ्त अमीरों को ।
हमन जैसे फकीरों को, जग की नेमतां क्यारे ॥

जिन्हों के सुखुन सियाने हैं, उन्हों को खलक माने हैं ।
हमन आशिक दिवाने हैं, हमनको मजलसां क्यारे ॥
कियो हम दर्दका खाना, लियो हम भस्म का बाना ।
वली बस शौक मन भाना, किसी की ममलतां क्यारे ॥

गज़ल २८३.

हमनको मत कहो लोगो, हमन खल्ती दिवाने हैं ।
खुशीका राह त्यागा है, कठिन में जा समाने हैं ॥
तजी खिदमत वज़ीरीकी फड़ी खिदमत फकीरी की ।
चढ़े किश्ती सबूरी की, इश्कके यह मकाने हैं ॥
नहीं हम वेद के बादी, हमारा मन वैरागी है ।
नहीं हम भेष के योगी, हमारा पन्थ न्यारा है ॥
बसें हम सुन्न की नगरी, जहां मीत मेरा प्यारा है ।
नहीं हर एक की जाघा, जहां हम ने जाव डारा है ॥
करूंगा एक की पूजा, न मानूं और को दूजा ।
वली उसकी करूं पूजा, कि जिसका यह पसारा है ॥

भजन २८४.

पापदा रोग बुरा यह तां गल्लीं दूर न होंदा ।
साधन एहदी दारू है जिहदे कीतीयां न मूल खलोंदा ॥

पापदा महा बलकारी राक्षस, जतन किये वस होंदा ।
पापदे शत्रु नूं पालके घर विच, तू केहा सुख नाल सोंदा ॥
जिसदी किश्तीदा एह होंदा मल्लाह, उसी नूं पकड़, डबोंदा ।
वही बचदा जो दूरों ही उसदी, शकल देख के ही रोंदा ॥
पाप दी मैलदा साबुन है साधन, क्यों नहीं एस नाल धोंदा ।
विश्वासी जो है महरम वह, उसदी संगतों दूर खलोंदा ॥

गज़ल २८५.

साधन ही साधुताई में मुझको बढायेगा ।
जो नीचता है मुझमें यह उसको गंवायेगा ॥
जो कुछ है मुझ पै नफस का गलबा पड़ा हुआ ।
आहिस्तगी से उसको यह मुझ से हटायेगा ॥
आंखों में मेरी धूल है दुनियां की जो पड़ी ।
उसको निकालरास्ता हक का दिखायेगा ॥
मैं जाचुका हूं पाप के कूचे में जिस कदर ।
साधन ही मुझ को खैंच के उस जा से लायेगा ॥
आती नहीं है काम जहां दौलत ओ दुनियां ।
उस जा पै येही एक मेरे काम आयेगा ॥

विश्वासी अब न छोड़ना साधन की राह को ।
इस राह से तू प्रेम नगर पहुंच जायेगा ॥

भजन २८६.

मंगलमय परमेश्वर, तुम्ही जीवन लक्ष्य हो ।
आशीर्वाद करो प्रभू, चाहें सदा तुम ही को ॥
जीवन के हर एक पहलू से तुम्हारी इच्छा पूरण हो ।
एक लक्ष्य एक गति एक हमरे तुम रहो ॥

भजन २८७.

विश्वपति हे ! तव महिमा अपार ।
जड़ चेतन अनन्त तव सृष्टि,
गावें यश अनिवार ।
असंख्य चन्द्र, असंख्य सूरज;
सब के तुम आधार ।
अतुल धन पूर्ण, विस्तीर्ण बसुन्धरा,
करे तेरी जयकार ।
धन्य तव करुणा विधि, हे मंगलानिधि;
धर्म्म के अवतार ।

पुण्य प्रेम धन, करो सभी अर्पण;
हे अनन्त गुणाधार ।

भजन २८८.

सुधामय ब्रह्मज्योति, करोरे दर्शन ।
स्निग्ध-मय शान्तिप्रद, हृदय रञ्जन ॥
छोड़ो संसार धाम, करो आत्मसमाधान ।
योगानन्द रसपान, करो हे अनुक्षन ॥
नित्य सत्य ब्रह्मलोक, जहां नहीं दुःख शोक ।
चलो वहीं बासकरो, जहां रहे देवगण ॥

भजन २८९.

तू विधाता, तू विधाता, तू विधाता मेरा ।
मैं हूं बन्दा, मैं हूं बन्दा, मैं हूं बन्दा तेरा ॥
एक रोटी और धोती, द्वार तेरे पाऊं ।
भक्ति और प्रेम सहित, नाम तेरा गाऊं ॥
बाहर अन्तर देख तुझको, सत्य नित्य जानूं ।
तव आदेश सुखी मन से, सार करके मानूं ॥
सत्य शिव सुन्दर ही मेरा, परमलक्ष्य होवे ।
जगके उपकार ही में, जीवन यह जावे ॥

भजन २९०.

तनक प्रभु चितओ मेरी ओर ।

विरह वेदना सही न जात अब, हृदय व्याकुल मोर ।
तुम बिन कुछ न सुहात मुझे है, दीखत सभी कठोर ।
तव दर्शन को जी अम तरसत, चन्द्रको जैसे चकोर ।
हे प्राण पियारे, शीघ्र हरो यह, दुःख निशा अति घोर ।
देव दिखाय माधुरी मूरत, प्राण बचाओ मोर ।

भजन २९१.

जीवन दाता, देव हे जीवन ।
दूर करो जड़ भाव, करो मोहें चेतन ।
पाप से है तप्त हृदय, देखो २ दयामय ।
देवनाथ पुण्य जल, शान्त करो प्राणमन ।
मोह रूप अन्धकार, दूर करो प्राणाधार ।
तव प्रेम तव ज्योति, देव सत्य सनातन ।

भजन २९२.

मैं तां हां प्रेम पियासी नी, मैंनूं प्रेम पिलाओ ।
प्रेम पिलाओ ते प्रेमका वनाओ ॥ टेक ॥

प्रेम पियाला भर भर पीवां, प्रभु दी प्रेमका बनकर जीवां ।
कदे ना रहां उदासी नी ॥ १ ॥ मैंनूं०
मन्दे भाग जो प्रेम न पीवे, दुनियां दा कीड़ा बन जीमे ।
फिर पिच्छों पछतासी नी ॥ २ ॥ मैंनूं०
प्रेम है पुण्य जीवन दी कुञ्जी, बिना प्रेम मैं हां रूड़ी हुञ्जी।
मन्नों तुसी न हांसी नी ॥ ३ ॥ मैंनूं०
ना मैंनूं शक्क शुभा है कोई, प्रभु मेरा मैं उस दी होई ।
बन कर के विश्वासी नी ॥ ४ ॥ मैंनूं०

भजन २९३.

सइये नी मैं हां प्रेम दुखारी, प्रेम दा दारू दस्सो । (टेक)
मैं तां समझीसी प्रेम नूं हासा, साधन भजन नूं खेल तमाशा।
हुण उस हासे दा पया गल रासा, तुसी न हुण मैंनूं हस्सो ॥१॥
प्रेम ना मन नूं बस्सन देंदा, उस नूं मूल ना हस्सन देंदा।
हाल अहवाल ना दस्सन देंदा, हुण कीवें जीवां दस्सो॥२॥
प्रेम नहीं यह तो है कोई जादू, साधन सहज बना छड़दा साधू
भजन भुला देंदा वाद विवादू . उञ्ज कहिंदा सूबस बस्सो॥३॥
यह केहा प्रेम जो चैन न देंदा, प्रेम नगर वल उठ टुर पैंदा ।
प्रीतम २ पया कूकेंदा, कहिंदा है उसी वल नस्सो ॥४॥

मैं तां इस विश्वासी भुलाइयां, प्रेम नगर दी राह चा पाइयां।
ढुरदी २ ऐथे तां आईयां, अगला राह मैंनूं दस्सो ॥५॥

भजन २९४.

मैं सखी मन की ऐसी फूली, प्रेमकी धूल झुलैयां में भूली॥टेक
प्रेम ही मेरा खाना पीना, प्रेम के एक सहारे ही जीना।
प्रेम ने ही मोहे जीवन दीना, प्रेम को पा मैं फली और फूली१
प्रेम से ही मैंने मारा क्रोध, दूर हुआ मेरा वैर विरोध।
प्रेम से ही हुआ आत्म बोध, बन गई प्रभुके चरणों की धूली२
प्रेम ने जब आ तम्बू ताना, निद्रा तब से हुई रवाना।
छोड़ा खुदी ने आना जाना, मनने सूरत ही और कबूली॥३
प्रेम ने ही विश्वासी बनगई, दृढ विश्वास की गलीयां दिखाई।
प्रेम ही आन मिलाया साई, देख जिसे में आपा भूली ॥४॥

गज़ल २९५.

सीधी है राह प्रेम की इस पर चले चलो।
खतरा करो ना दिल में कुछ बे डर चले चलो ॥१॥
मिलते हैं प्रेमकों के इसी राह पै नकशे पा।
प्रीतम से मिलने वालो इसी पर चले चलो ॥२॥

भटकाओ टेहड़ी राहों की मत नेमतों में दिल ।
रूखा या फीका खा के खुशको तर चले चलो ॥३॥
यह दाएं बाएं राहें सुनहरी हैं खतरनाक ।
देखो न खबरदार इधर उधर चले चलो ॥ ४ ॥
खुदगरजीओ खुदी का ना कांटा तुम्हें चुभे ।
मोजे आधीनता के पहन कर चले चलो ॥ ५ ॥
मंजिल पै पहुंचने का अभी वक्त है बाकी ।
विश्वासी अब गंवाओ ना औसर चले चलो ॥ ६ ॥

भजन २९६.

साधन करने नूं जीतां है चाहुंदा ।
मेतों साधन बन नहीं आउंदा ॥ टेक ॥
सइयो गुर दस्सो एहा जेहा ।
जीवें यह मन माने केहा ।
यह तां निचला बेहणों रेहा ।
पया घूम घूमेरियां खाउंदा ॥ १ ॥
जे मैं इसनूं कुराहों मोड़ां ।
भेडीयां चितमनां कोलों विछोडां ।

भावें किन्नियांई यारां मरोड़ां ।
यहतां मुड़ घिड़ ओथे ही जाउंदा ॥ २ ॥
यह मन दुजियां दे औगन वेखे ।
अपने मूल न लियाउंदा लेखे ।
भैडियां संगतां दे यही विशेखे ।
पया निन्दा ते चुगली कराउंदा ॥ ३ ॥
यह मन साधन भजन न लगदा ।
एही जेही संगतां कोलों संगदा ।
यह तां दुनियां दे धन्द्यां दे कमदा ।
आप डुब्बिया ते मैंनूं डुबाउंदा ॥ ४ ॥
मैं विश्वासी किवें बनसां ।
किस विध हरी दी आज्ञा मनसां ।
कद लों उसदे हुक्मां नूं भनसां ।
जो है सच्चा स्वामी कहाउंदा ॥ ५ ॥

भजन २९७.

प्रेमके रंगसे चोला रंगो, अरु ज्ञान गुलाल उड़ाओ जी ॥
ब्रह्म भक्ति की होली खेलो, हरि शरणागत आओ जी ॥
पाप के झूठे राग छोड़कर, हरदम हरिगुण गाओ जी ॥

पाप विषय की मदिरा त्यागो, प्रेम प्याला चढाओ जी।
हरि भक्तन संग नेह लगाकर, हरिके दास बन जाओ जी॥
भारतवासी सोचो समझो, वृथा न जन्म गंवाओ जी।
अब विश्वासी न चूको अवसर, हरिसे ध्यान लगाओ जी॥

भजन २९८.

संतां के कारज आप खलोया हर कम्म करावन आयाराम।
धरत सुहावी ताल सुहावा विच अमृत जल छाया राम॥
अमृत जल छाया पूरण साज कराया सकल मनोरथ पूरे।
जय जय कार भया जग अन्दर लाथे सकल बिसूरे॥
पूरण पुरुष अच्युत अविनाशी यश वेद पुराणी गाया।
अपना विरद रखया परमेश्वर नानक नाम ध्याया॥

भजन २९९.

प्रभू तेरे पग की धूर।

दीन दयाल प्रीतम मन मोहन, कर कृपा में मेरी लोचा पूर।
दश दिशगो रहा यश तुमरा, अन्तरयामी सदा हजूर॥
जो तुमरा यश गायन करते, सो जन कबहूं न मरते झूरे।
धुंद बन्ध विनशे मायाके, साध संगत मय बिसूर।
सुख सम्पद भोग इस जियाके, बिन हर नानक जाने कूड़

भजन ३००.

माई मेरे मन की प्यास।

इकक्षण रह न सकूं बिन प्रीतम, दर्शन देखनको धारी मन आश

सिमरो नाम निरञ्जन करते, मन तन से सब कुल दुःख नाश।

पूर्ण पार ब्रह्म सुख दाता, अविनाशी विमल जाको जास ॥

सन्त प्रसाद मेरे पूर मनोरथ, कर कृपा भय गुण ताश।

शान्त सहिज सुख उपज्यो, कोट सूर नानक प्रकाश ॥

भजन ३०१.

तुम्ही सत्य, तुम्ही ज्ञान, तुम्ही अनन्त, तुम्ही महान।

अतुल आनन्द शान्ति, अमृत के प्रस्रवण ॥

तुम्ही मंगल आलय अनन्त करुणामय।

अद्वितीय राजराज निष्कलंक निरंजन ॥

तुम्ही पिता, तुम्ही माता, तुम्ही गुरु, ज्ञान दाता।

तुम्हारे प्रसाद से नाथ पाया है यह देह मन ॥

पिता माता बन्धु सब, पाए हैं प्रसाद से तब।

हे विभु करुणासिन्धु तव दया अतुलन ॥

भजन ३०२.

जय भव कारण, जगत्-जीवन, जगदीश जगतारण हे ।
सवारी ईश्वर, तुमि परात्पर, तव भाव के वुझीवे हे ।
अरुण उदिल, भुवन भासील, तुमार अतुल प्रेमे हे ॥
विहंगम गण मोहिये भुवन, काननें तव यश चाये हे ।
हे जगतपति तव पदे प्रणति, ए दीन हीन जनार हे ॥

भजन ३०३.

हरि वोलो हरि वोलो भाई ना वोले वाको राम दुहाइ ॥
मेरा २ कर क्या फल पाया, हरि के भजन विना झूठ कमाया
काहे को सीनत पढ २ गीता, हरि के भजन से सव कुछ होता
कहत कवीर हरि गुण गावो, नाचत गावत वैकुंठ जावो ॥

भजन ३०४.

ब्रह्म कृपा हि केवलम्, सभी वोलो भाई ॥
ब्रह्म कृपा विन और कोई, जीवन की गति नाहीं ।
मधुर ब्रह्म नाम गाये. हृदय शान्ति पाइ ॥
ब्रह्म की सदा हि जय हो, ब्रह्म हि हो सहाई।
ब्राह्मधर्म्म की जय धुनि, दे चारों ओर सुनाई ॥

अपार ब्रह्मकृपा से कहो, द्वारे द्वारे जाई ।
पाप ताप शोक मिटें, यही नाम गाई ॥

भजन ३०५.

सुख सागर में आय के प्यारे, मत जावोरे प्यासा ॥ सु० ॥
निर्मल नीर भरियो घट भीतर, पीलेरे श्वासों श्वासा ॥सु०॥
मृग जल तृष्णा छोड़ दे बावरे, धरले दृढ विश्वासा॥सु०॥
कौड़ी २ कर माया जोड़ी, संग न चाले एक मासा ॥सु०॥
हरजी चेतले मूढ मन मेरे, यमराज देवेगा गल फांसा सु०
प्रेमी जन सन्त सदा मतवाला, जगत से रहत उदासा सु०
कहत कबीर सुनो भाई साधो, एक नाम की है आसा॥सु०॥

भजन ३०६.

खेती करो हरि नाम की, मनवा खेती करो हरि नाम की ॥टे०
पैसा न लागे रुपिया न लागे, कौड़ी न लागे फुटकी॥खे०
मनके बैल सुरत पोहावे, रस्सी लगाऊं गुरु ज्ञान की ॥ खे०
कहत कबीरा सुनो भाई साधो, भक्ति करो हरिहर की ॥ खे०

भजन ३०७.

मोको कहां तूं ढूंढे बंदे मैं तो तेरे पास में ।
ना मैं कोई क्रिया कर्म में ना योग सन्यास में । टे०

ना मैं पोथी ना मैं पांडित ना काशी कैलाश में ।
ना रहता मैं श्री द्वारिका ना रहता जगन्नाथ में ।। मोको०
ना रहता मैं रामेश्वर में ना रहता बद्रिनाथ में ।
ना रहता में जंगल सहरा मैं रहता विश्वास में ।। मोको०
कहत कबीर सुनो भाई साधो सब श्वासों के श्वास में ।।
जो खोजे तो तुरत मिलूं मैं छनभर की तलाश में ।। मोको०

भजन ३०८.

प्रभु तुमरी मरज़ी पूर्ण हो ।
तुम चाहो जिस हाल में राखो,
निज इच्छा मुझ पर प्रकाशो ।
मंसूबे मेरे सभी विनाशो,
अपनत मेरी चूर्ण हो ।।
मेरे दुःख से यदि तब सन्तान,
पाये पाप जीवन से त्राण ।
करो मोहे बेशक कुर्बान,
तब ब्रह्म राज विस्तीर्ण हो ।।
मैं तुम्हें महान करना चाहूं,
पूरा तुमरा ही रहना चाहूं ।

इस में मैं खुश होना चाहूं,
मौत होवे या जीवन हो ॥

भजन ३०९.

तुम पर अपना तन मन वारूं ।
तुमरी मर्जी में मेरी मर्जी, निज इच्छा को मारूं ।
दुनियां इधर की उधर होजावे, तुम को मैं न बिसारूं ॥
कैसा ही बड़ा प्रलोभन आवे, मैं बाज़ी नहीं हारूं ।
भीतर बाहिर रोक जो होवे, इक इक करके मारूं ॥
गर दुनियां हो गारित सारी, मुख उज्वल न बिगाडूं ।
औरों की हो पहुंच से ऊपर, जय २ ब्रह्म पुकारूं ॥
ब्राह्म धर्म की अजमत फैले, उसी की जय उचारूं ।
तव इच्छा में कैसा आनन्द, पल २ उसे विचारूं ॥

गजल ३१०.

मन्दिर यह दिल मेरा बने, तुझ ज़ात पाक का ।
नूरानी हो तुझ नूर से, पुतला यह ख़ाक का ॥
जो २ सबब हैं तुझसे, जुदाई के दूर हों ।
हो खातमा इस हालते, अफसोसनाक का ॥
तू ज़िन्दगी है मेरी मगर मैं हूं तुझ से दूर ।

छूटे यह काश रास्ता, मुझ से हलाक का ॥
तुझसे मैं मांगता हूं तुझही को अय रूहकी रूह ।
दरमां तूई है इस मेरे दर्दे फिराक का ॥
इस साले नव में मुझ पै, प्रभु कर यही दया ।
हो वसल तुझ से दूर हो, खदशा फिराक का ॥

(अनुष्ठान के भजन)

(जातकर्म)

भजन ३११.

महान प्रभु की लीला अपार ।
बाल रूप में जाहिर होकर, करते हैं सुन्दर परिवार ॥
महिमा हरि की देखो भाई, होवो सब के सब बलिहार ।
गर्भ में मां के इस नन्हें को, किस हिकमत से किया तैयार॥
विघ्न बाधों से बचाया मां को, और रक्षा कीनी बहु प्रकार ।
दूध को बच्चे के पालन कारण, छाती में मां के दीना डार॥
नन्हें का मुखड़ा है कैसा सुन्दर, चांद भी गोया है शरमसार ।
सिदकदिली में यह है लासानी, सरलताकी बह रही देखो धार॥

विश्वास सच्चे का जो चाहो नमूना बच्चे के जीवन पर करो विचार।
बहन भाई सब मिल यही चाहो, आप प्रभु हों उसके रखवार॥

विवाहोत्सव ।

भजन ३१२.

बान्धो विमल प्रेम बन्धन से, आज इन्हें तुम नाथ॥
आज इन्हें तुम नाथ दोहन को, आज इन्हें तुम नाथ।
हृदय हृदय से प्राण प्राण से, जीवन जीवन साथ॥
बहे परस्पर प्रेम नदी नित्य करो दया यही तात।
तब अतुलित समुद्र की, ओर गमन करें दिन रात॥
दम्पति दोऊ दास दासी हो, तब चरनों के पास।
पालें तव आदेश मुदित मन, पावें तब सहवास॥

भजन ३१३.

प्रभु मंगल शान्ति सुधामय हे, जय करुणामय करुणामय हे।
जय विघ्न विनाशन पावन हे, जय पूर्णब्रह्म कृपाघन हे।
जय नित्य सत्य गुण सागर हे, देओ वर कन्या को शुभ वर हे।

भजन ३१४.

गाओ नर नारी सभी आज विभु गुण।
जिनके प्रेम से बंधे हैं आज यह दो जन॥ १॥

कैसा यह सुन्दर समय है दृश्य मनोहर ।
मोहित हुए हैं जा को देख देव गण ॥ २ ॥
मंगल हाथ देख प्रभु का चित्त होता है प्रसन्न ।
निकलता है सब के दिल से धन्य प्रभु धन्य धन्य॥३
अब यही हम प्रार्थना करें भाई भगनी गण ।
रहें सदा सुखी निश दिन दुल्हा दुल्हन ॥ ४ ॥
प्रभु भक्ति शुद्ध प्रीति और सेवा में ।
हो व्यतीत दिवानिशी इनका जीवन ॥ ५ ॥

भजन ३१५.

ब्रह्मकृपा ही केवलं, सभी बोलो भाई ।
जिन्हों ने अपनी करुणा से यह खुशी दिखाई ॥
दो दिलों को इस समय में, दिया है मिलाई ।
शुभ कार्य में एक वही, सब के हों सहाई ॥
दुल्हा दुल्हन दोनों को हम सब मिल दें बधाई ।
ब्रह्मकृपा ही उनके सिर पे, सदा रहे छाई ॥
दोनों हृदयों में प्रेम प्रीति, निशि दिन हो सवाई ।
सेवा के साधन व मंगलभावों में, देखें यह अपनी भलाई॥

भजन ३१६.

शुभ करयो कर्तार काज यह शुभ करियो कर्तार ॥
जगत् कुरीत छोड़ सब हम ने पकड़े चरण तिहार ।
सुख आनन्द से दुल्हा दुल्हन रहें प्रीति अनुसार ॥
दोनों के दो चित्त एक हों अधिक बढे हित प्यार ।
कपट क्रोध कभी निकट न आवे, सुखके खुलें किवाड़ ॥
मात पिता और सब सम्बन्धी और जितना परिवार ।
सब की आज्ञा सिर पर राखें प्रीति भाव अनुसार ॥
गृहस्थ धर्म और भक्ति में प्रभु ऐसा हो व्योपार ।
तेरे नाम की पूजन कर २ गावें मंगलचार ॥

(नामकरण और अन्न प्रासन)

भजन ३१७.

शिशु मुख जग में सोई, स्वर्गी भूषण ।
सरल सुन्दर हास्य, प्रसन्न बदन ॥
गोद में मां की अपने, करे पान स्तन ।
बोले मां मां बाबा आदि, सुमिष्ट वचन ॥
स्नेह भाव से करे जब, मां उसे चुम्बन ।
देख तब हरि प्रेम शोभा, तृप्त हों नयन ॥

भजन ३१८.

कैसा तुमरा प्रेम अपार ।

वृक्ष लता और पुष्पों मे प्रभु, प्रेम तेरे का हो इजहार ॥

सूर्य चन्द्र और सितारे, चमकें कर तुम को आधार ।

पवित्र स्नेह में मां बालक के, देखा मैंने तुमरा प्यार ॥

पाक भगतों के जीवन मे प्रभु, प्रेम ही तेरा हो विस्तार ।

इन सब में हरि देखके तुमको, तन मन से मैं हूं बलिहार ॥

भजन ३१९.

मेरे प्यारे भाइयो हो कुर्बान ।

मेरी प्यारी बहिनो हो कुर्बान ॥

चारों ओर पाप अगनी से जल रही है प्रभु की संतान ।

देश की बुरी अवस्था देखो करदो आपना जीवन दान ॥

औरों के उद्धार के कारन, देदो आपना तन मन प्रान ।

अपने ऊपर सब दुःख लेकर, औरों का तुम करो कल्यान ॥

पाप पिशाच को चूरन करके ब्रह्मराज का देवो निशान ।

ब्रह्मराज को स्थापन करके, प्रभु की महिमा करो महान ॥

दास भगत कहत सुन चितसों जीवन अपना करो बलिदान।

———

भजन ३२०.

यह काया की रेल रेल से अजब निराली है ।
पाप पुण्य दो बनाके नाली, अकल सड़क ला जिसमें डाली ।
मनका कांटा लगा जिधर चाहे उधर घुमाली है ॥
दया धर्म के पहिये लाके, सतका लट्टा खूब चढा के ।
ज्ञान कमानी खेंच ध्यान की संगल डाली है ॥
मुंह की लाठ बनी है भारी, श्वास धुवां जिस में है जारी ।
दिल का अंजन लगा, जहां अग्नी बाली है ॥
बज का घंटा हरदम हिलता, वक्त रेल का जिससे मिलता ।
हाथ का सिगनल हिला, रेल अब आने वाली है ॥
जीव मुसाफिर मत दुख देवे, रामनाम क्यों टिकट न लेवे ।
कफ की घण्टी बजी, कूच अब करने वालो है ॥
तार खबर अब हिचकी आई, काल बदरिया शिर पर छाई ।
भंवर रेल गई छूठ, रहा ईस्टेशन खाली है ॥

भजन ३२१.

जो हरे सकल दुःख त्रास प्रभु बिना कोई नहीं ॥
काम क्रोध मद लोभ में फंसकर हीरा जन्म किया नास ।
जो दीसे सो सकल बिनाशे अब मन भयो उदास ॥ प्रभु०

शरन तुमारी आयो स्वामी, होके जगत् से निराश ।
मान अभिमान और द्वेश को त्यागो ईश्वर की है आश।।प्रभु०
विषय विकार दिल से निकालो, करो भगती प्रेम संचार ।
बैर भाव को दिल से मिटाओ, धर्म का करो प्रचार।।प्रभु०
हम सबों को तार दयामय, शरन पड़ी हूं में दास ।
तुम बिन स्वामी ना कोई हमरा, तेरे चरनाकी है आश।।प्रभु०

भजन ३२२.

श्यामा प्यारी पिया के मन्दिर को मैं जाती ।
श्यामा प्यारी पिया के दर्शन को मैं जाती ।।
काहे का दिवला काहे की बाती ।
काहे का तेल जले री सारी राती ।। बले री०
तनका दिवला मन की बाती ।
ज्ञान का तेल जले री दिन राती ।। बले री०

भजन ३२३.

मोड़ो २ नी सइयो मन जादें नूं ।
जादे नूं शरमादे नूं ।।
ऐह मन मेरा मोड़िया नहीं मुड़दा, इधर टोरां ते उधर टुरदा।
निन्दा चुगली बल जादे नूं ।। मोड़० ।।

एह मन मेरा दुष्ट नकारा, कदीना डीठा जिसने गुरांदा द्वारा ।
मोड़ नी कुसंग जादें नूं ।। मोड़० ।।
एह मन मेरा कौआ कहिये, चल हंसा सुख मारग चइये ।
एह ते ढूंढे स्वादा नूं ।। मोड़ ।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, मोड़ विर्था जन्म गवादे नूं ।।
मोड़ो २ नी० ।।

गजल ३५४.

साफ दिल होके जो करता है मुहब्बत मेरी ।
रात दिन रहती है उस दिल में सकूनत मेरी ।।
चश्मे दिल खोल के जो लोग मुझे देखते हैं ।
दिल में रखकर के शबो रोज मुहब्बत मेरी ।।
उनको हर शै में नजर आता है जलवा मेरा ।
जेर २ से नजर आती है कुदरत मेरी ।।
मुझ पे जो मरते हैं मैं उन पे फिदा होता हूं ।
मेरे आशिक नहीं करते हैं शिकायत मेरी ।।
खुद फना होके न मिल जाये तो मुझ में शातिर
जान सकता नहीं जिनहार हकीकत मेरी ।।

गजल ३२५.

मिलजा मुझे पियारे क्यों देरियां लगाई ।
जलवा दिखा के अपना किस जा गये छिपाई ॥ टेक ॥
खाना नहीं है पानी दिलको बड़ी हैरानी ।
फिरती हूं मैं दिवानी दिन रैन चैन नाहीं ॥ १ ॥
कर प्रेम का इशारा दिल ले लिया हमारा ।
अब क्यों मुझे बिसारा सूरत नहीं दिखाई ॥ २ ॥
विरहे की आग भारी तन मन दिया है जारी ।
तुमरी छबी पियारी मन में रही समाई ॥ ३ ॥
कर माफ भूल मेरी दासन की दास तेरी ।
ब्रह्मानन्द कर न देरी चरणों में ले लगाई ॥ ४ ॥

भजन ३२६.

पिया मिलन के काज आज जोगन बन जावुंगी ॥ टे० ॥
हार सिंगार छोड़कर सारे अंग विभूत रमावुंगी ।
सिंगी सेली पहर गले में अलख जगावुंगी ॥ १ ॥
ऋषि मुनियों के आश्रम जाकर खोज लगावुंगी ।
अन्दर बाहिर सब जग ढूंड नहि अटकावुंगी ॥ २ ॥

निशदिन उसका ध्यान लगाकर दर्शन पावुंगी ।
ब्रह्मानन्द पिया घर लाकर मंगल गावुंगी ॥ ३ ॥ पिया०

भजन ३२७.

राम सुमर राम उमर बीत जायगी ॥ टेक ॥
एक २ श्वास बड़े मोल का मिला ।
भजन बिना व्यर्थ देह नाश पायगी ॥ १ ॥
बारबार जीया जून भटकता फिरा ।
मोक्षकी खिड़की न फेर हाथ आयगी ॥ २ ॥
कर ले प्रभु का भजन नहीं देर कर जरा ।
आवेगी जभी मौत पलक ना रुकायगी ॥ ३ ॥
सुमरण करे जो राम नाम प्रेम भाव से ।
ब्रह्मानन्द मोहपाश सहज में कटायगी ॥ ४ ॥

भजन ३२८.

मन तोहे किस विध कर समझाऊं ।
सोना होय तो सुहाग मंगाऊं बंकनाल रस लाऊं ।
ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊं, पानी कर पिघलाऊं ॥ १ ॥
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊं ऊपर जीन कसाऊं ।
होय सवार तेरे पर बैठूं चाबुक देके चलाऊं ॥ २ ॥

हाथी होय तो जंजीर गढाऊं, चारों पैर बंधाऊं।
होय महावत तेरे पर बैठूं, अंकुश लेके चलाऊं ॥ ३ ॥
लोहा होय तो ऐरण मंगाऊं, ऊपर धुवन धुवाऊं।
धूवन की घनघोर मचाऊं, जंतर तार खिचाऊं ॥ ४ ॥
ज्ञानी न हो तो ज्ञान सिखाऊं, सत्य की राह चलाऊं।
कहत कबीर सुनो भाई साधू अमरा पहुँचाऊं ॥ ५ ॥

भजन ३२९.

सुमरन कर ले मेरे मन।
तेरि बिति जाति उमर हरनाम बिन ॥ध्रुव॥
कूप नीर बिन, धेनु क्षीर बिन, मंदर दीप बिन,
जैसे मरुवर फल बिन हीन, तैसे प्राणी हरनाम बिन ॥१॥
देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेह बिन,
जैसे पंडित वेद विहीन तैसे प्राणी हरनाम बिन ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ निहारो छांड दे अब संतजन।
कहे नानकशा सुन भगवंत या जग में नहिं कोई अपन ३

भजन ३३०.

दर मांदे टाडे दरबार ॥ टेक ॥

तुझ बिन सुरत करे कौन मेरी, दरशन दीजिये खोल किवाड़ १
तुम धन धनी उदार त्यागी, सरवन सुनिये सुयश तुम्हार २
मांगूं कासे रंक सब देखे, तुम ही ते मेरो निस्तार ॥ ३ ॥
जयदेव नामा विप्र सुदामा, तिन पर कृपा भई अपार॥४॥
कहत कबीर तुम सामर्थ दाते, चार पदारथ देत न बार ५

भजन ३३१.

हरि मोहे अपना रूपदिखावो, रूपदिखाकर प्रेमी बनावो॥टे०
इस संसार में रूप दिखाकर, तन मन हमरा हर ले जावो १
निज इच्छा के अनुसार स्वामी, जो जी चाहे हमको बनावो २
स्वर्ग राज के वासियों संग, नित हमरा प्रभु मेल करावो ३

भजन ३३२.

प्रभु तू मेरा प्यारा है, तूं ही मेरा सहारा है ।
तू ही प्रीतम अपारा है, तूं ही जीवन अधारा है ॥टेक॥
तुझ को छोड़ कहां जाऊं, जहां पै हाल सुनाऊं ।
उपाव तुझ में ही इक पाऊं, तूं सुख ही का भंडारा है॥१॥

तूं दे शान्ति मेरे मनको, न भिटके यह कभी अन्य को।
लगाऊं शुभ कर्मन को, आनंद इस में अपारा है ॥२॥
तेरी इच्छा में सुख मानूं, यही विश्वास नित ठानूं।
स्वामी एक तुझ को जानूं, यह तन मन मेरा वारा है ३

भजन ३३३.

क्या मधुर तेरा नाम, (दयामय) ॥ टेक ॥
सुन के दयामय नाम तुम्हारा, शांत भयो है प्राण ॥१॥
दयामय २ नाम गाने से, करे है अमृत पान ॥ २ ॥
सुखे तरु को ताजा बनावे, जीव को दे सुखधाम ॥ ३ ॥
जान पड़े नहीं कहां से आयो, ऐसो मधुर तेरो नाम ॥४॥
नाम की महिमा सुनके प्रभुजी, प्राण हुआ मस्तान ॥५॥

भजन ३३४.

आज मेरे साहिब आवेंगे, हमें उजला बनावेंगे ॥ टेक ॥
दिखा कर मोहनी मूरत, मगन हमको बनावेंगे ॥ १ ॥
सुना के प्रेम की वाणी, हृदा हमरा गलावेंगे ॥ २ ॥
आसीसा दे के हम सबको, जीवन नूतन करावेंगे ॥ ३ ॥
देवें प्रसाद शान्ति का, सदा आनन्द चखावेंगे ॥ ४ ॥
बढा के भक्ति भावों को, सदा मौजें दिखावेंगे ॥ ५ ॥

रचा यह स्वर्ग की लीला, सदा उत्साह बढावेंगे ॥ ६ ॥
करें प्रणाम हम मिलके, सदा चरणों बिठावेंगे ॥ ७ ॥

भजन ३३५.

मुझे इस प्रेमी उत्सव में, प्रभु प्रेमी बना दीजे ।
पिलाकर प्रेम का प्याला, मुझे अपना बना दीजे ॥ टेक ॥
तरसते थे जो इस दिन को, सो भेजा है अभी हमको ।
बनाओ आपका प्यासा, हमें अमृत पिला दीजे ॥ १ ॥
हूं तझपर सदा कुर्बान, मिठा है जो यह तेरा नाम ।
इस नगरी के लोगों को, सदा प्रेमी बना दीजे ॥ २ ॥
यह उत्सव कर बनें फलिभूत, तेरे दीदार के लायक ।
दया करके तेरी महिमा, सदा हमको बता दीजे ॥ ३ ॥

भजन ३३६.

मेरे घर संतजन आवें, तो मैं बलिहार जाऊंगी ॥ टेक ॥
आसन आखों पे उन्हें देऊं. श्रद्धा से पांव धो पीऊं ।
जो है उद्वेग इस मन का, सो सारा मैं मिटाऊंगी ॥ १ ॥
चढा के फ़ूल भावों से, खिलाऊं खाना भक्ति से ।
फिरा के पंखा प्रीति से, अन्तर अग्नि बुझाऊंगी ॥ २ ॥

पवित्र मनके यह साधू जन, लछण हैं लाल मनमोहन ।
हरि रस नाम में माते, चरण रज माथे राखूंगी ॥ ३ ॥

भजन ३३७.

अब हरि की धूम मचावोरे, गली २ में धूम मचावोरे॥टे०
लोभ तृष्णा छोडोरे भाई, हरि की महिमा गावोरे ॥ १ ॥
सच्चे हृदय से गा कर देखो, बड़ी खुशी को पावोरे ॥२॥
जिन गाया तिन अमृत चाख्या, चिंता शोक गंवायोरे ॥३॥
प्रेम की लहरें बहें जो अन्तर, पी हरि दर्शन पावोरे ॥ ४ ॥

भजन ३३८.

जगत है प्रेम का सारा, डुबावो प्राण इक बारा ॥ टेक ॥
प्रभु है प्रेम की धारा, जगत उससे नहीं न्यारा ।
जुड़ावो नयन इक बारा, सभी मिलके ओ नरनारा ॥१॥
यह है विशाल संसारा, प्रभु का प्यारा परिवारा ।
पिता माता ओ' सुत दारा, प्रकाशे रूप तांहारा ॥ २ ॥
घन धान्य का भंडारा, दिखावत रूप नित न्यारा ।
उत्तम देही में विस्तारा, सदा शान्ति देयनहारा ॥ ३ ॥

भजन ३३९.

करो हरि का भजन प्यारे, उमर बे अर्थ जाती है ॥ टेक ॥
जरा सोच काज किस आया, मनुष तन है उत्तम पाया ।
जगत सुखों में भरमाया, हरि की याद न आती है ॥ १ ॥
जो हरि के चरण चित लावे, स्वर्ग वह यां ही पावे ।
सदा सुख शान्ति मिल जावे, ब्रह्म बाणी सुनाती है ॥२॥

भजन ३४०.

किनारे तरने से प्यारे, नहीं आनन्द पाओगे ।
प्रेम सागर में जहां तक ठीक, नहीं गोता लगाओगे ॥टे०
डरो मत देख इस के मौज, जो बल से हैं उछल रहे ।
रतन तब प्राप्त हो जब खूब, गहरे गहरे डूब जाओगे ॥१॥
अमोलक रत्न है हरि रूप, चमकता है जो सुन्दर वहां ।
उसी के स्पर्श से दम में, हृदय का तम मिटाओगे ॥२॥
अहा ! हा ! क्या है मौज उनकी, जो डूबे प्रेम सिंधु में ।
जिनका देखकर आनंद, छोड़ा तुम भी न चाहोगे ॥३॥

भजन ३४१.

प्रभु मंगल शांति सुधामय हे ।
जय करुणामय करुणामय हे ॥ टे०

जय विघ्नविनाशन पावन है ।
जय पूर्ण ब्रह्म कृपाघन है ॥ १ ॥
जय नित्य सत्य गुण सागर है ।
जय मंगलकर्ता सभी का है ॥ २ ॥

[भजन ३४२.]

मैं तो अच्छी ही लड़की बनूंगी ॥ टेक ॥
नित सोते से उठते ही सब को ।
सिर झुका नमस्कार करूंगी ॥ १ ॥
अपने समय पै जाय पाठशाला ।
दिल लगा लिखूंगी पढ़ूंगी ॥ २ ॥
कभी होगी जो भूल मुझ से ।
माफी उस की मैं ले लूंगी ॥ ३ ॥
जब खेलूंगी सहेलियों से मिल कर ।
खुश उनको ही सदा रखूंगी ॥ ४ ॥
काम करूंगी दिल से सदा ही ।
सच्च सदा ही सब से बोलूंगी ॥ ५ ॥
हाथ जोड़ के सदा प्रभू को ।
बार बार प्रभू को नमूंगी ॥ ६ ॥

भजन ३४३.

मन मोहन ने मोहे मोह लिया ।
मन मोह लिया मन मोह लिया ।
सुध बुध जग की बिसर गई सब ।
बुला रही हूं पिया पिया ॥ टेक ॥
पिया है मेरा मंगलकारी, वर्षावत नित अमृत वारी ।
पी पी कर उन्मत भई हूं, दुःख शोक सब भूल गया ॥ १ ॥
प्रीतम मेरा प्राण उद्धारा, उसको मैंने तन मन वारा ।
सदा करूंगी उसकी सेवा, यही मन में है ठान लिया ॥ २ ॥

भजन ३४४.

नये दिल से दाखल हों हम साले नौ में ।
बढ़े जोश भी दमबदम साले नौ में ॥
खुदी का पुराना मकूह है जामा ।
उतारें इसे एक दम साले नौ में ॥
जो माने हो इस राह में असबाबे दुनिया ।
हटावें उन्हें यक क़लम साले नौ में ॥
जो लासानी रिश्ता है ईश्वर से अपना ।
वह बढता रहे हो न कम सालेनौ में ॥

बढ़े प्रेम और प्रीति ईश्वर से निश दिन।
मलिनता शबोरोज़ हो कम सालेनौ में ॥
हर इक जज्बा हो पाक भावों के तावे।
प्रभु का हो फ़ज्ल व करम साले नौ में ॥

भजन ३४५.

तनक प्रभु चितओ मेरी ओर ॥
बिरह वेदना सही न जात अब, हृदय व्याकुल मोर ॥
तुम बिन कुछ न सुहात मुझे है, दीखत सभी कठोर ॥
तव दर्शन को जी अस तरसत, चन्द्र को जैसे चकोर ॥
हे प्राण पियारे, शीघ्र हरो यह, दुःख निशा अति घोर॥
देव दिखाय माधुरी मूरत, प्राण बचाओ मोर ॥

भजन ३४६.

जीवनदाता, देव हे जीवन ।
दूर करो जड़ भाव, करो मोहे चेतन ॥
पाप से है तप्त हृदय, देखो २ दयामय।
देवनाथ पुण्य जल, शान्त करो प्राणमन॥
मोह रूप अन्धकार, दूर करो प्राणाधार ।
तव प्रेम तव ज्योति, देव सत्य सनातन ॥

भजन ३४७.

देखो प्रभु की करुणा भाई, मनको हरि चरनन में लाई ॥
पाप ताप से अपने प्यारो, चिन्ता करो न काई ।
परित्राण का बोझ प्रभु ने, आप लिया है उठाई ॥
इस विशेष उनकी करुणा पर, करो निर्भर चित्त लाई ।
धर्म्म क्षेत्र में आप हमारे, जगपति हुए सहाई ॥
जात पात की मिथ्या प्यारो, दो मन से विसराई ।
एक परिवार में मिलकर कीजिये, धर्म्म राज में धाई ॥
हे पुरवासी भाई भग्निगण, सुनो प्रीति उपजाई ।
दयामय नाम प्रभू से सब का, परित्राण होजाई ॥

भजन ३४८.

आओ पुरवासी हरि यश गाओ ।
हरि की भक्ति बिना नहीं मुक्ति, इसमें निश्चय लाओ ॥
जग के केवल विषय भोग में, जीवन व्यर्था न बिताओ ।
सत्य पुण्य धन संचय करलो, जाहे संग ले जाओ ॥
जग की सकल वासना त्यागो, हरि कीर्तन को धाओ ।
विनय पूर्वक पियो प्रेम जल, मन की ताप बुझाओ ॥

जगके दास बनो नहीं भाई, प्रभु के दास कहाओ ।
सार पदारथ हरि की भक्ति, जिस प्रसाद तर जाओ ॥

भजन ३४९.

गुजारा क्योंकर है साल तू ने जरा तो जीवड़े विचार देखो।
बिछड़ने वाला है अब तुमसे तनक नजर इसपै डाल देखो॥
न देखने देगा कुछ भी तुमको उठाओ यह परदा दरम्यां से ।
जो देखनी हो हकीकत अपनी खुदी का चश्मा उतार देखो ॥
गिनो तो उन अपनी नेकियों को गर्जसे खाली जोकी गई हों।
मुकाबिल उसके जरा तो अपनी बुराइयों का शुमार देखो ॥
हटाके दिल मर्ज नुक्ता चीनी व नुक्स बीनी की लगजशों से।
हुए कहां तक हो गुनग्राही यह दिलके गुल और खार देखो ॥
पड़ाहै क्या दिलके आईनापर कुछ अक्स प्रेम और पवित्रताका
किया है विश्वासी साफ तू ने कुछ इसका गर्द व गुबार देखो ॥

भजन ३५०.

सत्य को पकड़ो झूठ बिसार ॥

झूठ बिसार सत्य को पकड़ो, मन में निश्चय धार ।
अपना बोझ प्रभु पर डालो, जो हैं जीवन आधार ॥

दांत न थे जब दूध दिया, और दो दीने रखवार।
दांत दिये क्या अन्न न देगा, इतनी करो तो विचार ॥
झूठ बोल कर माया जोड़ी, कीने पाप हजार ।
यांही छोड़ आप बने चलते, पापों का सिर धर भार ॥
झूठ बिसार सत्य जिन पकड़ा, सो जन होगये पार।
यह विश्वासी कहत सुन चितमों, सत्यही का करो व्यवहार॥

भजन ३५१.

हरि प्रेमसुधा जिसने है पिया, उसे अन्य पियास रती न रही।
दुक दुर्मति ताप न गात दहे, उसके मनमें अति शांति भई॥
शुभ सत्य उपदेश जो अन्न चखे, अपराधकी भूख उसे न रही
दिन रैन हृदय हरि नाम भजे, अति प्रेम सहित प्रभु गीत कही
उपकारकी माला जिसने फेरी, उन्हें लोभ विकार सके न लई
जिन रामपरायण देह करी, धन प्राण सबहि सत्पन्थ दई॥
सोई निर्मल बुद्धि सदा विचरे, उन्हें काम और क्रोध सके न लई
जिन प्रीति करी प्रभु चरनन में, उनकी महिमा अति ऊंच भई।
हरि नाम निरंतर जो सिमरे, तिनकी गति मोपै न जाय कही॥

स्तोत्रम् ३५२.

नमो देवराया नमो ज्ञान सिंधो ।
नमो दीनानाथा नमो दीनबन्धो ॥
नमो निर्मला चिद्रुपा निर्विकारा ।
नमः सर्वशक्ते नमो हे उदारा ॥
नमो विश्वकर्ता नमो विश्वपाला ।
नमो मायबापानृपाला कृपाला ॥
नमो सौख्यकन्दा नमो विश्वभूपा ।
नमः सच्चिदानन्द शांतिस्वरूपा ॥

भजन ३५३.

हमारो मन लागो हरि जी में ॥ टेक ॥
हाथ इकतारा मुखे कर्तारा, यह सारा मुल्क जागीरी में ॥
घर घर नाम जपाऊं हरि का, सब घर है मेरा जगीरी में ॥
जा सुख बंदा है हरि भजन में, सो सुख नहीं अमीरी में ॥

भजन ३५४.

जबसे तू ने रूप दिखाया, तब से मैंने आनन्द पाया ।। टेक
साचा बंधू देखके तुम में, सब कुछ अपना तुम्हें बनाया ।
तुझ को ही अब सार जानकर, दिल असार से मैंने हटाया ।।
तव शक्ति ने आकर मुझसे दिल की दुनिया को उलटाया ।
नई जिंदगी पाई मैंने, धन्य प्रभु जी तेरी दाया ।।

भजन ३५५.

कीजे नाथ हमारे हृदय, कुंज में विहार ।
रहिये सदा साथ प्यारे, प्राण पति प्राणाधार ।। टेक।।
बैठ प्रेम तटिनि तीरे, आनन्द अश्रु नयन भरे ।
तुम्हारे चरण धोएं प्यारे, ऐसे भाग्य कहां हमार ।।१।।
मिल मनोवृत्ति बाला, बनाए भक्ति पुष्प माला ।
तुम्हारे कंठ में धरें, करें पूजा उपहार ।। २ ।।
तुम्हारे निवास से, हृदय शुन्य बन जैसे ।
बने हैं नन्दन बाग, स्वर्गीय मनोहार ।। ३ ।।

भजन ३५६.

प्रेम दा उलारा प्रेम डाडा प्यारा ।

प्रेम कीना धन्ने जिने ठाकर मन्ने जा बैठे बन्ने । प्रेम ॥१॥

प्रेम कीना मीरां मां आखां मारां ।

बाप आखे चीरां रल गई फकीरां ॥ २ ॥

प्रेम कीना लोई फकीरे वेचया शरीरे ।

भोजन कीना नीरे संत दा प्यारा । प्रेम ॥३॥

प्रेम कीना गोपीचंद ने छोड़या राज रङ्क ने ।

कीना जोग पसंद ने कर बैठा किनारा । प्रेम० ॥४॥

प्रेम कीना पूरण भगत ने छोड़या ।

झूठ जगत ने हो बैठा न्यारा । प्रेम० ॥ ५ ॥

प्रेम दे प्याले पीन करमा वाले ।

होगये लालो लाले प्रेम दे प्याले । प्रेम ॥ ६ ॥

प्रेम जदों चड़दा किसी नहीं जे ।

पुछदा लय माल मुठदा । प्रेम० ॥ ७ ॥

प्रेम जे कोई जाने रंग मौजां माने लग जाये ठिकाने ।

प्रेम दे प्याले पीन करमां वाले । प्रेम० ॥८॥

भजन उपदेश ३५७.

जिन्दे करले प्रभु को याद मलोगे तलियां ।
जिन्दे करले साहब नूं याद मलोगे तलियां ॥
जिस डाल दे पत्ते सुक जांदे ।
फिर ना लगदियां कलियां ॥ मलोगे०
इक भर आंइयां इक भर चलीयां ।
इक अदवाटे खलीयां ॥ मलोगे तलियां०
पल विच राजे राज करत हैं ।
पल विच रुलदे नी गलियां ॥ मलोगे०
पल विच सईयां सीस गुदायें ।
पल विच जुलफां रुलियां ॥ मलोगे०
राम ते लक्ष्मण दोनों भाई ।
सीता जेईयां छलियां ॥ मलोगे तलियां०
अर्जन भीष्म महाबल जोधा ।
काल ना टलिया बलियां ॥ मलोगे०
इक लख पूत सवा लख नाती ।
उस रावन घर दीवा ना वाती लिखयां मुलना टलियां ॥
लंका कोट समुंदर खाई ।

उस मूरख ने खबर ना पाईयां ॥ मलोगे०
काल बली सब पर आवे ।
रहेना राजा रानीयां ॥ मलोगे०
कहे दासी रुकम प्यारी ।
हरभज निरमल होइयां ॥ मलोगे०
कहो नानक हरी के भजन बिना ।
खाक मिट्टी विच रलियां ॥ मलोगे०

भजन ३५८.

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद ।
जिस का यश नित्य गाते हैं गांधर्व गुनीजन धन्यवाद ॥
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ २ बार मुनी जन धन्यवाद ॥ २ ॥
करते हैं जंगल में मंगल पक्षीगण हर शाख पर ।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ॥ ३ ॥
कुओं में तालाब में सिन्धु की गहरी धार में ।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जल चर धन्यवाद ॥ ४ ॥
शादियों में जलसियों में यज्ञ और उत्सव के आदि ।
मीठी स्वर से चाहे कारे नारी नर सब धन्यवाद ॥ ५ ॥

गान कर अमींचन्द भजनानन्द ईश्वर स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोते कान धर २ धन्यवाद ॥ ६ ॥

भजन ३५९.

प्रभु को याद कर प्यारी, वही तेरा सहारा है ।
वही माता वही पिता, वही मित्र प्यारा है ॥
सबही के बस रहा अन्दर, सब से वह न्यारा है ।
जगत में होरहा जो कुछ, उसी का चमत्कारा है ॥
वही दाता सब जगत का, खुला कैसा भंडारा है ।
उसी के गुणों को गावोरी, वही प्रीतम प्यारा है ॥
उसी की शरन आई हूं, भरोसा मुझ को भारी ।
उसी को याद कर प्यारी, वही तेरा सहारा है ॥

भजन ३६०.

प्रेम ने तख्ता मेरे जीवन का ही पलटा दिया ।
क्या मैं बनना चाहता था मुझे को क्या बना दिया ॥
आरजू थी दिल में कि दुनिया की दौलत जोड़ लूं ।
फानी दौलत मंदों का मुझ को हशर दिखला दिया ॥

नाम और इज़्ज़त का भूखा देखकर उसने मुझे ।
प्रेम की एक घूट से इस भूक को भी मिटा दिया ॥
खुद पसन्दी खुदरवी खुदबीनी से मुझको निकाल ।
नम्रता अधीनता की खाक पर बिठला दिया ॥
पहले थी डिलल्हल यकीनी की गली में बूदो बाश ।
प्रेम ने विश्वास के कूचे में लाके बसा दिया ॥
उड़ती थी खुद मतलबी की खाक दिल के खेत में ।
शान्ति के जल का छींटा प्रेम ने बरसा दिया ॥
ज़िंदगी की ज़िंदगी है प्रेममय कर उस से प्रेम ।
प्रेम ने विश्वासी को यह मूल मन्त्र सिखा दिया ॥

भजन ३६१.

बहिनो धर्म की नैया बचा लेना री,
डूबी जाती किनारे लगा लेना री ।
मिल आपस में सब बहिनें बनो,
एक दूजी की सब सहाय बनो ।
पुरुपार्थ का बीड़ा उठा लेना री ॥ डूबी० ॥
यह जो धर्म्म की नैया हमारी है,

पड़ी बीच भंवर मंझधारा के है।
कोई ऐसी तजवीज बना लेना री ॥ डूबी० ॥
कीनी पापों से नैया जो भारी है,
हुई इस लिये बहुत लाचारी है।
कर्म धर्म के चप्पू लगा लेनारी ॥ बहिनो० ॥
छूटी नैया से जो है जुदाई हुई,
गोते खा २ के बहुत रुसुदाई हुई।
बांह पकड़ के साथ मिला लेना री ॥ डूबी० ॥
गुरु आए पाप मिटाने को,
भगत आए विरोध गवाने को।
इस देश की दशा सुधारने को,
तुम कदम न पीछे हटा लेना री ॥ डूबी० ॥

भजन ३६२.

सानूं मिलजाई आके मेरे प्रीतम प्यारे।
तेरी वाट वडीकां, थके नैन हमारे ॥ सानूं० ॥
दिलनूं धीर ना आवे, खान पीवन ना भावे ॥
रो रहाइ मैं मारा नैनी जान फुवारे ॥ सानूं० ॥

तेरे बाज मेरा तनमन तड़फे, जोमेरे दिलनूं चैनना आवे॥
सारी रात गुजारी, बैठी गिनदीनूं तारे ॥ सानूं० ॥
बांकी चाल जो तेरी, लेगई जिन्दड़ी जो मेरी ।
तेरी रमज निहारी, सीने बैंसद मारे ॥ सानूं० ॥
बसी बांस की पोरी, सीने करगई मोरी ।
सारे जखमी हैं भारी, तेरे प्रेम के मारे ॥ सानूं० ॥
जी मैं औगन हारी, तुसी बशकन हारे ।
कहँदे ऋषि मुनी सारे ॥ सानूं० ॥
दासी अरजां जो करदी, तुज से दूर ना रहदी ॥
लालेई चरना दे नाले ॥ सानूं० ॥

भजन उपदेश ३६३.

मीरां जैसी धीर जी कोई कर दिखलाओजी ।
मा पिया मीरा नूं घर से निकाला धक्के देदें नी सक्के वीर॥जी०
सौरियां मीरां नूं बहार निकाला सिर पर दे फटी लीर॥जी०
खान पान सब बन्द करादित्ता पैरीतां पाये जंजीर ॥ जी० ॥
एक पल मीरां चुपवी ना करदी हरदम कहे रघुवीर ॥जी०
मेरा निया सच्चा जे प्रभुजी, करेगा छानेगा दुधनीर ॥जी०

सौरे पेके छोड़ गये नी मिल गया सच्चा कबीर ।। जी०।।
प्रेम पियाला संतां ने दित्ता मन विच आगई धीर ।।जी०।।
दासी तेरी पेईवे वडीके मीरांबाई पेइवे वडीके बैठी जमनादेतीर

भजन ३६४.

आमोलक राम नाम, प्यारे जिन जपियां सो तर गये ।
औरन को वह तारे ।। आमोलक० ।।
तेरा कीता मैं जातो नाही मैनूं जोग कीतोई ।
मैं निर्गुणहारे को गुन नाहीं, आपे तरस पियोई।।आमोलक०।।
तरस पियां मैं रहमत होई, सतगुर साजन मिलया ।
नानक नाम मिले तां मैं जीवां, तनमन थीवे हरया।।आ०।।

भजन कीर्तन ३६५.

ब्रह्मराज की सुनो आती है यह आवाज ।
ब्रह्म प्रेम पाके सदा करो पुण्य काज ।। ब्रह्म० ।।
अपनत छोड़ो २ रे पुण्य जीवन हासिल करोरे ।
खोलो आंख देखो ब्रह्म शक्ति अवतीरन ।। ब्रह्म० ।।
दूर करो अन्धकार काटो संसार बन्धन ।
जीवन मैं करो वैराग विश्वास सेवा ।। ब्रह्म० ।।

ब्रह्म कृपा देखो बोलो जय ब्रह्म आज ।
दुखमय शोक पाप से चाहते हो जो उधार ।
अपनत छोड़ करो ब्रह्म शक्ति अधिकार ॥ ब्रह्म० ॥
ब्रह्म धर्म का अंकुर आपने आप भीतर ।
देखोगे बोलोगे सब जय २ विश्वराज ॥ ब्रह्म० ॥
गफलत छोड़ो पाप से मुंह मोड़ो ।
प्रभु इच्छा को दो अधिकार ॥ ब्रह्मराज० ॥

भजन ३६६.

मेरी बीत गई उमरां सारी प्रभु ।
सारी प्रभु तुझपर वारी प्रभु ॥

काम क्रोध और लोभ मोह है हंकार रखदी बलकारी॥प्रभु०॥
आशा तृष्णा चिंता अधिक तीन रिपु हैं भारी ॥ प्रभु० ॥
तनमन से हरी २ जपले आगे है मौंजल भारी ।
तैनूं छोड़ कहां अब जायें, तेरे बाजों मैं हूं निकारी ॥प्रभु०॥
जैसे रंग मजीठा अन्दर तैथों मैं नहीं निहारी ।
तेरे दर्शन की मैं हूं प्यासी दर्शन देदेवीं एकवारी ॥प्रभु०॥
चांद सूरज और मुशाफिर तारे विचे पृथिवी सारी ।

प्रभु प्यारे विराज रहे हैं जिनकी कला है आपारी ॥प्रभु०॥
मीरांबाई चरनों की दासी जावां पिता बलिहारी ॥ प्रभु० ॥

भजन ३६७.

गोविन्द २ बसे मेरे मन गोविन्द २ बसे जी ।
जहर प्याला तैनूं राने ने भेजा पीले नी मीरां रंगरती जी ॥
डबिया में राने नाग जो भेजा फुलांदाहार पिया दिसेजी ॥
सन्त कहे मीरां कुलका दीवा भाई कहे कुल पट्ट जी॥गो०॥
मैं तो चली सन्तन संग में भावें जगत् पिया हंसे जी॥गो०॥
मैं ना बसी तां क्या हुआ जी सारा जगत् पिया बसेजी॥गो०
जाओ भाइयो घर आपने जाओ मैं घर संतांदा चावजी॥गो०

भजन ३६८.

न खाली छोड़ो इस मन को
सिमर ले हरदम भगवन को ।
मन खाली ऐसा बुरा जैसे मरद बेकार ।
या बन जावे चोर वो या होवे बीमार ॥
लगे पापों की चिन्तवन में ॥ न खाली ॥ १ ॥

मन को खाली पावे जब दे उसको यह कार ।
स्वास २ हरी नाम रट एक अक्षर ओंकार ।
रखो जो दृढ़ ऐसे हो प्रण को ॥ न खाली ॥ २ ॥
झूठ पाप और दुरमति मत आनंद पास ।
यह तीनों ही करत हैं धर्म कर्म का नाश ।
घटाते यही हैं धन को ॥ न खाली ॥ ३ ॥
पढ़ले विद्या वेद की प्रगट होवे ज्ञान ।
दर्शन होवे ब्रह्म का तबी होवे कल्यान ॥
शाम करले इस साधन को ॥ न खाली ॥ ४ ॥

भजन ३६९.

हरी के भक्त जन प्यारी बड़ी मुशकिल से मिलते हैं।
न कहते हैं न सुनते हैं नहीं दिल जिन के हिलते हैं।
करी प्रह्लाद ने भक्ति तनो मन धन को वारा है।
नहीं विश्वास को छोड़ा असुर सभ देख जलते हैं।
न खाने से न पीने से नहीं कुछ नींद से हासल।
नहीं है शौक दुनिया का तेरी भक्ति से पलते हैं।
दुखाते हैं न उन को भी जो आते जीव पावों में।

भरे अमृत से दिल जिनके वह मांनिद चांद चलते हैं।
प्यारी कर साफ दिल अपना तभी प्रीतम मिलते हैं।
सफ़ाई बिन नहीं मिलती वह रहते दिल के दिल पै हैं।

भजन ३७०.

ऐसा समा फेर ना मिलेगा फेर न मिलेगा बन्दे।
कर अक़रार आयो जग भीतर, लग गया झूठे धंदे।
कर लै आज करन दा वेला, औसर नाही लम्बे।
जिन लोगन लई पाप कमावे, सो नहीं आवन तेरी वंडे।
अगला रस्ता साफ न कीता, होर विछायो नी कंडे।
आवेगा काल बहुत दुःख पावे जद जम मारन डंडे।
पुन्यदान कुछ दया न कीनी कंम चा कीते नी मंदे।
साध संगत मिल हर जस गा लै, ताप मिटे होवें ठंडे।

भजन ३७१.

वृती दे भाग जाग पै मन फेर भगती बल आगिया।
भवसागर विच डुबिया मनुया, सत गुरां आनके संभालिया।
सतसंग रूप जहाज बनाया, ज्ञान विराग वंज लालिया।
निसचा वायु नाल चलाया, धर्म दे बन्ने नाल लालिया।
जसमत उतरो मुक्ति द्वार में पूरण ब्रह्म यह पालिया।

भजन ३७२.

अबके बिछड़े फेर ना मिलेंगे दुनिया दर्शन मेला है ॥टेक॥
जैसे पतर डाल से टूटे लगना फेर ना दुहेला रे ।
क्या जानूं कहां जाय पड़ेंगे लगत पवन का रेलारे ॥अब०॥
जैसा नदी २ पै नौका जुड़ बैठा सब मेलारे ।
आप २ वो चले जायंगे कहीं गुरू कहीं चेलारे ॥ अब० ॥
कौड़ी २ माया जोड़ी संग चले नहीं धेलारे ।
अन्त समय तेरे काम न आवे जायेगा हंस अकेलारे ॥अब०॥
क्या राजा क्या शाह बादशाह छोड़े जात तबेलारे ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरका नाम सुहेलारे ॥अब०॥

भजन ३७३.

प्रभु मैं दीन हूं इक तेरा पाप ने आय मुझे घेरा ।
पाखण्डों में रम रहा किया ना कुछ भी काम ।
वृथा जन्म गँवा लिया लिया न तेरा नाम ।
सोच है मुझको बड़ी भारी पाप में रहा मेरा डेरा ॥प्रभु०॥
धन दौलत को जोड़िया इस ही में सुख जान ।
परमानन्द न खोजिया मैं मूर्ख नादान ।

बुधि मेरी गई सभी मारी, ज़िकर सब छोड़ दिया तेरा।प्रभु०
जहां धर्म की बात हो मन मेरा घबराये ।
बुरे कर्म में पापी मन दौड़ा दौड़ा जाय ॥
हया और शर्म खोई सारी सभी कुछ नष्ट हुआ मेरा ॥ प्र०॥
विषय भोग में रम रहा किया न प्रभु मे हेत ।
चलती बारी मूर्खा अब तो प्रभु को चेत ॥
झूठे यह हैं सुख संसारी लगाया तूने जहां डेरा ॥ प्रभू०॥
भवसागर के बीच में नाव पड़ी मझधार ।
राखो दीनदयाल जी सूझत वार न पार ॥
विपत मेरे सिर पर पड़ी भारी किनारे लगे मेरा बेड़ा ॥प्र०
मृगतृष्णा की तरह दुनिया का है हाल ।
जल्दी तोड़ो हे हरि पड़ा विकट जंजाल ॥
आस है एक तेरी भारी हटा अब उससे यह मन मेरा ॥ प्र०
तुही एक रक्षपाल है तेरे ही एक दौर ।
जैसे काग जहाज में सूझत और न ठौर ॥
देखूं इक ज्योति तेरी प्यारी रहे तुझमें ही यह मन मेरा ॥प्र०

———

भजन ३७४.

तुम्हारी गत जानी न जाय, मोरे प्रभु जी ॥
हरिश्चन्द्र सतवादी राजा, बोले सतकी वाणी ।
सो कीन्हें मरघट के भर्ता; भरे नीच के पानी ॥
तुम्हारी गत जानी न जाय० ॥
अजी कभी तो राजा राज करत है, कभी फिरें भिक्षारी ।
कभी तो गाला डूब मरे हैं, कभी सिला तरानी ।
तुम्हारी गत जानी न जाय० ॥
बड़े २ राजा की बेटी जोगी जोग बटानी ।
कभी तो केरी भूख मरे हैं, भरे नीच घर पानी ॥
तुम्हारी गत जानी० ॥

भजन ३७५.

सानूं जी लाल लबा मर २ के ।
जिन्द जान तली पर धर के ॥ सानूं ॥
एस जी लाल दी कीमत भारी ।
मैं दे ना सकांगी बिचारी ॥ सानूं० ॥
एस जी लाल नूं प्रखन वाला ।
कोई दुनियां में होवे निराला ॥ सानूं० ॥

असां जी पड़ियां नेक कतावां ।
जिन्द फँस गई विच अजावां ॥सानूं०॥
एस जी लाल को रखना बचाके।
सत संग में बैठ के विचार के ॥सानूं०॥
दासी की विनती यही है ।
हीरा जन्म ना हारना ॥ सानूं० ॥

भजन ३७६.

गुरु नानक नानक करदी तार मरदाने दी ॥ तार० ॥
सारी दुनियां भई दिवानी करदी तार मरदाने दी ॥ तार०
करदी मूल न डरदी तार मरदाने दी ॥ तार० ॥
सुनके दुनियां बावरी होई भुल जांदी सुध घरदी ॥ तार० ॥
प्रेमदे बान जिगर विच लावे दुखियांदे दुख हरदी ॥तार०॥
सभना ताई करे विरागी सुन २ खलकत डरदी ॥ तार० ॥
निन्दक ते हंकारी दे दिल टुकड़े २ करदी ॥ तार० ॥
सच्चे प्रभु जी दे नाल मिलावे प्रेम दिलां विच भरदी॥तार०॥
बादशाह नू तखतों लहाके पल विच फकर करदी ॥तार०॥
धर्मराज दे नरकां बिचों पापियां बाहर करदी ॥ तार० ॥

प्रेम दे विच दीवाना करके त्रैलोकी बस करदी ।। तार० ।।
कारू जैसे करके विरागी लू लू विच ठंड भर दी ।। तार० ।।
पल भर वावे नानक जीदा नहीं दुख हिजर दी ।। तार० ।।

भजन ३७७.

मैं रसता कर रही साफ राम यही रसते आवनगे जी
मैं मनूयाकर लवां साफ राम मेरे मन विच आवनगे ।।
मैं तन दा बनावां खारा मन माजा हथ बुहारा ।
मेरी करनी दा कड़ा सारा लोक सिर आन चुकावनगे ।।
जी मैं रसता इस तन ने दूर होजाना जिदा जग रहे ठिकाना ।
करनी दा बोज उठाना पाप फेर परे पर कावनगे ।। मैं०
मैं शरू तो राम ध्यावां मन पापी नूं समझावां ।
संतां दी टहल कमावां संत फेर जुगत बतावनगे ।। मैं०
मैं स्वासा दी बना लेई रूडी विशयां दा गोया ।
तुड़ी झाड़ दे रही सुरती चूड़ी संत फेर आन बतावनगे ।। मैं०

भजन ३७८.

जो हरि से प्रीति लगाता है,
वह परमानन्द को पाता है।
नहिं भय वह काल से खाता है,
नहीं दिल में कभी घबड़ाता है ॥
वह तेज स्वरूप हो जाता है,
चेहरा भी चमक दिखलाता है।
दुनिया में सब को भाता है,
वह महा पुरुष कहलाता है।
नहीं कोई क्लेश उसे आता है,
नित निर्भय हरियश गाता है।
जो हरि से प्रीति लगाता है,
वह परमानन्द को पाता है ॥
जो ईश्वर को बिसराता है,
दुनियावी लुत्फ़ उठाता है।
लज्ज़त चन्दरोज़ा पाता है,
फिर अन्त समय पछताता है ॥
खन्ने वह ही एक दाता है,

जो सब को रिज़्क पहुंचाता है ।
वही कारन करन विधाता है,
पापों से हमें बचाता है ॥
वह सब का पिता और माता है,
यह शास्त्र हमें सिखलाता है ।
जो हरि से प्रीति लगाता है,
वह परमानन्द को पाता है ॥

भजन ३७९.

प्रीतम तेरे पास बसदा ढूँडन कित्थे जावना । प्रीतम०
गली ते बाज़ार ढूंडी, शहर ते दयार ढूंडी ।
घर २ हजार ढूंडी पता नहीं पावना ॥ प्रीतम० १ ॥
मक्के मदीने जाइये, मत्थे जा मसीत घसाइये ।
उच्ची कूक बांग सुनाइये, मिल नहीं जावना ॥ प्रीतम० २॥
गंगा भावें जमना न्हाओ, काशी ते पिराग जाओ ।
बद्री किदार धाओ, मुड़ घर आवना ॥ प्री० ३ ॥
बनो जोगी ते बैरागी, संन्यासी जगत त्यागी ।
देश ते दिसौर ढूंडी, दिल्ली ते पिशावर ढूंडी ।

भावें ठौर २ ढूंडी किसे न बतावना ॥ प्री० ३ ॥
प्यारे से न प्रीत लागी, भेस की वटावना ॥ प्री० ४ ॥
भावें गलमाला डाल, चन्दन लगाओ भाल ।
प्रीत नहीं प्यारेनाल, जग नूं दिखावना ॥ प्री० ५ ॥
मोमनांदी शकल बनावें, काफरां दे कंम कमावें ।
मत्थे ते महराव लगावें, मौलवी कहावना ॥ प्री० ७ ॥
'खन्ना' कहें वार वार, समझ पियारे यार ।
साईं नाल करके प्यार, अन्त मर जावना ॥ प्री० ८ ॥

भजन ३८०.

किस विध उतरांगी पार नी मैं ।
अपनी कमाई दा खर्च न पल्ले, देवे न कोई उधार ।
पैंडा बिखड़ा राह अवलड़ा, शौह वगदा विचकार ।
ठाठां मारे खाये उलारे, दिस्से न पार उरार ।
घाट पत्तण दी दोहों तर्फी, बैठे नी ठेकेदार ।
सोई लंघ २ जाण मुसाफर, देण महसूल जो तार ।
या जिन्हां लीता पास कमाई दा, कौन उन्हां रोकनहार ।
मैं तत्ती दे औगुण भारी, खोटी दशा खोटी कार ।
कोई न बनता जामन मेरा, जाणन सब बुरयार ।

निरास वे आस खलोती, करदी हां रा २ पुकार ।
'गंगाराम' विपदा अति दुस्तर, लाज रखे कर्तार ।

भजन प्रार्थना ३८१

तुम शरण प्रभू की आवो ।
धीरज मन में अपने धारो , मन चंचल ठहराओ ।
सारे जग का जो स्वामी है, उससे प्रीति लगाओ ॥
एक उसी पर निश्चय रक्खो , क्यों मन को भरमाओ ।
हृदय नगर में करो खोजना , मत कहिं आवो जाओ ॥
काम क्रोध और लोभ मोह में , चितमत कभी फंसाओ ।
सच्चे भक्त बनो ईश्वर के , ब्रह्मतत्त्व को पाओ ॥
वैर भाव को मन से त्यागो , सब को मित्र बनाओ ।
केवल सुखको पाया चाहो , गुण ईश्वरके गाओ ॥

भजन ३८२.

नेक कमाई कर कुछ प्यारे , जो तेरा परलोक सुधारे ।
इस दुनिया का ऐसा लेखा , जैसे रात को स्वप्न देखा ॥
ज्यों स्वप्ने में दौलत पाई , आंख खुली तो हाथ न आई ।
कुटुम्ब कबीला काम न आवे , साथ तेरे सत्य धर्महि जावे ॥

सब धन दौलत पड़ा रहेगा , जब तू यहां से कूच करेगा।
तोशा कुछ नहीं सफर है भारा, क्योंकर होगा तेरा गुजारा।
अबतक गाफिल रहा तू सोया, वक्त अमोल अकारथ खोया॥
टेढी चाल तु चल्ला भाई, पग पग ऊपर ठोकर खाई ।
खूब सोच ले अपने मनमें, समय गँवाया मूर्खपन में ॥
यदि अब भी नहिं यत्न करेगा, तो पछिताना तुझे पड़ेगा।
कर सतसंग ओ विद्याध्यन, तब पावे तू सुख औ चैन ॥
एक प्रभू बिन और न कोई, जिसके सुमिरे मुक्ति होई ।
उसी का केवल पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा मारा ॥

भजन ३८३.

चुनरी मेरी रंग डारी, मेरे सतगुर है रंगरेज ॥
भाव के कुंड नेह के जल में, प्रेम रंग दई बोर।
जिसकी चास लगाय के, खूब रंगी झक झोर ॥
स्याही रंग छुड़ाय के, दिया मजीठा रंग।
बूंद पड़े ठहरे नहीं, दिन दिन होत सुरंग ॥
सत्गुर ने चुनरी रँगी, सत्गुर चतुर सुजान।
सब कुछ उनको वारदूं,तन मन धन अरु प्राण ॥

कहें कबीर चुनरी रंगी, गुर मुझपर हुए दयाल।
शीतल चुनरी ओढ कर, मग्न भई औ निहाल॥

भजन ३८४.

तू होजा फकीर छड़दे दुनियां वाले मान नूं।
तू बनजा फकीर छड़दे दुनियां वाले मान नूं॥
रोड़ा होरहो बाटदा तज मनका अपमान॥ छड़दे०॥
रोड़ा हुआ तो क्या हुआ पांदी को दुःख दे।
हरजन ऐसा चाहिये ज्यों धरनी में खे॥ छड़दे०॥
खे हुई तो क्या हुआ उड़ २ लागे अंग।
हरजन ऐसा चाहिये ज्यों पानी सरभंग॥ छड़दे०॥
पानी हुआ तो क्या हुआ ठंडा तत्ता हो।
हरजन ऐसा चाहिये ज्यों हरि जैसा हो॥ छड़दे०॥

भजन ३८५.

माये नी मैं तो प्रेम दिवानी॥
मेरा दरद न जाने कोई॥ माये०॥
दुखिये की गति दुखिया ही जाने और न जाने कोई॥माये०
जिस तन लगिया सो तन जाने, कौन जाने पीड़ा होई॥माये०
राजद्वारे जन्म जो लीना, ये कर्म लिखे सो होई॥माये०॥

कह मीरां सुन भोलिये माये, जो मैंने सतसंग लेजाये ।
दरदी मेरा है सोई ॥ माये नी० ॥

भजन ३८६.

मत बांधो गठड़िया अपजस की ॥
सुकृत कर ले राम सिमर ले को जाने कलकी ॥ मत० ॥
इस देही के भीतर हंसा सब खुशिया दिल की ॥ मत० ॥
जब यह हंसा निकस जासी है मिट्टी जंगल की ॥मत०॥
तारा मंडल और रवी सब हैं चला चल की ॥ मत० ॥
कौड़ी २ माया जोड़ी कर बातें छल की ॥ मत० ॥
पाप की पोट धरी सिर ऊपर, किस विध होहलकी॥मत०॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला सब दुनियां मतलबकी ॥मत०॥
यह दुनियां दिन चार दिहाड़े जैसे उस बूंदें जलकी॥मत०॥
काल जब आवत कंठ तेरा घेरत सुध ना रहे तनकी ॥मत०॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बातें चलाचल की ॥मत०॥

भजन ३८७.

बुहा प्रभु प्यारे दा मल जिंदड़ी ।
दुःख जानगे सारे टल जिंदड़ी ॥

दस्स अन्हे नूं रोय दिखावना की ।
दुख डोरे नूं आख सुनावना की ।
गुंगे हत्थ सुने हा ना चल जिंदड़ी ॥ वुहा० ॥
रस्ता दूर है पंड न चुक्क कुड़े ।
टुट् टु लक्क ते जायेंगी थक्क कुड़े ।
तेरी गिची नूं पै जाऊ वल जिंदड़ी ॥ वुहा० ॥
तैनूं जांदी नूं वी कई मोड़नगे ।
तेरे फड़ २ हथ मरोड़नगे ।
ना सुनी किसे दी गल जिंदड़ी ॥ वुहा० ॥
कई राह विच हलकां मारनगे ।
सिदो सड़की हेठ उतारनगे ।
ना देखी किसी दे वल जिंदड़ी ॥ वुहा ॥
रस्ते विच तूं धोखा खाई ना ।
घर घाट दोहां तो जाई ना ।
घरों पक्की होके चल जिंदड़ी ॥ वुहा० ॥
धुर पौंच के तूं घबराई ना ।
द्वार छोड़ किते भी जाई ना ।
बिन सिदको मिले ना फल जिंदड़ी ॥ वुहा० ॥

फड़ लेई दलीज नूं छड्डी ना ।
उच्ची बात भी मुहों कड्ढी ना ।
चाहे ला देंगे तेरी खल्ल जिंदड़ी ।। बुहा० ।।
गौरी शंकर जे मन डोलेगा ।
तैनूं बुहा कदी ना खोलेगा ।
रख सबर ते ला लऊ गल जिंदड़ी ।। बुहा० ।।

भजन ३८८.

तेनूं प्रभु लगासिया पार नी हरि नाम सिमरले ।।
नेक कमाई कर कुछ प्यारे जो तेरा परलोक सुधारे ।
इन्द्रियां नूं मारनी हरिनाम सिमर ले ।। तेनूं० ।।
धर्म विना कोई संग न जावे कहगये भगत पुकारनी।।हरि०
विषय भोग में उमर गुवाई अजे भी सोच विचारनी ।।हरि०
मानुष जन्म अमोलकहीरा मिलसी ना बारम्बार नी।।हरि०।।
ना कर गफलत पैंडाहै भारी होसिया बहुत ख्वार नी।।हरि०
मूढ मन समझे नाहीं है वह अति गँवार नी ।। हरि० ।।
विना ज्ञान जीव भक्त ना होवे पढ२सिरनूं खपावेनी।।हरि०
तीरथ यात्रा बहुत करसे विरथाही मननूं भटकावेनी।।हरि०
रात दिन मिल हरगुन गाले दासी की यही पुकारनी।।हरि०

भजन ३८९.

जिनानूं लगे नी प्रेम के बान ।
जगके भाने बावरे हैं वह अन्तरध्यान ॥ जिनाको०॥
प्रेम २ सब ही कहे प्रेम की नहीं जे पहचान ॥जिना०॥
तनमन की कुछ सुध नहीं छूट गई सब प्रीत ।
रात दिन गावत फिरे बसे पिया के चीत ॥
उन्हां को और न भावे ज्ञान ॥ जिना को० ॥
जो २ घायेल हैं प्रेम के देत नहीं कुछ हेत ।
सुन २ के गुन प्रभु के नैन नीर भर लेत ।
प्रेमियों की यही है पहचान ॥ जिना को० ॥
प्रेम खेल सब से कठिन है, खेले कोई सुजान ।
पल २ में बरछी लगे भर भर पिया के बान ।
प्रेम का होना दुर्लभ जान ॥ जिना को० ॥
सुगड़ा २ पालिया मूर्खा नहीं जे पहचान ।
कहे दासी सुन मेरी बहिना चित में बसे श्री भगवान ।
जिना को लगे प्रेम के बान ॥

भजन ३९०.

जी मैं वारे जावां सतगुरां तों ॥

मेरे भ्रम किये सब दूर । मैं बलिहार जावां पूरे गुरां तों ॥
मन लोभी तन लालचीरे भगती किस विध हो ।
भक्ति करे कोई सूरमारे धड़ पर शीश न हो ॥ जी मैं० ॥
मन कर कपड़ा तन कर धोबी श्रुति साबन हो ।
ज्ञान तलाब पर बैठके री सब रंग डालूंगी धो ॥जी मैं०॥
सतगुर ऐसे जानिये ज्यों सिकलीगर हो ।
जन्म २ के मोरचेरे छिन में दियेने खो । जी मैं० ॥
ज्ञान ने घड़ के बान मारिया लूटी पांचों पाहर ।
ज्ञान कुहाड़ा मारके री करदयों चौड़ा मिदान ॥
कौड़ी विचों हीरा जन्मिया हीरे विचों लाल ।
जोड़ मेल के किला बनाया यह पद है निर्वान ॥जी मैं०॥

भजन ३९१.

है जी अन्दर मेरे प्यारा वसदा ढूंढे केडा वीर जी ॥
पंच कोस पैंडा भारी नदियां दे नीर जारी ।
जावेगा कोई तारू तर के ऐसा डुंगा नीर जी ॥
पांच चोर करदे सैलां जिनां रोकी मेरी गेला ।
नी माल तेरा लुटिया जांदा आखिर पछतावेगा ॥

जा मैं देखा आपना घर, सुनते समाधी दर ।
हा जी चाहते हो सोहं बानी, सुखम शरीर जी ॥
दास ने ढूंढ के न्यारा पाया दिल में सुख मनाया ।
होई मन धीर जी ॥ हे जी अन्दर मेरे० ॥

भजन ३९२.

मेरा सतसंग विना जिया तरसै, आन वड़ी चौरों के नगर॥
सतसंग विना जिया तरसै ।
सतसंग विच लाभ बहुत हैं, तुरत मिला देंदा हर से ।
हरि सा हीरा हिये से विसारियो मुठीयां भरी कंकर से ।
भवसागर की लहर कठिन है, उतरेंगे पार भजन से ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, लाख चौरासी तरसें ।

भजन ३९३.

लिख सतगुरां वल पाइयां चिठियां प्रेम दियां । हां हां,
दर्शन नूं दिल तरस रहा है, नीर छमाछम बरस रहा है ।
मुड़ मुड़ पुछदी राइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥
दर्श तेरे दियां तागां मैंनूं, दिनते रातीं वडीकां तैनूं ।
प्रेम घटा दिल छाइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥

मेहर करीं तूं कलगियां वाले, आजत दुःखियां दे रखवाले॥
आ मिल दिल दियां माइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥
मेरे जहियां कितनियां माहियां दर तेरे ते ढठीयां पेइया ।
मैं भी दर पै आइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥
बशक लेई तू औगुन मेरे, आन पई हूं दर पर तेरे ।
अरजां आख सुनाइयां ॥ लिख सतगुर वल पाइयां ॥

भजन ३९४.

मैं कमली दा बेड़ा पार करीं मेरे सतगुर कलगी वालया ।
आवीं गुरु चरणीं लावीं गुरु, मैं निमानी तेरे दर ढे पइयां।
तन मन मेरा आके ठार देमीं मेरे दिलदियां जानन वालया।
रात दिने तूहीं याद रहें पल २ गुजरे विच याद तेरी ।
करके तरसदेवो दरस सानूं गुरु डुबियां नूं तारन वालया ।
मेरे जइयां गईयां लख सैय्यां तुसीं चरणीं लगाके तार लइयां।
मेरे उते वी करो मेहर पिता मैं भी तेरा ही नाम धियारहीहां।
तूहीं दिस तूहीं नजर आवें तेरा नूर दिसे जी जहूर तेरा ।
तेरे बाझ न कोई होर नजर आवे तांतांप्रेम तेरे डेरा लावेरहीयां

भजन ३९५.

इक प्रेम दी राह ना छडिये ।
जग भांवें छड्ड दइये (टेक)

मन्दी संगतां मूल ना वहीये ।
मूहों ना मन्दा कढीये ॥१॥ जग भांवें०
जीव जन्तु ना मूल सताइये ।
मन दी गरदन वढीये ॥२॥ जग भांवें०
जग तृष्णा दे जाल तों बचीये ।
जग विषयां कोलों नठीये ॥३॥ जग भांवें०
विश्वासी उस संगत बहिये ।
जित्थे प्रीतम लभीये ॥४॥ जग भांवें०

भजन ३९६.

रंग दे नाम विच चोला, मेरा रंग दे नाम विच चोला ।
जिहां२रंग तूं भक्तांदा रंगया, असांवी तैथों वही रंग मंगया।
रंग बड़ा अनमोला, मेरा० ॥
भक्त प्रह्लाद ने रंग रंगाया, दुष्ट पिता तों नहीं घबराया ।
ओ३म् ओ३म् ही बोला ॥ मेरा० ॥
ध्रुव जी ने एह रंग रंगाया, विच जंगल दे डेरा लाया ।
ज्ञान दा रस्ता टोला ॥ मेरा० ॥
सानूं भी ओ रंग रंगादे, प्रेम भक्ति अपनी सिखलादे ।
न रख साथों तू ओहला ॥ मेरा० ॥

भजन ३९७.

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उसको शान्ति, क्यों न हो उसका मन मगन॥१
काम क्रोध लोभ मोह, शत्रु हैं यह महाबली ।
इनके हनन के वास्ते, जितना हो तुझ से कर यत्न ॥२॥
ऐसा बना स्वभाव को, चित्तकी शान्ति से तू ।
पैदा न हो ईर्षा की आंच, दिल में तेरे करे जलन ॥ ३ ॥
मित्रता सब से मन में रख, त्याग के वैर भाव को ।
छोड़ दे टेढी चाल को, ठीक कर अपना तू चलन ॥४॥
जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह जगत् ।
उसका ही रख तू आश्रय, उसकी ही तू पकड़ शरन॥५॥
छोड़ के राग द्वेष को, मन में तू उसका ध्यान कर ।
तुझ पे दयाल होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन् ॥ ६ ॥
आप दया स्वरूप हैं, आपही का है आश्रय ।
कृपा दृष्टि कीजिये मुझ पै हो जब समय कठिन ॥ ७ ॥
मन में मेरे हो चांदना, मोक्ष का रस्ता मिले ।
मार के मन जो 'केवला' इन्द्रियों को करे दमन ॥ ८ ॥

भजन ३९८.

सुमिरन बिन गोते खाओगे ॥

क्या ले करके आया जगत में, क्या ले के जावोगे ।

मुट्ठी बांधे आया जगत में, हाथ पसारे जावोगे ॥

यह तन है कागज की पुड़िया, बून्द पड़ी ढल जावोगे ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, राम बिना पछताओगे ॥

भजन ३९९.

मानो कहा यह बहिनो कुछ धर्म अब कमाओ ।

पाकर अमोल तन को वृथा ही मत गंवाओ ॥

मुशकल से फिर मिलेगा मानुष जन्म जो पाया ।

ऐसी भगती करलो कि फिर मोक्ष को पाओ ॥

तुम से जो होसकेगा ईर्षा द्वेश त्यागो ।

सब से करो भलाई नेकी की राह पर चलो ॥

भूल से भी किसी को तुम हरगिज़ दुःख न देना ।

ऐसा स्वभाव अपना प्यारो उत्तम बनाओ ॥

बुरे कर्म्म त्यागो सच्चे से मन लगाओ ।

निन्दा बखीली छोड़ो दया धर्म्म को बढ़ाओ ॥

दो दिनों की ज़िन्दगानी इसको न रुलाओ ।

आत्मा पवित्र करके शांति से दिन बिताओ ॥
दासी तूं सुनले प्यारी अब सेवा बन्दगी कमालो ॥

भजन ४००.

विषयां कोलों बहिनों लैना चित्त नूं मोड़ ।
चित्त नूं मोड़ इसनूं ईश्वर से जोड़ ॥ विषयां० १
उत्तम जन्म सी पाया, जिसनूं वृथा गंवाया ।
नहीं धर्म कमाया, दित्ता ऐवें है रोढ़ ॥ विषयां० २
माया दौलत जोड़ी बन लख करोड़ी ।
गर्दन काल मरोड़ी, चले सब कुछ छोड़ ॥ वि० ३
उच्चे महल उसारे कीते बहुत खिलारे ।
जीना चार दिहाड़े, रहना नहीं इस ठौर ॥ वि० ४
गत कर्मों की न्यारी पल में राज भिखारी ।
छडके महल अटारी, टुर पये जंगलां दी ओर ॥ वि० ५
बाल अवस्था हमारी सभी खेल गुज़ारी ।
आई युवा की जो बारी, विषयां पाया है ज़ोर ॥ वि० ६
वृद्ध अवस्था जो आई, सारी सुध बिसराई ।
रोगां लिया दबाई, होए तौर बेतौर ॥ विषयां० ७
मनुआ तद पछतावे, कोई पेश न जावे ।

सैनत नाल समझावे, करदा कोई नहीं गौर ॥ वि० ८
मोहन देवी एह कैहदी, प्रभु से वेमुख रेंहदी ।
भुलके नाम नहीं लैंदी, करदी ऐवें ही शोर ॥ वि० ९

विद्या की महिमा ४०१.

विद्या पवित्र वस्तु, विद्या महान् देवी ।
इसको जो पूजती है, होती है वह भी देवी ॥
विद्या अन्धेरे घर का, दीपक है बहन प्यारी ।
विद्या से बुद्धि उज्वल, होती है बहन प्यारी ॥
भीतर का सब अन्धेरा, विद्या से दूर होवे ।
मूर्ख गंवार इस से, निश्चय सुसभ्य होवे ॥
दुनिया का ज्ञान सार, विद्या से लाभ होवे ।
विदुषी सुपंडिता भी, ज्ञानी सुनाम होवे ॥
विद्या से मान इज्ज़त, धन सम्पदा सु-आवे ॥
पदवी बड़ी बड़ाई, इससे मनुष्य पावे ॥
विद्या विदेश बन्धु, विपदा में हो सहाई ।
पूजा जगत में सारे, इससे मिले सदाई ॥
चोरों से ना चुराई, जाती कभी यह विद्या ।
बांटी किसी से नांही, जाती कभी है विद्या ॥

विद्या वरों की दाता, विद्या है कोप बल का ।
सब से बड़ा हि ज़ेवर, विद्या है वहिन सब का ॥
बचपन मे इस लिए तुम, विद्या का लाभ कीजो ।
खुद लाभ करके उसको, औरों को दान दीजो ॥

भजन ४०२.

सोम सोम सुनो सईयो मेरीयो नी ।
सतसंग दे नाल प्रीत लावो ॥
यह संसार है वाड़ी कंडयां दी ।
रस्ता छोड़ के ओजड़ न मूल जाओ ।
मंगल मूर्ख नी बुद्धे मेरीये नी ।
तूं की लैनाई इस संसार विचों ॥
दुई छोड़ दे इन्हां दुश्मनां दी ।
कड लै खां असर असार विचों ॥
बुद्ध बुद्ध मेरी विच फरक पया ।
नी मैं देखनीयां वैनीयां गंदीयां नूं ॥
रस्ता छोड़ के ईश्वर परमात्मा दा ।
लग रही है कुड़यां धंधयां नूं ॥
वीरवार जदों नी वैराग होया ।

मैं ते आखानियां संसार छुटे ॥
भाई बन्धु कुटम्बी सब सुख देनी।
अखीं खोल के देख लै सब हैन झूटे ॥
शुकर शुकर करो भैनों मेरीयो नी।
सतसंग दा सानूं नी अधार होवे ॥
डूंगा नदी ते लहरां नी कहर दियां।
सतगुर आवे ते बेड़ा मेरा पार होवे ॥
शनीवार शरीर पया छिजदाई।
अखां देख लै बुलबुला जलदाई ॥
छडो विषय ते लवो नी अनन्द भैनो।
एथे रहन गुजारा पल झलदाई ॥
एत शांत करो मन अपने नूं।
खोटी वाशना ते परे हट जाइयो ॥
एहो वार जे आत्मा लभनें दी।
नेकी इस जहान तों खट जाइयो ॥

भजन ४०३.

जहड़े आत्मा नूं असीं ढूंढदे सां।
सोई आत्मा अपना आप मेरा।

जिस दा नाम आवरण है खेल लोको ।
जिस कंम कीता सारा चौड़ मेरा ॥
घोड़े वहन विवेक वाले ।
फड़ लीते नित छुटदे सी जेहड़े मेल मेरा ॥
जेहड़े आद अनन्त है मद सोई ।
जिस वल दृष्टि करां दिसे रूप मेरा ॥
वैरी मार असां अज शौंत पाई ।
जस गांवदा नी ए मन मेरा ॥

भजन ४०४.

दर्शन पाके नी मेरे खुल गये नैन अलाही ।
पिछले नी वनज पये सब थोथे बृथा दरब लटाई ॥
पिछले नी वनज पये सब थोथे कुंजी मूल न लाई ॥
चढके चनना ने लिया नी उजाला सूरत निरत होआई ॥
जब सतगुरां मेरीयां अंजन पाया ज्योति मे ज्योति सवाई॥
जब सतगुरां मेरियां कृपा जो कीति हरचरणां चित्त लाई ॥

भजन ४०५.

जलवा दिखा रहा है, मुझको जहूर तेरा ।
व्यापक है तू जहां में, हाजिर है हर जगह में ।

सब में समा रहा है, निर्मल है नूर तेरा ॥
कुर्बान तेरी कुदरत, बलिहार तेरी वाहदत ।
अमृत चखा रहा है, मुझको सरूर तेरा ॥
तेरा ही नाम प्यारा, जपता जहान सारा ।
गुणतेरे गारहा है, दिल में सरूर तेरा ॥
बलदेव दुःख उठाकर, खुदगर्जी को मिटाकर ।
खिदमत में आ रहा है, बन्दा हजूर तेरा ॥

भजन ४०६.

पहनो पहनो री सुहागन ज्ञान गजरा ॥
दया धर्म की ओढो चुनरिया, शीलका नेत्रों में डालो कजरा।
लाज करो तुम पर पुरुषों से, अपने पति का देखो मुखड़ा॥
सास ससुर की सेवा कीजो, अपने पति से न कीजो झगड़ा।
कहे अनाथ बिन विद्यारी बहिनों! सहती हो तुम अति दुखड़ा।

प्रार्थना ।

हे ईश्वर प्रमात्मन भगवन दीन दयाल ।
बेनती आगे आप दे करदे हां दिल नाल ॥
मात पिता दी आज्ञा ज्यूं मनदे सन राम ।
आज्ञाकारी तिवें बन करिये असीं सब काम ॥

सत्य धर्म्मा दी सड़क पर सानूं हरि चलाओ ।
आलस चोरी झूठतों हरदम हरि बचाओ ॥
बन जायें सब सूरमे सच्चे धीरयवान् ।
दूर रक्यो दोष सब झूठ लोभ अभिमान ॥
सब बहनां नाल सदा सच्चा करिये प्यार ।
मदत उन्हां दी करन नूं सदा रहिये त्यार ॥
आपकी भक्ति प्रेम में मन होवे भरपूर ।
राग द्वेष से मन मेरा कोसों भागे दूर ॥
अति अनुग्रह कीजिये सेवक अपनी जान ।
अपनी भक्ति का मोहे दीजे शीघ्र दान ॥
हाथ जोड़ विनती करूं सुनिये दीन दयाल ।
तुम लग मेरी दौड़ है तुम्हीं हो रक्षपाल ॥
विनय करत हूं आप से जोड़ के दोनों हाथ ।
रखियो लाज कृपाल हरि शरण गही मैं नाथ ॥
दीन दर्द दुःख हटावना हे प्राण अधार ।
केवल तेरा आसरा सानूं है कर्तार ॥
मन्न लैनी यह बेनती साडी बारम्बार ।
नमस्कार तुहानूं प्रभु हे पूर्ण कर्त्तार ॥

(४०७)

हम मैले तुम ऊजलॅ करते हम निरगुन तू दाता ।
हम मूरख तुम चतुर सियाणे तू सरब कला का गियाता ॥
माधो हम ऐसे तू ऐसा हम पापी तुम पाप खंडनु नीको
ठाकुर देसा ॥१॥
(रहाऊ) तुम सब साजे साजि नवाज जियॄ पिण्डु दे प्राना ।
निरगुनीआरे गुन नहीं कोई तुम दान देहु मेहरबाना ॥२॥
तुम करहु भला हम भलो न जानहु तुम सदा २ दियाला
तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु आपनेबाला ॥३॥
तुम निधान अटल सुलतान जीआजंत सभि जाचे ।
कहुनानक हम इहै हवाला राखु संतन के पाछै ॥४॥६॥

(४०८)

हरि की गति नहि कोऊ जानै ।
जोगी जती तपी पचिहारे अरु बहु लोग सियाने ॥ १ ॥
छिन महि राऊ रंक कऊ करई राऊ रंक करडोरे ।
रीते भरे भरे सखनावै यह ताको बिवहारे ॥ २ ॥
अपनी माया आप पसारी आपहि देखण हारा ।
नाना रूप धरे बहुरंगी सब ते रहे न्यारा ॥ ३ ॥

अगनत अपार अलख निरंजन जिह सब जग भरमायो।
सगल भरम तजि नानक प्राणी चरणि ताहि चित लाईयो

(४०९)

रैण दिनसु परभात तूं है ही रावणा।
जीआ जंत सरबत नाम तेरा ध्यावणा।
तूं दाता दातार तेरा दिता खावणा।
भगत जना के संगि पाप गवावणा।
जन नानक सदबलिहारि बलि बलि जावणा।

(४१०)

तूं मेरा पिता तूं ही मेरी माता।
तूं मेरा बंधप तूं मेरा भ्राता।
तूं मेरा राखा सबनी थाई तां भव केहा काढ़ा जीऊ।
तुमरी कृपा ते तुध पछाणा, तूं मेरी ओट तूंहे मेरा माणा।
तुझ बिन दूजा औवर न कोई सभ तेरा खेल अखाड़ा जीऊ
जीआ जन्त सभ तुध उपाए जित जित भाणा तित तित लाए। सभ कुछ कीता तेरा होवे नाही कुछ असाड़ा जीऊ।
नाम ध्याए महा सुख पाया। हरि गुण गाए मेरा मन सीत लाया। गुर पूरे वजीए वधाई नानक जेता विखाड़ा जीऊ॥

(४११)

प्रभु जी मोहे कवनु अनाथ विचारा ॥
कवन मूल ते मानुख करिया इह परतापु तुहारा ॥१॥
जीआ प्राण सरब के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ।
सब के प्रीतम सरब प्रति पालक सरब घटां आधारा ॥२॥
कोइ न जाणे तुमरी गति मिति आपहि एक पसारा ।
साध नांव बैठावहु नानक भव सागर पारि उतारा ॥१॥

(४१२)

दरसन देख जीवां गुर तेरा ।
पूरन कर्म होय प्रभु मेरा ॥ १ ॥
एह बेनति सुण प्रभु मेरे ।
देहि नाम करि अपने चेरे ॥ २ ॥
अपनी शरनी राख प्रभु दाते ।
गुर प्रसादि किनै विरलै जाते ॥ २ ॥
सुनहु विनऊ प्रभु मेरे मीता ।
चरण कमल वसहि मेरे चीता ॥ ३ ॥
नानक एक कहे अरदासि ।
विसरु नाही पूरण गुण तासि ॥ ४ ॥

(४१३)

तुझ बिन कवन हमारा ।
मेरे प्रीतम प्राण अधारा ।।
अंतर की विधि तुमही जानी तुमही सजन सुहेले ।
सरब सुखां मैं तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह अतोले ।।
बरनि साकऊ तुमरे रंगा गुण निधान सुख दाते ।
अगम अगोचर प्रभु अबिनासी पूरे गुरु ते जाते ।।
भ्रम भयो काटि कीये निह केवल जब ते हऊमें मारी ।
जन्म मरण को चूको सहसा साध संगति दरसारी ।।
चरण पखारि करऊं गुर सेवा थारी जाऊं लखवरिया ।
जिह प्रसादि एह भऊजलु तरिया,
जन नानक प्रिय संगि मिरीया ।।

(४१४)

गुन गोविन्द गाइयो नहीं जनम अकारथ कीन ।
कहु नानक हरि भजु मना जिहि विध जलकौमीन ।।
बिखियन सिऊ काहे रचियो निमख न होहि उदास ।
कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ।।
तरना पोईओ ही गईओ लीओ जरा तनु जीत ।

कहु नानक भज हरि मना आऊध जातु है बीति ।
त्रिरध भयो सूझै नहीं कालु पहुंचयो आन ।
कहु नानक नर बाव्रे क्यों न भजै भगवान ॥

---

(४१५)

प्रभु मेरा अंतरजामी जाणु ।
करि कृपा पूरन परमेश्वर निहचल सचु सबदु निसाणु ।
हरि बिनु आन न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनिताणु ।
सरब घटाके दाते स्वामी देहि सु पहिरणु खाणु ॥
सुरति मति चतुराई सोभा रूप रंगु धणु माणु ।
सरब सूख आनंद नानक जपि राम नामु कलियाणु ॥

(४१६)

हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि प्यारे ।
कलि क्लेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ।
सासि सासि निमख निमख दिन सुरैनि चितारे ।
साध संग जपनिसंग मनि निधानु धारे ।
चरन कमल नमस्कार गुण गोबिन्द बिचारे ।
साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥

(४१७)

मित्र प्यारे नूं हाल मुरीदां दा कहणा ।
तुधु विनु रोगु रजाइया दा ओढण नाग निवासादे रहणा ।
सूल सुराही खंजरु पियाला विंगु कसाईयांदा सहणा ।
यारड़े दा सानूं सथर चंगरा भठखेड़ियांदा रहणा ।

(४१८)

माई गुर चरणी चित लाईऐ ।
प्रभु होय कृपालु कमल परगासे सदा सदा हरि ध्याइये ।
अंतरि एको बाहरि एको सब महिएकु समाइये ।
घटि अवघटि रविआ सभु ठाई हरि पूरन ब्रह्म दिखाइये
उस्तातिकरहि सेवक मुनिकेते तेरा अंत नकतहू पाइये ।
सुख दाते दुःख भंजन स्वामी जन नानक सद बल जाइये

(४१९)

ऊठत सुखिया बैठत सुखिया ।
भउ नहीं लागै जां ऐसे बुझीया ।
राखा एकु हमारा स्वामी ।
सगल घटा का अन्तरजामी ।
सोई अचिन्ता जागि अचिन्ता ।

जहा कहा प्रभु तूं वरतंता ।
घरि सुखि वसिआ बाहरि सुख पाया ।
कहु नानक गुरि मंत्र द्रिड़ाइआ ।

(४२०)

मैं अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ।
मैं गरीब मैं मसकीन तेरा नाम है अधारा ॥१॥
करीमां रहीमां अलाह तूं गनीं ।
हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनीं ।
दरीयाऊ तूं दिहंद तूं बिसीआर तूं धनी ।
देहि लेहि एक तूं दिगर को नहीं ॥२॥
तूं दानां बीनां मैं बीचारु क्या करी ।
नामेचे स्वामी बखसंद तूं हरी ॥३॥

(४२१)

चित चरन कवल का आसरा चित चरण कवल संग जोड़िये
मन लोचे बुरयाइयां गुर सबदी एह मन होड़िये ।
बांह जिन्हां दी पकड़ीये सिर दीजे बांह न छोड़ीये ।
गुरु तेग बहादर बोलिया धर पईये धर्म न छोड़ीये ।

———

(४२२)

नावण चले तीरथीं मन खोटे तन चोर ।
इक भाओ लथी नातियां दुई भाओ चढि अस होर ।
बाहरी धोती तूमड़ी अंदर विष निकोर ।
साध भले अणनातियां चोर सि चोरा चोर ॥

(४२३)

मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ।
ऐबारिक कैसे जीवहि रघुराई ।
तनना बुनना सब तजओ कबीर ।
हरी का नाम लिख लीओ सरीर ।
जबलगुतागा बाहु उबेही ।
तब लगु बिसरै राम सनेही ।
ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ।
हरि का नाम लहिओ मै लाहा ।
कहत कबीर सुन मेरी माई ।
हमारा इनका दाता एकु ही रघुराई ।

(४२४)

छम २ वरसे मेहु प्यारिया मैंनूं तेरे मिलनदियां तांगां ।
फरीदा गलिये चिकड़ दूर कर मेरा नाल प्यारे नेहु ।
चलां तां भिजै कंवली रहां तां तुटै नेहु ।
भिजओ सिजओ कंवली अलह वरसउ मेहु ।
जाए मिला तिन साजणा तुटै नाही नेहु ।

(४२५)

करवतु भला ना करवट तेरी ।
लाग गले सुनु विनती मेरी ।
हउवारी मुख फेरि प्यारे ॥ करव ॥
दे मोकऊ कोरे कऊ मारे ॥१॥
जऊ तनु चीरहि अंगु न मोरऊ ।
पिंडु परै तऊ प्रीति न तोरऊ ॥२॥
हम तुम वीचु भइओ नहीं कोई ।
तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥३॥
कहत कवीरु सुनुहुरे लोई ।
अव तुमरी परतीति न होई ॥४॥

———

(४२६)

कानु बेगुनाइयां मारना कर कोई गुना सेई ॥
नानक आखेरे मना सुनिये सीख सेई ॥
लेखा रब मंगेसिया बैठा कड बही ।
तलबा पोशन आखिये बाकी जिना रही ॥
इजराईल फरिस्ता होसी आन सेई ।
आवन जावन सूझत नाहीं भीड़ी गल भई ॥
कूड़न खुटी नानका ओड़क सच रही । कानु० ॥

(४२७)

अखी देख न रजियां बहु रंग तमाशे ॥
उस्तति निन्दा कन सुन रोवन ते हांसे ॥ जी ॥
खादी जीबान रजियां कर भोग विलासे ॥ जी ॥
नॅक न रजिया रंजावासले दरगध सुवासे ॥ जी ॥
रंज ना कोई जीविया कुड़े भरवासे ॥ जी ॥
पीर मुरीदा पीर हड़ी सची रहिरास ॥

(४२८)

डंडौत मेरी वन्दना डंडौत मेरी वंदना ।
श्री सतगुरां जी दे आगे डंडौत मेरी वंदना ॥

डंडौत बंदना अनेक वार डंढौत बंदना अनेक वार ।
सर्व कला समरथ ॥
डोलन ते राखो प्रभु जी २ नानक दे प्रभु हथ ।
दीन दर्द दुख भंजन घट २ नाथ अनाथ ।
शरण तुम्हारी आइयो २ नानक के प्रभु साथ ॥
फिरते २ प्रभु आइयो २ भरियो तो शरनाई ।
नानक की प्रभु बेनती २ अपनी भगत लाइयो ॥
डंडौत मेरी बंदना श्री सतगुरां जी दे आगे ॥

भजन ४२९.

हरि जैसा मजेदार, कहीं देखा द्वार ।
हर घड़ी वो साथ रहे, देत है दीदार ॥ टेक ॥
माता होके जनम दे, पिता होके पोपे ।
गुरु होके ज्ञान बतावे, ऐसा है कर्तार ॥ १ ॥
आंखों की है ज्योत वही, कानों का है श्रोता ।
हियं विच बैठकर, प्रेम का संचर । २ ॥
कोई कहे निराकार, कोई कहे साकार ।
ईश्वर का सेवक बोले, वह तो अगम अपार ॥ ३ ॥

———

भजन ४३०.

सोच २ के मुसाफिर, चलना इस जग में ॥
घोर अन्धेरा, बाबुल बेड़ा, लूट न ले घर तेरारे बाबा
लूट न ले घर तेरा ॥
बांध कमर जब तक हो सवेरा, छोड़ दे यह तेरा मेरा,
राम राम जपनारे बाबा, इस जग में ॥ सोच० ॥

भजन ४३१.

प्रेम हो तो श्रीहरि का प्रेम होना चाहिये ।
जो बने विषयों के प्रेमी उन पे रोना चाहिये ॥
बीज बोकर वृक्ष के खाये यहां पर तुमने फल ।
कुछ वहां के वास्ते भी बीज बोना चाहिये ॥
मख़मली गद्दों पे सोये हो यहां सुख चैन से ।
आख़रत के वास्ते भी कुछ बिछौना चाहिये ॥
दिन गुज़ारो ऐश अशरत में यहां पर तुम अगर ।
रात को सिमरन हरि का करके सोना चाहिये ॥
आरजू दर्शन की भगवन भक्ति बिन मिलते नहीं ।
दूध से माखन जो चाहो तो बिलोना चाहिये ॥

भजन ४३२.

आओ वहिनो वहिनो प्यारी ईश्वर के सब गुन गावें
प्रभु तू मेरा परम सखा है वली २ तेरे ही जावें ।
हे जननी जगत की माता तुम संग प्रीत लगावें ।
प्रेम करें हम सत गुनी से किस विध दरशन पावें ।
गोद में खेले तेरे निर्भय भक्ति से शीश नवावें ।

भजन ४३३.

हर गुण गाइये माए २ ।
आनन्द पाइयो नी सइयो २ ॥
भक्ति करिये माए २ ।
पार उतरिये नी सइयो २ ॥
दीना वन्धु माए २ ।
करुणा सिन्धुनी सइयो २ ॥
करनी करिये नी माए । २
इस विध तरिए नी सइयो । २ ॥
चारे कूटां माए २ ।

व्यापक सारे नी सइयो । २ ।।
भगत कहंदे नी माए ।
वेला वहेन्दा नी सइयो । २ ।।

भजन ४३४.

रंग वाले देर क्या है रंग दे ।
सांवरिया रंग रंगी रंग दे ।।
तव मैं जानूं तेरी रंग अन्दाजियां ।
सारे रंगों से निराला रंग दे ।
मैं भी तेरा रंग भी सब हैं तेरे ।
जैसा चाहे मुझ को वैसा रंग दे ।
तूही तू जिस रंग में आवे नजर ।
तूं है मालिक जैसा चाहे रंग दे ।

भजन ४३५.

टेक—मैं तेरी, मैं तेरी, मैं तेरी वे प्रभुजी ।
बुद्ध हीनी सुद्ध लीनी तूं मेरी वे प्रभुजी ।।
गुण गावां, फल पावां, तर जावां वे प्रभुजी ।
तूं दयालु कृपालु पतिपालक वे प्रभुजी ।।

मैं झल्ली तुर चल्ली ते इकल्ली वे प्रभुजी ।
हथ खाली देह जाली बुरे हाली वे प्रभुजी ॥
तू दाता पिता माता, है विधाता वे प्रभुजी ।
मैं विचारी औगुण हारी ते भिखारी वे प्रभुजी ॥
मेरी नैय्या वेहण पैय्या रख लैय्या वे प्रभुजी ।
जिन्द जांदी गोते खांदी, ते पछतांदी वे प्रभुजी ॥
तूं करता दुःख हर्ता तू ही भर्ता वे प्रभुजी ।
पभु आया समझाया तां मैं गाया वे प्रभुजी ॥
असीं राही कट फाही सहाई वे प्रभुजी ।
सच्चिदानन्दा काटो फंदा देओ अनंदा वे प्रभुजी ॥

भजन ४३६.

मोरे प्राणपति से जाय कहियो,
दर्शन की लग रही अभिलाषा ।
निश दिन तरसत हैं मोरे नैना,
ज्यों जल बिन चातक प्यासा ॥
तुम बिन सब कुछ फीकी लागत,
आभरण भूषण मलमल खासा ।

क्षमा करो अपराध पीतम,
अब अपनी शरण में देओ वासा ॥
धन २ यौवन धन है संयोगन,
जिस की पति पूरी करे आशा।
दास कहाये किस के डिग जाय,
'अमीचन्द' दासन अनुदासा ॥

भजन ४३७.

मेरा सत्संग बिना जिया तरसै, आन बड़ी चौरों के नगर।
सतसंग बिना जिया तरसै ।
सतसंग विच लाभ बहुत हैं, तुरत मिला देंदा हर से ।
हरि सा हीरा हिये से बिसारियो, मुठियां भरी कंकर से ।
भव सागर की लहर कठिन है, उतरेंगे पार भजन से ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, लाख चौरासी तरसें ।

भजन ४३८.

पभु कैसा है अपरम्पारा, जग बनाया सुख भण्डारा । टेक–
जिन के गुण रवी सकारे, शीशु वायु अग्नी सतारे

शट रीतु और बन सारे, गा गा के नेती पुकारे,
गई गुजर अन्त महन्त, योगी सर सन्त,
अन्त नह नकारा (१)
जल और जमीन बनाके, आसमान इधर लटका।
बिच बिच में तारे लगाके, सब नेमत रहे चलाके।
कई कोटि कोस से दूर, चमक रहा नूर हुकम के द्वारे (२)
क्या अद्‌भुत खेल बनाया, पत्थर से पानी बहाया।
कांटों में फूल समाया, लकड़ी से फल उपजाया।
कुदरत से मानो जैसे, पुतले कैसे बनाये हज़ारा (३)

भजन ४३९.

प्रार्थना है मेरी संग सहेली,
प्रार्थना ही मेरी प्यारी है
प्रार्थना ही मेरी गुरू अकेली,
प्रार्थना ही मेरी करणधारी है, (टेक)
प्रार्थना ही मेरी गति मती,
प्रार्थना ही मेरी शक्ति है
प्रार्थना ही मेरी भगती मुक्ति,

प्रार्थना ही मेरी सहाई है ॥१॥
प्रार्थना ही मेरी करे उन्नति,
प्रार्थना ही सुखी बनाती है
प्रार्थना मुझ को प्रेम पिलाती,
प्रार्थना ही प्रभु मिलाती है ॥२॥
प्रार्थना ही मेरी आनन्द कारी,
प्रार्थना ही हृदय धारी है
प्रार्थना ही मेरी शान्ति की वारी,
प्रार्थना को हाथ जोड़ी है ॥३॥

भजन ४४०.

घड़ी दो घड़ी का सत्संग लाया करो जरा आया करो ।
घड़ी दो घड़ी तो राम गाया करो ॥
बहुत दिन का सोयारे प्राणी अब का जन्म सुधाया करो ।
लाभ जो होते सत्संग में उनमें बैठ चित्त लाया करो ॥
धर्म न छोड़ियो नेम न तोड़ियो अमोल रत्नको पाया करो
नेम जो हमको ऋषियों ने बताये उनको मनमें समझाया करो ।
और धन्धों को छोड़कर प्यारो, भले कर्मों में मन लाया करो

वक्त गया फिर हाथ नहीं आवे, विरथा समा न गवाया करो
साधन न भुलयो भजन न बिसारियो परमानन्द सुख पाया करो
झूठ को त्यागो निन्दा को छोड़ो, सत्स्वरूप को ध्याया करो
वैरभाव को दिल से गवायो, दया प्रेम को बढ़ाया करो ॥
कहे दासी तेरी प्रभु जी, अपनी बहिनों की उन्नति बढ़ाया करो
घड़ी दो घड़ी का सत्संग लाया करो जरा आया करो ।

भजन ४४१.

जिस को नहीं है बोध तो गुरू ज्ञान क्या करे ।
निज रूप को जाना नहीं तो पुण्य क्या करे ।
घट २ में ब्रह्म जोत का प्रकाश हो रहा ।
मिटा न द्वेष भाव तो फिर ध्यान क्या करे ।
रचना प्रभु की देख के ज्ञानी बड़े बड़े ।
पावे न कोई पार तो नादान क्या क्या करे ।
करके दया दयालु ने मनुष जन्म दिया ।
बंदा न करे भजन तो भगवान् क्या करे ।
सब जीव जन्तुओं में जिसे है नहीं दया ।
दासी कहे वरत नेम तो पुन दान क्या करे ॥ जिस०

भजन ४४२.

धन्य तू कर्तार मेरा, धन्य तू जगदीश्वरा ।
धन्य है कृपा यह तेरी, धन्य तू परमेश्वरा ॥ १ ॥
धन्य सृष्टि रचत है तू, कौन महिमा गासके।
व्याप्त है तू जगत माहीं, गुण न तेरे पासके ॥ २ ॥
उत्तम वाणी, रूप निर्मल, वेद अन्त ना पाया ।
दयाल है तू दीनका, अनन्त नाम रखाया ॥ ३ ॥
जगपिता तू जगतमाता, तूही पालनहार है ।
स्वामी तू संसार का, तेरा ही सब परिवार है ॥ ४ ॥

भजन ४४३.

हक तो यूं है कि सदा हक में तेरा ध्यान रहे ।
हक की बातों के ही सुनने की तरफ कान रहे ॥
गैर हक भूल कभी एक कदम मत जाओ ।
हक को लेकर ही तेरा दीन ओ एमान रहे ॥
छोड़कर हक को जो करता है तू नाहक बातें ।
इस तरह तो तू न हिन्दू न मुसलमान रहे ॥
झूट बोले है सदा काम कमीनों के करे ।
फिर समझता है कि कायम मेरा एमान रहे ॥

सब तेरी आदतें बदतर हैं यह हैवानों से ।
ख्वाह तू अपने ही जी में बना इनसान रहे ॥
हक ओ नाहक का तू कर अपने ही दिल में इनसाफ ।
फिर जरा गौर से देखो कि कहां आन रहे ॥
हैफ सद हैफ कि भूला उसे जिसका है बन्दा ।
चन्द रोज़ा जहां रहना वहीं गुल्तान रहे ॥
जलवए नूर इलाही नहीं मुम्किन चमके ।
जब तलक दिलमें तेरे पाप का तूफान रहे ॥
दिलसे सुन सब यही कहते हैं जो हैं विश्वासी ।
इक परम देव के चरणों में लगा ध्यान रहे ॥

भजन ४४४.

खुदाया जब तेरी रहमत को दिल से याद करते हैं ।
तो अपनी बेवफाई देखकर फरियाद करते हैं ॥
हमें जब अपना याद आता है काफिर संगदिल सीना ।
खुदावन्दा तेरी दरगाह में फरियाद करते हैं ॥
तेरे तालिब गिज़ा तेरी इबादत को समझते हैं ।
तेरे इक प्रेम के शरबत से ही दिलशाद करते हैं ॥
कहां होवे मुयस्सर तालिबे दुनिया को यह लज्ज़त ।

वह हरदम चर्ख के ही शिकवए बेदाद करते हैं ॥
समझते क्या हैं जाना ही नहीं दुनियाए फानी से ।
गुनाहों में जो अपनी जिंदगी बरबाद करते हैं ॥
हुजूरी में है हाजिर दस्तबस्ता अबतो विश्वासी ।
कि कब मालिक मुझे सेवा में अपनी याद करते हैं ॥

भजन ४४.

सजनां मैंनूं तेरे मिलन दा चा ।

दौलत दुनिया में दोनों डिठियां,
देखन नूं खरी त स्वादों फिकियां ।
बाहरों कूली ते विच्चों तिखियां,
सज्जना ! मैंनूं प्रेम दी गलियां दिखा ॥
मिल २ देखे में दुनियां वाले,
उत्तों चिट्टे त विच्चों काले ।
लोकां दा मुंह देखन वाले,
सज्जनां ! मैंनूं अपना दरस दिखा ॥
लोचन अक्खियां दर्शन ताईं,
जियरा उमडे पइं तेरे पाईं ।
में दासी और तूं ही मेरा साईं,

सज्जना ! मैंनूं भुल्ली नूं राहीं पा ॥
इक तेरी याद दा मैंनूं सहारा,
तेरे ही प्रेम ते मेरा गुजारा ।
विश्वासी दा तूं ही इक प्यारा,
सज्जना ! हुन तुध बिन रहा न जा ॥

भजन ४४६.

नोए इनसान के सच्चे वही ख्वाह भारत हितैशी राममोहन।
भारतवर्ष की देख दुर्गति तुमने क्या जीवन अर्पण ॥
धर्म की तहकीकात में नाबालिग ही हिमालय पार गये ।
जब कि रास्ते थे पुरखतर और तुम्हारा पैदल सफर कठिन॥
हिंद में बुत और कब्रपरस्ती की जगह तुमने कायम किय॥
वेहिमता ईश्वर की परस्तश नोए इनसां का भाईपन ॥
गरीब बेवाओं को जिन्दा जलते तुमने बचा दिया ।
जिसकी वजैह से बदनामी सही बहुत उठाये रंजो मैहन ॥
पोलेटिकल तरक्की के सरगना हिंद में तुम ही थे ।
गरज हिंद की बहबूदी की लगी हुई थी तुमको लग्न ॥
ब्रह्मधर्म के बानी होने का फखर भी तुम को हासिल है ।
कैसा पाक खूबियों का मजमा और तिस पर फिर सादापन॥

थे जो तुम्हारे उसदम मुखालफ हर पहलू से ईजारसां ।
उनकी नसल मशकूरी से भरकर कहरहीहै तुमको धन धन॥
यह जलसा मुनाकद हुआ है यादगार मुतबर्रक में ।
आज है वह दिन जबकि कियाथा तुमने यहांसे परलोकगमन॥

भजन ४४७.

विवाह के समय ।

फूलों से बांधे गये हैं इस समय जो हाथ दो ।
प्रेम के बन्धन से बन्ध जाएं यह दिल हे नाथ दो ॥
एक हों मिलकर यह दोनों दिल परस्पर प्रेम से ।
एक बनकर ज्यूं चलें संगम से नदियां साथ दो ॥
एक होवें प्रान दोनों दोनों जीवन और हृदय ।
जिन्दगी का एक मकसद हो हों साथी साथ दो ॥
धर्म का पालन करें दोनों ही मिलकर यूं सदा ।
पालते सन्तान को हैं जैसे पितु और मात दो ॥
प्रेम और प्रीति बढ़े ईश्वर से साधन में रुचि ।
सामने इनके रहें मकसद यही दिनरात दो ॥
शाद और आबाद रहवें दुल्हा दुल्हन गृहस्थ में ।
यह दुआ विश्वासी से मिलकर सभी इक साथ दो ॥

भजन ४४८.

प्रभु मेरे हाल दा महरम तू।
अन्दर तू ही बाहर तू ही रोम २ विच तू॥ प्रभु०॥
बाग में जलवा तेरा है ऐसे जैसे फुल विच बू।
फुल जद सुख गये बू भी रहे न फिरभी हाजिर तू॥प्रभु०
नदियां दे जल थल विच तू है बुलबुला कहिंदा तू।
नदियां सुक जद गइयां प्यारे रेत विच चमके तू॥प्रभु०॥
इक जल बिन्दु अग विच जलदा लीला जाने तू।
ओहयो बिन्दु सिप विच मोती बनदा हूबहू॥ प्रभु०॥
शाहां दे सिरताज इक मोती लटकन शोभा नाल।
ओहो मोती खरलीं पीसन क्यों दस हुण तू॥ प्रभु०॥
"आजिज़ बन्दा की कुछ आखे लीला अपरम्पार।
हार के कहिंदा अन्त न बेअन्त तू ही तू॥ प्रभु०॥

भजन ४४९.

आज खुशी दिन आया, मनाया सखीयो। आज
सब सखियां मिल देवो बधाई, आज यह शुभ दिन आया
मनाया मैं गाया सखीयों। आज
चिर आयु यह होवे बालक, सुखी रहे सब परिवारा

जननि, आशीर्वाद करो कि हम तुमको हमेशा याद रखें और तुम्हारी कृपा प्रार्थना करें, माता पिता आदि गुरूओं की भक्ति करें, और भाई बहन सबको प्यार करें । तुम हमें शुभ मति देओ, कुपथ से बचाकर धर्म के रास्ते पर चलाओ । भक्ति से तुमको बार २ नमस्कार । तेरी कृपा ही सबके सम्बल ।

भजन ४२२.

आले मस्त दीवानी आले मस्त दीवानी में लाल लगन भईयां वावरीयां ॥ १ ॥

वहां काया न माया वहां काया न माया न रूप रंग न रखरीयां पर वहां पवन न पानी वहां पवन न पानी बिन बादल घनघोर रहीयां ॥ २ ॥

वहां चन्दा न सूजर वहां चन्दा न सूरज बिन दीपक प्रकाश रहीयां । वहां भाई न बन्ध वहां भाई न बन्ध न अंग न साक सहेलड़ीयां ॥ ३ ॥

वहां ब्रह्मा न विश्नू वहां ब्रह्मा न विश्नू न शिवा की सवा न लागे बड़ीयां ॥ ४ ॥

कह भाई दास कबीर कह भाई दास कबीर मैं सोहंग
शब्द सहेलड़ीयां आलै० ॥ ५ ॥

भजन ४५३.

मेरी चुनरी को लग गया दाग पिया मेरी० ।
नौ दस मास बनाते लागे पहन ओड़ मैने मैला किया ।
मेरी चुनरी० ॥
धोती फिरूं दाग न छूटे सुन २ के विराग हुआ ।
मेरी चुनरी० ॥
पिछवाड़े धोबीया बसत है चुन २ चुनरीया को साफ किया ।
मेरी चुनरी० ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो सावन वाले को ढूंड लिया ।
मेरी चुनरी० ॥

(४५४)

बलिहारी गुर आपणे दऊहाड़ी सदवार ॥
जिनि माणस ते देवते कीये करत न लागी वार ॥१॥
जे सऊ चंदा ऊगवहि सूरज चड़हि हजार ।
एत चानण होंदियां गुरबिनु घोर अंधारु ॥२॥

(४५५)

जऊ तऊ प्रेम खेलण का चाऊ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आऊ ॥
इत मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ ॥

(४५६)

एक घड़ी आधी घड़ी आधी हूं ते आध ॥
भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥
कबीर मानस जन्म दुर्लभ है होई न बारै बार ॥
जिऊं बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरिन लागैडार ॥
कबीर साधू कऊमिलने जाइये साथी न लीजै कोई ॥
पाछै पाऊं न दीजिये आगै होइ सु होई ।

भजन ४५७.

इन्कसारी में भला है खुदनुमाई छोड़दे ।
देख दिल खुदेबीं न बन और खुदसताई छोड़दे ॥
ख्वाहिशों के मारने में लड़ दिला जी तोड़कर ।
बाकी हर ढब हर किस्म की सब लड़ाई छोड़दे ॥
रहम और हमदर्दी के भावों को कर नशवोनुमा ।

बेकसों मज़लूमों पर ज़ोर आज़माई छोड़दे ॥
लोभ है जड़ पाप की तू बच्च दिला इस ग़ार से।
हक कमा खा सारी ऊपर की कमाई छोड़दे ॥
मर्दे मैदां बन निकल और देख अपनी आंख से ।
ढूंढना इस राह में, इस उसकी गवाही छोड़दे ॥
संगतें वायस तबाही का जो हैं तेरी दिला।
छोड़ने में उनके है तेरी भलाई छोड़दे ॥
धर्म जीवन में तरक्की ही है विश्वासी का फ़ख़र ।
खान्दान ओ इल्म ओ दौलत की बड़ाई छोड़दे ॥

(४५८)

मनु मेरो गजु जिह्वा मेरी काती ॥
मपि मपि काटओ पाप की फासी ॥१॥
कहा करओंजाती कह करओंपाती ॥
रामको नामु जपओ दिनराती ॥२॥
रांगनि रांगओं सीवनि सीवओं ॥
राम नाम बिनु घड़िया न जीवओं ॥३॥
भगति करओं हरि के गुनगावओं ॥
आठ पहर अपना खसमु धिआवओं ॥४॥

सोने की सूईयां री रुपे का धागा ।
नामे का चितु हरि सिओं लागा ॥४॥

भजन ४५९.

(असां) लिख सतगुर वल पाइयां ।
चिठियां प्रेम दियां । हां हां चिठियां प्रेम दियां ।
दर्शन नूं दिल तरस रहा है, नीर छमाछम वरस रहा है ।
मुड़ मुड़ पुछदी राइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥
दर्श तेरे दियां तागां मैंनूं, दिन ते रातीं वडीकां तैनूं ।
प्रेम घटा दिल छाइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥
मेहर करीं तूं पालन वाले, आजत दुःखियां दे रखवाले ॥
आ मिल दिल दियां साइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥
मेरे जहियां कितनियां सेहियां दर तेरे ते ढठियां पेइयां ।
मैं भी दर पै आइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥
बखश लेईं तूं औगुन मेरे, आन पई हूं दर पर तेरे ।
अरजां आख सुनाइयां ॥ चिठियां प्रेम दियां ॥

भजन ४६०.

मैं कमली दा बेड़ा पार करीं मेरे सतगुर पालन वालिया ।
आवीं गुरू चरणीं लावीं गुरु मैं निमानी तेरे दर ढै पइयां
तन मन मेरा आके ठार देवीं मेरे दिलदियां जानन वालिया
रात दिने तूंहीं याद रहें पल २ गुज़रे विच याद तेरी ।
करके तरस देवों दरस प्यारिया डुबियां नूं तारन वालिया ।
मेरे जइयां गइयां लख सैय्यां तुसी चरणीं लगाके तार लइयां
मेरे उत्त वी करो मेहर पिता मैं भी तेरा ही नाम धियारहीयां
तूंही दिस्से तूंही नज़र आवें तेरा नूर दिस्से जी ज़हूर तेरा ।
तेरे बाझ न कोई होर नज़र आवे तांतां प्रेम तेरे डेरा लावेरहीयां

भजन ४६१.

ज़र सिकन्दर ने जमा कर कह दिया मैं हूं खुदा ।
वक्त पड़ने पर खुदा से सब लगे होने जुदा ॥
सब मुलक यूनान के हिकमतगरों से यूं कहा ।
ए तबीबो इस समय हो मौत की कोई दवा ॥
अपनी रय्यत और वज़ीरों बेगमों से फिर कहा ।
है कोई मुझको बचाने के लिये अहले वफा ।
ढेर दौलत के लगाकर मुश्त में लेकर कहा ।

यह भी मुझको छोड़ती है अब तो मैं तनहा चला ॥
मरते २ यूं लगे कहने जनाजे को मेरे ।
हाथ खाली हों कफ़न से बाहर है तेरी रज़ा ॥

भजन ४६२.

रिश्ता इक तुझ से ही मालिक मेरा लासानी ।
और जिस जिससे ताल्लुक़ है वह सब फ़ानी है ॥
तू ही मालिक है मेरा, मैं हूं तेरा ही बन्दा ।
तुझ से निस्बत जो मुझे है, मैं यही मानी है ॥
रूह की जिंदगी का तुझ से है रिश्ता ऐसा ।
जैसा मछली के लिये ज़िन्दगी ही पानी है ॥
प्रेमरस में है भरा तेरे गज़ब मीठा पन ।
यह वह लज्ज़त है कि जिसका न कोई सानी है ॥
सैर होजाता है दिल दुनिया से तुझ से मिलकर ।
तुझ से होते ही जुदा दिलको परेशानी है ॥
क्यों लगाऊँ मैं यह दिल तेरे सिवा और के साथ ।
देखता हूं तुही हर पहलू से लासानी है ॥
ज़िन्दगी जो बसर होती, प्रभु तुझसे बेमुख ।
होती विश्वासी को महसूस पशेमानी है ॥

भजन ४६३.

राम नाम धन पूंजी पल्ले बांधो रे मना।

ध्रुव ने बांधी प्रह्लाद ने बांधी साहिब को चीना

मेरी बहिनो साहिब को चीना ॥

मीरां ने बांधी मनका ने बांधी प्याला जो प्रेमका पीना

मेरी बहिनो प्याला जो प्रेम का पीना।

दास कबीर ने ऐसी बांधी तानी तना मेरी बहिनों

तानी तना।

भगत सुदामे ने ऐसी बांधी मुठी चना मेरी बहिनों

मुठी चना।

राजे मोरधज ने ऐसी बांधी किया पुत्र फना मेरी बहिनों

किया पुत्र फना।

भगतदास ने ऐसी बांधी कीनी जान फना मेरी बहिनों

कीनी जान फना।

भजन ४६४.

तूं हर हर नाम ध्याईं नी सुरती मेरिये।

हर का नाम है सब से प्यारा इसको कभी न विसारीं

नी सुरती मेरिये।

रात गुवाई सुतियां कोई दिन भी न गुवाई नी सुरती मेरिये।
बाल अवस्था खेल गुवाई बुढपा न रुलाई नी सुरती मेरिये।
दुःख सुख में एक प्रभु सहाई तूं दिल में न घबराई
नी सुरती मेरिये।
सेवा बन्दगी और अधीनता पर उपकार कमावीं
नी सुरती मेरिये।
ज्ञान ध्यान और प्रेम बढ़ाई यही साधन निभाई
नी सुरती मेरिये।
दो दिन की यह चाननी फिर अन्धेरी रात दासी कहे
सुन मेरी बहिना रहना है दिन चार।
नी सुरती मेरिये। तूं हर २ नाम ध्याई।

भजन ४६५.

बड़े धन्य भाग्य उन के हैं।
जो प्रभु की शरणी आते हैं॥
धर्म दाता से जुड़ कर जो, धर्म जीवन को पाते हैं।
जीवन में नीच जो शक्तियां जीवन का नाश करती हैं॥
जो उन से मोक्ष पाने को, धर्म साधन कमाते हैं।

धर्म जो सब से बढ़ कर है, मनुष्य का लाभ दुनियां में ।
उसी के लाभ करने में, लगन दिल की लगाते हैं ॥

भजन ४६६.

राखो भजन में ध्यान बढ कर धर्म नहीं ।
तन भी दीजे मन भी दीजे अर्पण कीजे प्राण ॥
बढ कर धर्म नहीं ।
जो कोई धर्म की आज्ञा पाले सुन्दर होवे जीवन ।
बढ कर धर्म नहीं ।
ऋषि मुनियों ने धर्म को पाला पाके सुख और चैन
बढ कर धर्म नहीं ।
संपती पाओ दुःख मिटाओ पाओ पद नरवान ।
बढ कर धर्म नहीं ।
हरी सिमरलो प्रार्थना कर लो भरलो मन में ज्ञान ।
बढ कर धर्म नहीं ।
जो कोई प्रभु का भजन नहीं करते फिर पिच्छों पछतान ।
बढ कर धर्म नहीं ।
सुख की निधि जो तुम चाहो साधन कभी न बसार ।
बढ कर धर्म नहीं ।

भजन ४६७.

भिखारी पुकारता द्वार में है, सुनो दयाल ठाकुर,
पियासी आत्मा चाहता शान्ति, न रहो न रहो दूर,
भूखा ये दिल में आये बरषाओ अमृत सुमधुर ॥
आंखों की रोशनी प्राण तुम्हीं, कृपानिधान हे
दिल न तोड़ो, आंधार में न छोड़ो, यही लाचार मांगे ।
कहां ओर जाऊं कौन है मेरा, कौन दुःख हटावे,
आशा की बानी कौन सुनावे, तुम बुलालो घर में ॥

भजन ४६८.

रचा प्रभु तूने यह ब्रह्माण्ड सारा ।
प्राणों से प्यारा तू ही सब से न्यारा ॥
तुही भाई बन्धु तुही जगत जननी ।
सकल जगत् में एक तेरा पसारा ॥
धर्म दूध से माता तुम हमको पालो ।
देवो खोल विद्या का अपने भण्डारा ॥

भजन ४६९.

ए मेरे मालिक ए मेरे खालिक ।
तेरा ही बन्दा गुनाहगार हूं मैं ॥

मैं दुखिया हूं तूं दुख हरन दीनबन्धु ।
तुइ वैद है तेरा बीमार हूं मैं ॥
मैं हूं फूलता फलता साये में तेरे ।
जुदा तुझ से हो खसता ओ ख्वार हूं मैं ॥
तू रहमत करे और रहूं बेवफा मैं ।
इस हालत पे अपनी शरमसार हूं मैं ॥
मैं जाऊं कहां हूं पड़ा तेरे दर पर ।
कह विश्वासी तेरा ही गफ्फार हूं मैं ॥

आरती ।

जय जगदीश हरे ।

भक्त जनन के सङ्कट क्षण में दूर करे । जय जगदीश हरे॥
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मनका ।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका । जय० ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आश करूं किसकी । जय० ॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्य्यामी ।
परम ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी । जय० ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता ।

मै मूरख खलकामी कृपा करो भर्ता । जय० ॥
तुम ही एक अगोचर सब के प्राण पति ।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति । जय० ॥
दीनाबन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा हूं तेरे । जय० ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढाओ सन्तन की सेवा । जय जगदीश हरे॥

श्लोक

सिमल रुखु सराइरा अति दीर्घ आत मुचु ॥
ओए जी आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥
फल फिक्के फुल बकबके कंमि न आवहि पत ।
मिटतु नीवीं नानका गुण चंगिआइआ ततु ॥
सभको निवै आप कऊ पर कऊ निवै न कोई ।
धरि तराजू तोलीअै निवै सु गऊरा होई ॥
अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ।
सीसि निवाइये किआ थीअै जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥

दुनियां सुहावा बाग एक दिन छडना बनीगा ।
कपड़ रूपु सुहावणा छडि दुनियां अंदरि जावणा ।
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥
हुकम कीये मनि भांवदे राहि भीड़ै अगै जावणा ।
नंगा दोजकि चालिआ ता दिस्सै खरा डरावणा ॥
करि अऊगण पछोतावणा ॥
आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देई ।
इकनी दुधु समाइअै इकि चुलै रहनि चढे ॥
इकि निहाली पै सवनि इकि उपरि रहनि खड़े ।
तिना सवारे नानका जिन कऊ नदरि करे ॥
आपे साजे करे आपि जाई भी रखै आपि ।
तिसु विचि जंत ऊपाइकै देखै थापिऊ थापि ॥
किसनो कहीअै नानका सभु किछु आपे आपि ॥
वडे कीआ वडियाआं किछु कहणा कहणु न जाइ ।
सो करता कादर करीमु दे जीआं रिजकु संवाहि ॥
साई कार कमावणी धुरि छोडि तिनै पाई ।
नानक ऐकी बाहरी होर दूजी नाही जाई ।
सो करे जि तिसै रजाई ॥

दोहे

दो०—इस नश्वर संसार में, क्यों मन फिरत भुलान।
चलना तोहि रहना नहीं, अवशि एक दिन जान॥

सुपने के सम्पत्ति हैं, सुख दुःख धन परिवार।
अचल कीर्ति रहजायगी, करिले हृदय विचार॥

पर उपकार स्वदेश हित, धर्म कीर्ति पर पीर।
इनके हित तू लागि के, तृण इव त्याग शरीर॥

विनय करूं कर जोर के, सुनिये कृपानिधान।
भक्ति भाव मोहिं दीजिये, दया गरीबी दान॥

सुरत करो मेरी साइयां, हम हैं भव जल मांह।
आपै ही वह जायँगे, जो नहिं पकड़ो बांह॥

मैं अपराधी जन्म की, नख शिख भरा विकार।
तुम दाता दुःख-भञ्जना, मेरी करो उबार॥

आये हैं सो जायँगे, राजा रंक फकीर ।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बांधे जात जँजीर ॥

आज काल के बीच में, जंगल होगा वास ।
ऊपर ऊपर हल फिरे, ढोर चरेंगे घास ॥

हाड़ जले ज्यों लाकड़ी, केस जले ज्यों घास ।
सब जग जलता देखकर, भये 'कबीर' उदास ॥

कुशल कुशल हो पूछते, जग में रहा न कोय ।
जरा मुई ना भय मुआ, कुशल कहां से होय ॥
पानी केरा बुलबुला, इस मानुष की जात ।
देखत ही छिप जायँगे, ज्यों तारा प्रभात ॥
सुखी जगत में कौन है, कहो मोहे समझाय ।
होय लीन भगवान में, सुखी वोही जग माँह ॥

दान दीन को दीजिये, मिटे दरद की पीड़ ।
औषध तांको दीजिये, जाके रोग शरीर ॥

कबीरा तेरी झोपड़ी गल कटयान के पास ।
करनगे सो भरनगे, तू क्यों भयो उदास ॥

यह तन की वेलरी, गुरू अमृत की खान ।
सीस दिये जो गुरू मिले तौ भी ससता जान ॥

तीर तोप से जोड़ले, सो तो सुर ना होय ।
ममता तजे भगती करे, सूर कहावे सोय ॥

जहां सत्य तहां धर्म है, जहां सत्य तहां योग ।
जहां सत्य तहं श्रीरहत, जहां सत्य तहां भोग ॥

वायु बहत है सत्य ते, जलत सत्य ते आग ।
सत्य ही ते धरती थमी, सत्य होत बड़ भाग ॥

सत्य सदा जय करत है, झूठ पराजय होत ।
सत्य बढ़ावे कान्ति को, झूठ निशावे जोत ॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे बड़ी खजूर ।
पक्षी को छाया ना मिले, फल लागे अति दूर ॥

माला फेरत जुग गया, गया न मनका फेर ।
करका मनका छोड़ के, मनका मनका फेर ॥

माला तेरी काठ की, धागे लेई पिरो ।
अन्दर घुण्डी पाप की, राम जपे क्या हो ॥

करत २ अभ्यास के, दुर्मति होत सुजान ।
रस्सी आवत जात है, सिल पर पड़त निशान ॥

धन २ राजा जनक है, जिस ऐसा किया विवेक ।
स्वास २ सिमरत रहो, विसरो घड़ी ना एक ॥

ऐसा सिमरन जानके संतां पकड़ी टेक ।
नानक सिमरन सार है, पापी तरे अनेक ॥

परमपिता की वंदना करिये सीस झुकाय ।
जिसकी महिमा गांवदे, भगतजन चित लाय ॥

हाथ जोड़ विनती करूं, सुनिये दीन दयाल ।
साध संगत सुख दीजिये, दया गरीवी दान ॥

बड़े २ योधा खड़े, सभी बजावें गाल ।
बीच महल से लेचला, ऐसा काल कराल ॥

कबीरा लुटना ही ते लुट ले राम नाम है लूट ।
फिर पीछे पछातायेंग। प्राण जायेंगे छूट ॥

कबीरा सब ते हम बुरे हम तज भलो सब कोय ।
जिन ऐसा कर जानिया मीत हमारा सोय ॥

रतन जड़ित मंडप तजे, तजी सहस्र नार ।
अजहुं कामना नहीं तजी, हे मन तोहे धिकार ॥

संगत कीजे भले की, जो हरि करावे याद ।
ओछी संगत नीच की, आठों पहर उपाध ॥

एक घड़ी आधी आधी, घड़ी आधी ते पुनि आध ।
तुलसी संगत साधकी, मिटे कोटि अपराध ॥

धैर्य नशावे शोक को, धैर्य उन्नति मूल ।
जो सुख चाहो सर्वदा, धैर्य धर्म न भूल ॥

प्रभु भक्ति अति कठिन है, ज्यों खंडे की धार ।
विना सोचे पहुँचे नहीं, महा कठिन व्यापार ॥

तुलसी इस संसार में, पांच रतन हैं सार ।
साध संगत हरिभजन, दया दीनता उपकार ॥

दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान ।
तुलसी दया ना छोड़िये, जब लग घट में प्राण ॥

चिड़ी चुंज भर लेगई, नदी ना घटयो नीर ।
दान दिये धन ना घटे, कह गये भगत कबीर ॥

सतगुर नाम जहाज है, चढे सो उतरे पार ।
जो श्रद्धा कर सेंवदे, पार उतारन हार ॥

जब मैं था तब गुर नहीं, जब गुर है मैं नाहीं ।
प्रेमगली अति सांकरी, ता में दो न समाहीं ॥

मैं अपराधी जन्म का, नखसिख भरे विकार ।
तुम दाता दुःख भंजना, मेरी करो सहार ॥

भक्ति दान मोहे दीजिये, हरि देवन के देव ।
और नहीं कुछ मांगती, निशदिन तेरी सेव ॥

मुख आंख नाक बन्ध के, नाम प्रभु के लेव ।
अन्दर के पट तब खुले, जब बाहर के पट देव ॥

क्रोध प्रकृति जिस नारी की, दहत चित निज नित।
औरों को दुःख दे वृथा, सब से रहे अनहित ॥

———

बुरे की संगती है बुरी, करे जो सत्यानाश ।
बड़े २ सूक्ष्म सुजन भी, मिलकर धूली हुये विनाश॥

———

ज्ञान अंजन गुरु दिया, अज्ञान अन्धेर विनाश ।
हर कृपाते सन्त भेटिया, नानक मन प्रकाश ॥

———

बार २ वर मांगहुं हर्ष देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अन्न पावनी, भक्ति सदा सत्संग ॥

———

कबीर जेंह दर आवत जात है, हटके नाहीं कोय ।
सो दर कैसे छोड़िये, जो दर ऐसो होय ॥

———

भक्ति करे पाताल में, प्रगट होय आकाश ।
रज्जब तीनों लोक में, छिपै न हरि को दास ॥

———

दीपा पानी एक है, भरण हार अनेक ।
वासनों का वैरा पड़ा, पानी एक का एक ॥

सम्मन ऐसी प्रीतकर, जैसी सरप करे ।
वचन सुने गुरु देव का, आगे सीस धरे ॥

जो सुख को चाहे सदा, शरन राम की लेह ।
कहु नानक सुनरे मनां, दुर्लभ मानुष देह ॥

हर सों हीरा छोड़ के, करें आन की आस ।
ते नर दोजख जायंगे, सत भाषे रविदास ॥

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी की फिर आध ।
तुलसी संगत साध की, हरे कोट अपराध ॥

अजगर करे न चाकरी, पंखी करे न काम ।
दास मलूका यूं कहे, सब का दाता राम ॥

संत समागम हर कथा, तुलसी दुर्लभ दो ।
सुत दारा और लक्ष्मी पापी के भी हो ॥

तुलसी जग में आयके, कर लीजे दो काज ।
देवो को टुकड़ा भलो, लेवे को हरिनाम ॥

संगीतमाला समाप्त ।

ब्राह्म धर्म के मूल सिद्धान्त।

(१) ईश्वर—सत्यस्वरूप, ज्ञानमय, अनन्त, प्रेममय, मंगलमय, अद्वितीय, और पवित्रस्वरूप हैं। वह सर्वव्यापी, सर्वाश्रय, सर्वनियन्ता, सर्वशक्तिमान्, निराकार, आनन्द-स्वरूप और पूर्ण पुरुष हैं।

(२) **मनुष्य-आत्मा**—अमर अनन्त उन्नतिशील, और अपने कामों के लिये ईश्वर के निकट जवाब देह है।

(३) मनुष्य स्वाभाविक ज्ञान-बुद्धि के द्वारा ईश्वर को जान सकते हैं।

(४) **उपासना**—ईश्वर में भक्ति, उनके साथ प्रति-दिन योग साधन, और उनकी इच्छा के अनुसार जीवन के सब काम करना ही उपासना है ? उपासना से इस लोक और परलोक में मनुष्य का कल्याण होता है।

(५) ईश्वर सब के पिता, नर और नारी भाई और बहिन हैं, सब के समान अधिकार हैं। जातिभेद झूठा है। जिसकी भक्ति है उसको मुक्ति अवश्य मिलेगी।

(६) ईश्वर पुण्य के पुरस्कार और पाप के दण्ड देने वाले हैं। सरल अनुताप के साथ पाप छोड़ना ही प्रायश्चित्त है। ज्ञान, प्रेम और इच्छा से परमात्मा के साथ युक्त होना ही मुक्ति है।

(७) यह संसार ब्रह्म मन्दिर 'आत्मा का घर' और विकाश की जगह है।

(८) श्रद्धा के साथ विचार करके सब देश के साधुओं और शास्त्रों से सत्य लेना चाहिये, परन्तु किसी मनुष्य या ग्रन्थ को अभ्रांत या मुक्ति के लिये एकमात्र उपाय नहीं समझना चाहिये, और किसी उत्पन्न वस्तु या मनुष्य को ईश्वर, अथवा ईश्वर के अवतार, या ईश्वर और मनुष्य-आत्मा के मध्यवर्ती नहीं समझना चाहिये।